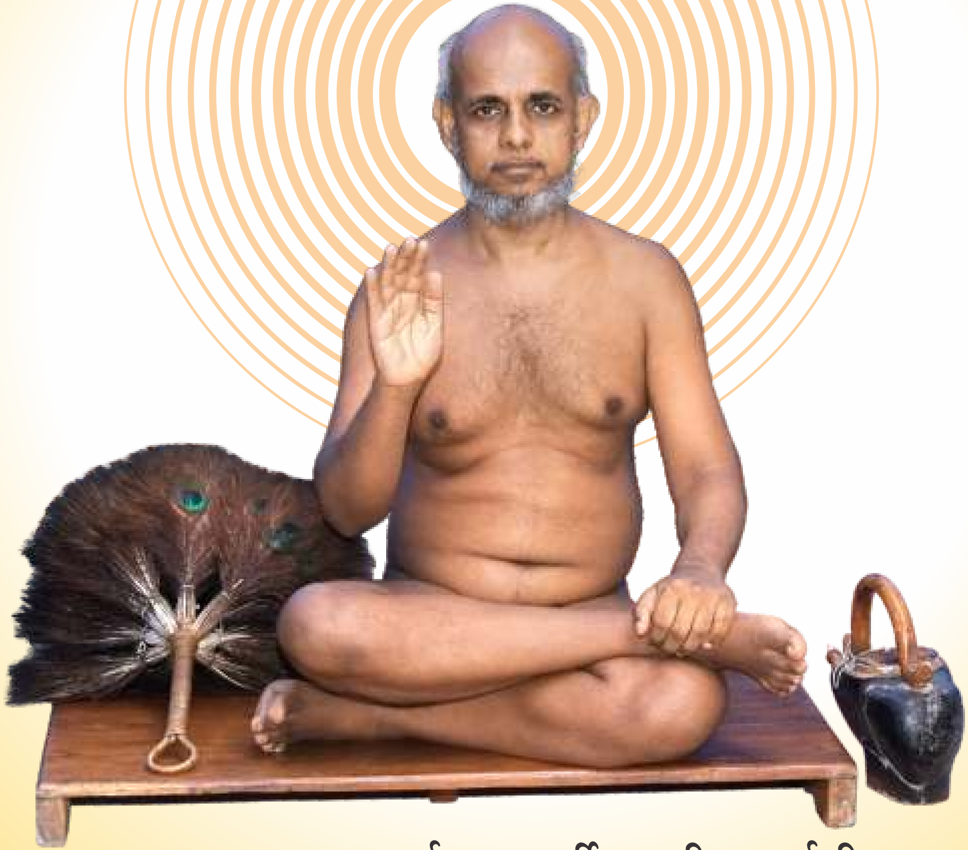

परम पूज्य तपश्चर्या-चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि-परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19-03-1971 * मुनिदीक्षा-11-05-1989 * आचार्यपद- 20-06-2004

पट्टाधीशपद- 24-12-2010 (20-06-2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः-

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी-जुलाई 2004) (अक्षयज्योति-अक्तूबर 2004)

विशद सोलहकारण विधान

कृतिकार :

परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

प्राप्तिस्थान :

विशद साहित्य केन्द्र श्री दिगम्बर जैन मन्दिर,
कुआँ वाला, जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

।। श्री अनन्त सिद्धेभ्यो नमः ।।

विशद सोलहकारण विधान

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो नमः।

aM{`Vm

प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति	-	**विशद सोलहकारण विधान**
कृतिकार	-	प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति, पंचकल्याणक प्रभावक **आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज**
संस्करण	-	प्रथम-2013 ● प्रतियाँ :1000
संकलन	-	मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोग	-	क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी
संपादन	-	ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी, सपना दीदी
संयोजन	-	ब्र. किरण दीदी, आरती दीदी, उमा दीदी ● मो. 9829127533
प्राप्ति स्थल	-	1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा, 2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, नेहरु बाजार मनिहारों का रास्ता, जयपुर फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008
		2. श्री राजेशकुमार जैन (ठेकेदार) ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 09414016566
		3. विशद साहित्य केन्द्र C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कुआँ वाला जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा ● मो.: 09416882301
		4. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली
मूल्य	-	51/- रु. मात्र

-ः अर्थ सौजन्य ः -

1. चि. यश जैन कु. याशिका जैन - नवीन शाहदरा दिल्ली-110032
2. विपुल जैन - 1/11202, सुभाष पार्क, गली नं. 12, दिल्ली
3. पंकज जैन - K-50, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032
4. निशा जैन ध.प. श्री अरिंजयकुमार जी जैन-एम-33, नवीन शाहदरा, दिल्ली
5. मयंक कुमार जैन - Y-2, नवीन शाहदरा, दिल्ली
6. सुषमा जैन, नवीन शाहदरा, दिल्ली मो. 9213935319
7. कुसुम जैन, नवीन शाहदरा, दिल्ली 8. श्रीमती हितेश जैन (एम.एड.)
9. सुरेश चन्द जैन (उस्मानपुरवाले) 10. गुप्तदान
11. श्रीमती राजबाला ध.प. श्री विमल प्रसाद जी, नवीन शाहदरा, दिल्ली

जिन भक्ति

जिने भक्ति र्जिने भक्ति र्जिने भक्तिः सदास्तु मे।
सम्यक्त्वमेव संसार वारणं मोक्षकारणम्।।
श्रुते भक्तिः श्रुते भक्तिः श्रुते भक्तिः सदास्तु मे।
सञ्ज्ञानमेव संसार वारणम् मोक्षकारणम्।।
गुरौ भक्ति र्गुरौ भक्ति र्गुरौ भक्तिः सदास्तु मे।
चारित्रमेव संसार वारणं मोक्षकारणम्।।

मेरी जिनेन्द्र देव में बार–बार भक्ति हो, क्योंकि उनकी भक्ति से होनेवाला सम्यग्दर्शन ही संसार का निवारण कर मोक्ष का कारण होता है। मेरी द्वादशांगश्रुत में सदा बार–बार भक्ति हो, क्योंकि इसके निमित्त से होने वाला सम्यग्ज्ञान ही संसार का निवारण कर मोक्ष का दाता होता है। मेरी गुरु में सदा बार–बार भक्ति हो, क्योंकि इनके निमित्त से प्रगट होने वाला चारित्र ही संसार का विनाश कर मोक्ष का कारण होता है।

परम पूज्य क्षमामूर्ति आचार्य गुरुवर विशदसागरजी महाराज ने अपनी लेखनी से अनेक विधानों को सुन्दर और सरल शब्दों में लिखा है जो अभी 80 विधानों को लिखकर हम भूले–भटके एवं सभी प्रकार की पीड़ा से ग्रसित एवं अज्ञानियों को दिशा बोध देने कहें या कल्याण की भावना कहें या सभी श्रावक धर्म मार्ग पर लगें, सुखी रहें इस भावना से आचार्यश्री ने विधानों को लिखा। इसी क्रम में **'श्री सोलहकारण विधान'** की रचना की ऐसे गुरुदेव के श्री चरणों में नमोस्तु–3

सोलहकारण भावना, 'विशद' भाव से भाय।
तीर्थंकर पदवी लहे, मोक्ष महाफल पाय।।

आचार्यश्री ने सोलहकारण भावना बड़े सुन्दर शब्दों में जिस प्रकार मंगतरायजी द्वारा 'बारह भावना' लिखी है उसी प्रकार सोलहकारण भावना लिखी है जो जीव सोलहकारण भावना का शुद्ध भावपूर्वक चिन्तन करता है उसको तीर्थंकर प्रकृति का बंध निश्चित ही होता है।

'सोलह भावना बार–बार भावे जो कोई, ताहे तीर्थंकर प्रकृति निश्चित ही होई।'

–ब्र. सपना दीदी

(संघस्थ : आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज)

षोडशकारण व्रत विधि

मेघमालाषोडशकारणञ्चैतद्द्वयं समानं प्रतिपद्दिनमेव द्वयोरारम्भं मुख्यतया करणीयम्। एतावान् विशेषः षोडशकारणे तु आश्विनकृष्णा प्रतिपदा एव पूर्णाभिषेकाय गृहीता भवति, इति नियमः। कृष्णपंचमी तु नाम्न एवं प्रसिद्धा।

अर्थ–मेघमाला और षोडशकारण व्रत दोनों ही समान हैं। दोनों का आरम्भ भाद्रपद कृष्णा प्रतिपदा से होता है, परन्तु षोडशकारण व्रत में इतनी विशेषता है कि इसमें पूर्णाभिषेक आश्विन कृष्णा प्रतिपदा को होता है, ऐसा नियम है। कृष्णा पंचमी तो नाम से ही प्रसिद्ध है।

जम्बूद्वीप संबंधी भरतक्षेत्र के मगध (बिहार) प्रांत में राजगृही नगर है। वहाँ के राजा हेमप्रभ और रानी विजयावती थी। इस राजा के यहाँ महाशर्मा नामक नौकर था और उनकी स्त्री का नाम प्रियंवदा था। इस प्रियंवदा के गर्भ से कालभैरवी नामक एक अत्यन्त कुरूपी कन्या उत्पन्न हुई कि जिसे देखकर माता–पितादि सभी स्वजनों तक को घृणा होती थी।

एक दिन मतिसागर नामक चारणमुनि आकाशमार्ग से गमन करते हुए उसी नगर में आये, तो उस महाशर्मा ने अत्यन्त भक्ति सहित श्री मुनि को पड़गाहकर विधिपूर्वक आहार दिया और उनसे धर्मोपदेश सुना। पश्चात् जुगल कर जोड़कर विनययुक्त हो पूछा–हे नाथ ! यह मेरी कालभैरवी नाम की कन्या किस पापकर्म के उदय से ऐसी कुरूपी और कुलक्षणी उत्पन्न हुई है, सो कृपाकर कहिए ? अब अवधिज्ञान के धारी श्री मुनिराज कहने लगे– वत्स ! सुनो–

उज्जैन नगरी में एक महिपाल नाम का राजा और उसकी वेगावती नाम की रानी थी। इस रानी से विशालाक्षी नाम की एक अत्यन्त सुन्दर रूपवान कन्या थी, जो कि बहुत रूपवान होने के कारण बहुत अभिमानिनी थी और इसी रूप के मद में उसने एक भी सद्गुण न सीखा। यथार्थ है–अहंकारी (मानी) नरों को विद्या नहीं आती है।

एक दिन वह कन्या अपनी चित्रसारी में बैठी हुई दर्पण में अपना मुख देख रही थी कि इतने में ज्ञानसूर्य नाम के महातपस्वी श्री मुनिराज उसके घर से आहार लेकर बाहर निकले, सो इस अज्ञान कन्या ने रूप के मद से मुनि को देखकर खिड़की से मुनि के ऊपर थूक दिया और बहुत हर्षित हुई।

परन्तु पृथ्वी के समान क्षमावान श्री मुनिराज तो अपनी नीची दृष्टि किये हुए ही चले गये। यह देखकर राजपुरोहित इस कन्या का उन्मत्तपना देखकर उस पर बहुत क्रोधित हुआ और तुरन्त ही प्रासुक जल से श्री मुनिराज का शरीर प्रक्षालन करके बहुत भक्ति से वैयावृत्य कर स्तुति की। यह देखकर वह कन्या बहुत लज्जित हुई और अपने किये हुए नीच कृत्य पर पश्चाताप करके श्री मुनि के पास गई और नमस्कार करके अपने अपराध की क्षमा माँगी। श्री मुनिराज ने उसको धर्मलाभ कहकर उपदेश दिया। पश्चात् वह कन्या वहाँ से मरकर तेरे घर यह कालभैरवी नाम की कन्या हुई है। इसने जो पूर्वजन्म में मुनि की निंदा व उपसर्ग करके जो घोर पाप किया है उसी के फल से यह ऐसी कुरूपा हुई है, क्योंकि पूर्व संचित कर्मों का फल भोगे बिना छुटकारा नहीं होता है इसलिए अब इसे समभावों से भोगना ही कर्त्तव्य है और आगे को ऐसे कर्म न बंधे ऐसा समीचीन उपाय करना योग्य है। अब पुनः वह महाशर्मा बोला–हे प्रभो ! आप ही कृपाकर कोई ऐसा उपाय बताइये कि जिससे वह कन्या अब इस दुःख से छूटकर सम्यक् सुखों को प्राप्त होवे तब श्री मुनिराज बोले–वत्स ! सुनो–

संसार में मनुष्यों के लिए कोई भी कार्य असाध्य नहीं है, सो भला यह कितना सा दुःख है ? जिनधर्म के सेवन से तो अनादिकाल से लगे हुए जन्म–मरणादि दुःख से भी छूटकर सच्चे मोक्षसुख की प्राप्ति होती है और दुःखों से छूटने की तो बात ही क्या है ? वे तो सहज ही में छूट जाते हैं। इसलिए यदि यह कन्या षोडशकारण भावना भावे और व्रत पाले, तो अल्पकाल में ही स्त्रीलिंग छेदकर मोक्ष–सुख को पावेगी। तब वह महाशर्मा बोला– हे स्वामी ! इस व्रत की कौन–कौन भावनाएँ और विधि क्या है ? सो कृपाकर कहिए। तब मुनिराज ने इन जिज्ञासुओं को निम्न प्रकार षोडशकारण व्रत का स्वरूप और विधि बताई।

इन 16 भावनाओं को यदि केवली–श्रुतकेवली के पादमूल के निकट अन्तःकरण से चिन्तवन की जाये तथा तदनुसार प्रवर्तन किया जाये तो इनका फल तीर्थंकर नाम कर्म के आश्रव का कारण है। आचार्य महाराज व्रत की विधि कहते हैं–

भादो, माघ और चैत्र वदी एकम् से कुंवार, फाल्गुन और वैशाख वदी एकम् तक (एक वर्ष में तीन बार) पूरे एक–एक मास तक यह व्रत करना चाहिए।

इन दिनों तेला–बेला आदि उपवास करें अथवा नीरस वा एक, दो, तीन आदि रस त्यागकर ऊनोदरपूर्वक अतिथि या दीन दुःखी नर या पशुओं को भोजनादि दान देकर एकभुक्त करें। अंजन, मंजन, वस्त्रालंकार विशेष धारण न करे, शीलव्रत (ब्रह्मचर्य)

रखे, नित्य षोडशकारण भावना भावे और यंत्र बनाकर पूजाभिषेक करें, त्रिकाल सामायिक करे और **ॐ ह्रीं दर्शन–विशुद्धि, विनयसम्पन्नता, शीलव्रतेष्वनतिचार, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, संवेग, शक्तितस्त्याग, शक्तितस्तप, साधुसमाधि, वैयावृत्यकरण, अर्हद्भक्ति, आचार्यभक्ति, उपाध्यायभक्ति (बहुश्रुत भक्ति), प्रवचनभक्ति आवश्यकापरिहाणि, मार्ग प्रभावना, प्रवचनवात्सल्यादि षोडशकारणेभ्यो नमः।**

इस महामंत्र का दिन में तीन बार 108 बार जाप करें। इस प्रकार इस व्रत को उत्कृष्ट सोलह वर्ष, मध्यम 5 अथवा दो वर्ष और जघन्य 1 वर्ष करके यथाशक्ति उद्यापन करें अर्थात् सोलह–सोलह उपकरण श्री मंदिरजी में भेंट दें और शास्त्र व विद्यादान करें, शास्त्र भण्डार खोलें, सरस्वती मंदिर बनावें, पवित्र जिनधर्म का उपदेश करें और करावे इत्यादि यदि द्रव्य खर्च करने की शक्ति न हो तो व्रत द्विगुणित करें।

इस प्रकार ऋषिराज के मुख से व्रत की विधि सुनकर कालभैरवी नाम की उस ब्राह्मण कन्या ने षोडशकारण व्रत स्वीकार करके उत्कृष्ट रीति से पालन किया, भावना भायी और विधिपूर्वक उद्यापन किया, पीछे वह आयु के अंत में समाधिमरण द्वारा स्त्रीलिंग छेदकर सोलहवें (अच्युत) स्वर्ग में देव हुई। वहाँ से बाईस सागर आयु पूर्ण कर वह देव जम्बूद्वीप के विदेहक्षेत्र संबंधी अमरावती देश के गंधर्व नगर में राजा श्रीमंदिर की रानी महादेवी के सीमंधर नाम का तीर्थंकर पुत्र हुआ सो योग्य अवस्था को प्राप्त होकर राज्योचित सुख भोग जिनेश्वरी दीक्षा ली और घोर तपश्चरण कर केवलज्ञान प्राप्त करके बहुत जीवों को धर्मोपदेश दिया तथा आयु के अंत में समस्त अघाति कर्मों का भी नाश कर निर्वाण पद प्राप्त किया।

इस प्रकार इस व्रत को धारण करने से कालभैरवी नाम की ब्राह्मण कन्या ने सुर–नर भवों के सुखों को भोगकर अक्षय अविनाशी स्वाधीन मोक्षसुख को प्राप्त कर लिया, तो जो अन्य भव्य जीव इस व्रत को पालन करेंगे उनको भी अवश्य ही उत्तम फल की प्राप्ति होगी।

नजरों के बदलते ही नजारे बदल गये।
किस्ती ने बदला रुख तो किनारे बदल गये।।

सोलहकारण पर्व में यह सोलहकारण विधान कर अथाह पुण्यार्जन करें।

– मुनि विशालसागर

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव–शास्त्र–गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदिक, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वानन्।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नी, हम उससे सतत् सताए हैं।
अब नील गिरी का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत् मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मों कृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव 'विशद', जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार।। शान्तये शांतिधारा..

दोहा– पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख–शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पञ्च कल्याणक के अर्घ

तीर्थंकर पद के धनी, पाए गर्भ कल्याण।
अर्चा करे जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व–पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, और ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा–कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते हैं पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।

प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकास।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता श्रेष्ठ प्रकाश।।5।।
वस्तू तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत् सुख को जग में खोजा, किन्तू पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति अरु धर्मादिक का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याए भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा- नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ ! हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ती पाने को 'विशद', करते हम गुणगान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

सोलहकारण स्तवन

दोहा- सोलह कारण भाव हैं, शिव पद के सोपान।
बनते हैं तीर्थेश वह, जो करते गुणगान।।

(शम्भू छंद)

प्रथम भावना दर्श विशुद्धी, बतलाई है सर्व महान।
शंकादिक दोषों से विरहित, जो होती है श्रेष्ठ प्रधान।।
विनय सम्पन्न भावना द्वितिय, जो खोले मुक्ती का द्वार।
अनतिचार शीलव्रत पालन, करके होते भव से पार।।1।।
शुभ अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग में, रहते हैं जो हरदम लीन।
भेद ज्ञान के द्वारा भविजन, करते हैं कर्मों को क्षीण।।
जग से होकर के विरक्त जो, धारण करते हैं संवेग।
त्याग शक्तिसः भाव धारने, में रखते जो सदा विवेक।।2।।
सुतप शक्तिसः श्रेष्ठ भावना, से करते इच्छा का रोध।
द्वादश तप का पालन करके, स्वयं जगाते आतम बोध।।
साधु समाधी भव्य भावना, धरने वाले जग के जीव।
वैय्यावृत्ती करने वाले, अर्जन करते पुण्य अतीव।।3।।
अर्हन्तों की भक्ती होती, सारे जग में मंगलकार।
आचार्यों की भक्ती करते, भक्त भाव से बारम्बार।।
उपाध्याय गुरुवर की भक्ती, बहुश्रुत भक्ती कही महान।
प्रवचन भक्ती में जैनागम का, हो विनय सहित गुणगान।।4।।
आवश्यक कर्त्तव्यों का जो, कभी नहीं करते परिहार।
आवश्यक अपरिहार्य भावना, कहलाए जो अपरम्पार।।
जैन धर्म की हो प्रभावना, हरदम करते यही उपाय।
प्रवचन वत्सल भक्ति भावना, धारण करते मन-वच-काय।।5।।

दोहा- यही भावना भा रहे, जिन पद में शुभकार।
सोलह कारण भावना, का हम पाएँ सार।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री सोलहकारण समुच्चय पूजा

स्थापना

नामकर्म का भेद कहा है, तीर्थंकर प्रकृति शुभकार।
सोलहकारण भव्य भावना, भाने से होती मनहार।।
तीर्थंकर जिन धर्म तीर्थ के, रहे प्रवर्तक मंगलकार।
आह्वानन् करते हम उर में, भव्य भावना बारम्बार।।

दोहा- भाते हैं हम भावना, पाने पद तीर्थेश।
जिन गुण गाते भाव से, आकर यहाँ विशेष।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावना समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावना समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावना समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

झर-झर नीर बरसता नभ से, जग की प्यास बुझाता है।
चेतन की जो प्यास बुझाए, वह अर्हत पद पाता है।।
सोलहकारण विशद भावना, आज यहाँ हम भाते हैं।
तीर्थंकर पद प्राप्त हमें हो, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावना जिनगुणसंपद्भ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

दाह मिटाने को शरीर की, चन्दन बहुत लगाये हैं।
भव संताप मिटे अब मेरा, नाथ शरण में आए हैं।।
सोलहकारण विशद भावना, आज यहाँ हम भाते हैं।
तीर्थंकर पद प्राप्त हमें हो, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावना जिनगुणसंपद्भ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

चर्म चक्षु से जो भी दिखता, वह तो क्षय के योग्य रहा।
ज्ञान चक्षु में जो कुछ आया, वह अक्षय पद सिद्ध कहा।।
सोलहकारण विशद भावना, आज यहाँ हम भाते हैं।
तीर्थंकर पद प्राप्त हमें हो, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावना जिनगुणसंपद्भ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित मुरझा जाते, गंध भी ना रह पाती है।
आत्म ब्रह्म की याद हमेशा, हे जिन ! सतत् सताती है।।
सोलहकारण विशद भावना, आज यहाँ हम भाते हैं।
तीर्थंकर पद प्राप्त हमें हो, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावना जिनगुणसंपद्भ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पर द्रव्यों से भूख मिटी ना, क्षुधा रोग घेरा डाले।
निज अनुभव के चरू चढ़ाते, मुक्ती जो देने वाले।।
सोलहकारण विशद भावना, आज यहाँ हम भाते हैं।
तीर्थंकर पद प्राप्त हमें हो, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावना जिनगुणसंपद्भ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह महातम नाश हेतु यह, दीपक श्रेष्ठ जलाए हैं।
अन्तर घट में हो प्रकाश हम, विशद भावना भाए हैं
सोलहकारण विशद भावना, आज यहाँ हम भाते हैं।
तीर्थंकर पद प्राप्त हमें हो, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावना जिनगुणसंपद्भ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, चिन्मय धूप जलाते हैं।
नित्य निरञ्जन पद पाने को, तव पद में सिरनाते हैं।।

सोलहकारण विशद भावना, आज यहाँ हम भाते हैं।
तीर्थंकर पद प्राप्त हमें हो, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणभावना जिनगुणसंपद्भ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दुष्कर्मों के फल पाकर हम, चतुर्गति में भरमाए।
मोक्ष महाफल पाने को अब, श्री जिनेन्द्र पद में आए।।
सोलहकारण विशद भावना, आज यहाँ हम भाते हैं।
तीर्थंकर पद प्राप्त हमें हो, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणभावना जिनगुणसंपद्भ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ आपका दर्शन पाकर, निज दर्शन ना पाए हैं।
सिद्ध शिला पर आसन पाने, अर्घ्य बनाकर लाए हैं।।
सोलहकारण विशद भावना, आज यहाँ हम भाते हैं।
तीर्थंकर पद प्राप्त हमें हो, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणभावना जिनगुणसंपद्भ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– तीर्थंकर पद प्राप्त हो, सोलहकारण भाय।
शांतीधारा दे रहे, भाव सहित हर्षाय।। *(शांतये शांतिधारा)*

सोलह कारण भावना, तीर्थंकर पद देय।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने सुपद अजेय।। *(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)*

जयमाला

दोहा– तीर्थंकर पद का रहा, साधन श्रेष्ठ त्रिकाल।
सोलहकारण भावना, की गाते जयमाल।।

(चौपाई)

काल अनादि अनन्त बताया, इसका अन्त कहीं न पाया।
लोकालोक अनन्त कहाया, जिनवाणी में ऐसा गाया।।

जीव लोक में रहते भाई, इनकी संख्या कही न जाई।
जीवादिक छह द्रव्यें जानो, सर्व लोक में इनको मानो।।
चतुर्गती में जीव भ्रमाते, कर्मोंदय से सुख–दुख पाते।
मिथ्यामति के कारण जानो, भ्रमण होय ऐसा पहचानो।।
उससे प्राणी मुक्ती पावें, जैन धर्म जो भी अपनावें।
प्राणी तीर्थंकर पद पाते, भव्य भावना जो भी भाते।।
सोलह कारण इसको जानो, प्रथम श्रेष्ठ आवश्यक मानो।
दर्श विशुद्धी जो कहलावे, सम्यक् दृष्टी प्राणी पावे।।
तो भी कोई काम न आवें, इसके बिना श्रेष्ठ सब पावें।
विनय भावना दूजी जानो, शील व्रतों का पालन मानो।।
ज्ञानोपयोग अभीक्ष्ण बताया, फिर संवेग भाव उपजाया।
शक्तीसः शुभ त्याग बताया, तप धारण का भाव बनाया।।
साधु समाधि करें सद् ज्ञानी, वैय्यावृत्य भावना मानी।
अर्हद् भक्ती श्रेष्ठ बताई, है आचार्य भक्ति सुखदाई।।
आवश्यक अपरिहार्य जानिए, प्रवचन वत्सल श्रेष्ठ मानिए।
काल अनादी से कल्याणी, श्रेष्ठ भावना भाए प्राणी।।
हम भी यही भावना भाते, अपने मन में भाव बनाते।
'विशद' भावना हम ये भावें, फिर तीर्थंकर पदवीं पावें।।
अपने सारे कर्म नशाएँ, कर्म नाशकर शिवपुर जाएँ।
मुक्ती पद हम भी पा जावें, और नहीं अब जगत भ्रमावें।।

दोहा– सोलह कारण भावना, भाते योग सम्हाल।
भाव सहित हम वन्दना, करते 'विशद' त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि–षोडशकारणेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शाश्वत् पद के हेतु हम, शाश्वत् सोलह भाव।
भाने को उद्धत रहें, करके कोई उपाव।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री दर्शनविशुद्धि भावना पूजा

स्थापना

सोलह कारण प्रथम भावना, दर्श विशुद्धी रही महान।
पूजा करते आज यहाँ हम, करने को आतम कल्याण।।
दर्श विशुद्धी जगे हृदय में, यही भावना रही प्रधान।
अतः पुष्प ले आज यहाँ पर, करते हैं उर में आह्वान्।।

दोहा– नाथ आपके द्वार पर, बनते भाव विशुद्ध।
तीर्थंकर पद प्राप्त कर, होते प्राणी सिद्ध।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि भावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि भावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

जल समान निर्मल मन करने, सम्यक् दर्श जगाना है।
जन्म जरा से मुक्ती पाने, निर्मल नीर चढ़ाना है।।
अष्ट अंग युत सम्यक् दर्शन, पाकर निज को ध्यायेंगे।
सिद्धों के हैं आठ मूलगुण, वह गुण हम भी पाएँगे।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तन की तपन मिटाने वाला, शीतल चन्दन बतलाया।
भव सन्ताप नशाने वाला, सम्यक् दर्शन गुण गाया।।
अष्ट अंग युत सम्यक् दर्शन, पाकर निज को ध्यायेंगे।
सिद्धों के हैं आठ मूलगुण, वह गुण हम भी पाएँगे।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल तन्दुल चन्द्र किरण सम, मिलकर यहाँ चढ़ाते हैं।
सम्यक् दर्शन चेतन का गुण, अर्चा कर प्रगटाते हैं।।

अष्ट अंग युत सम्यक् दर्शन, पाकर निज को ध्यायेंगे।
सिद्धों के हैं आठ मूलगुण, वह गुण हम भी पाएँगे।।3।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूलों के उपवन से चुनकर, पुष्प थाल भर लाए हैं।
कामबाण विध्वंश हेतु हम, पूजा करने आए हैं।।
अष्ट अंग युत सम्यक् दर्शन, पाकर जिन को ध्यायेंगे।
सिद्धों के हैं आठ मूलगुण, वह गुण हम भी पाएँगे।।4।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृत सम नैवेद्य यहाँ हम, तुरत बनाकर लाए हैं।
जिन पूजा कर रोग क्षुधादिक, पूर्ण नशाने आए हैं।।
अष्ट अंग युत सम्यक् दर्शन, पाकर निज को ध्यायेंगे।
सिद्धों के हैं आठ मूलगुण, वह गुण हम भी पाएँगे।।5।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रजत थाल में मणिमय दीपक, ज्योतिर्मय लेकर आए।
मोह अंध के नाश हेतु यह, पूजा करने को लाए।।
अष्ट अंग युत सम्यक् दर्शन, पाकर निज को ध्यायेंगे।
सिद्धों के हैं आठ मूलगुण, वह गुण हम भी पाएँगे।।6।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर चन्दन से निर्मित, धूप जलाने को लाए।
काल अनादी लगे कर्म के, नाश हेतु जिनपद आए।।
अष्ट अंग युत सम्यक् दर्शन, पाकर निज को ध्यायेंगे।
सिद्धों के हैं आठ मूलगुण, वह गुण हम भी पाएँगे।।7।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सरस ताजे फल अनुपम, थाल में भरके लाए हैं।
मोक्ष महाफल पाने को हम, चरण शरण में आए हैं।।

अष्ट अंग युत सम्यक् दर्शन, पाकर निज को ध्यायेंगे।
सिद्धों के हैं आठ मूलगुण, वह गुण हम भी पाएँगे।।8।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत कुसुमादी, से यह अर्घ्य बना लाए।
पद अनर्घ्य पाया प्रभु ने वह, पद पाने को हम आए।।
अष्ट अंग युत सम्यक् दर्शन, पाकर निज को ध्यायेंगे।
सिद्धों के हैं आठ मूलगुण, वह गुण हम भी पाएँगे।।9।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– लेकर प्रासुक नीर यह, देते शांतीधार।
सम्यक् दर्शन प्राप्त कर, पाएँ भव से पार।।

शांतये शांतिधारा

पुष्पाञ्जलि को पुष्प यह, लेकर आए नाथ।
सम्यक् श्रद्धा प्राप्त हो, चरण झुकाएँ माथ।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

प्रथम वलय (अर्घ्यावली)

दोहा– दर्श विशुद्धी भावना, जग में रही महान।
पुष्पाञ्जलि करते 'विशद', पाने सद् श्रद्धान।।

प्रथम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पच्चिस दोषरहित सम्यक् दर्शन के अर्घ्य

(छन्द : जोगीरासा)

देव शास्त्र गुरु जैन धर्म में, शंका मन में आवे ।
दोष करें सम्यक्दर्शन में, भव वन में भटकावे ।।
हो निशंक जिन धर्म वचन में, सद्दृष्टी कहलावे ।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे ।।1।।

ॐ ह्रीं निःशंकित गुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मवशी जो अंत सहित है, बीज पाप का गाया।
भव सुख की चाहत करना ही, कांक्षा दोष कहाया।।
यह सुख वांछा तजने वाला, सद्दृष्टी कहलावे ।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे ।।2।।

ॐ ह्रीं निःकांक्षित गुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है स्वभाव से देह अपावन, रत्नत्रय से पावन।
त्याग जुगुप्सा गुण में प्रीति, मुनि तन है मन भावन।।
ग्लानी को तजने वाला ही, सद्दृष्टी कहलावे ।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे ।।3।।

ॐ ह्रीं निर्विचिकित्सा गुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुपथ पंथ पंथी की स्तुति, और प्रशंसा करना।
भव दुख का कारण है भाई, दर्शन दोष समझना।।
करें मूढ़ की नहीं प्रशंसा, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे।।4।।

ॐ ह्रीं अमूढ़दृष्टि गुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं शुद्ध है मोक्ष का मारग, मोही दोष लगावे।
धर्म की निन्दा होय जहाँ यह, दर्शन दोष कहावे।।
अवगुण ढाके दोषी जन के, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे ।।5।।

ॐ ह्रीं उपगूहन गुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन या चारित से, चलित कोई हो जावे।
अज्ञानी भव भ्रमण करे वह, दर्शन दोष लगावे।।
धर्म भाव से उनके मन में, पुनः धर्म उपजावे।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे ।।6।।

ॐ ह्रीं स्थितिकरण गुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म और साधर्मी जन में, प्रीति नहीं जो धरते।
सम्यक्दर्शन में वह प्राणी, दोष अनेकों करते।।
वात्सल्य का भाव धरे तो, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे।।7।।

ॐ ह्रीं वात्सल्य गुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या अरु अज्ञान तिमिर जो, फैला सारे जग में।
समकित में वह दोष लगावे, चले न मुक्ती मग में।।
जैन धर्म को करे प्रकाशित, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे ।।8।।

ॐ ह्रीं प्रभावना गुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मद वर्णन

पिता भूप बन जाए यदि तो, उसका मद जो धारे।
सम्यक्दर्शन अहंकार के, सारे दोष निवारे।।
जैन धर्म की महिमा अनुपम, जग में मंगलकारी।
विशद भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, हो जाऊँ अविकारी ।।9।।

ॐ ह्रीं पितृभूपमद मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मामा नृप बन जाय यदि तो, उसका मद जो धारे।
सम्यक् दर्शन अहंकार के, सारे दोष निवारे।।
जैन धर्म की महिमा अनुपम, जग में मंगलकारी।
विशद भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, हो जाऊँ अविकारी ।।10।।

ॐ ह्रीं मातुलमद मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूप नहीं जग में स्थिर है, उसका मद जो धारे।
सम्यक् दर्शन अहंकार के, सारे दोष निवारे।।
जैन धर्म की महिमा अनुपम, जग में मंगलकारी।
विशद भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, हो जाऊँ अविकारी ।।11।।

ॐ ह्रीं रूपमद मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान का मद दुर्गति का कारण, उसका मद क्यों धारे।
सम्यक् दर्शन अहंकार के, सारे दोष निवारे।।
जैन धर्म की महिमा अनुपम, जग में मंगलकारी।
विशद भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, हो जाऊँ अविकारी ।।12।।

ॐ ह्रीं ज्ञानमद मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन दौलत सब नाशवान है, उसका मद क्यों धारे।
सम्यक् दृष्टी प्राणी अपने, सारे दोष निवारे।।
जैन धर्म की महिमा अनुपम, जग में मंगलकारी।
विशद भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, हो जाऊँ अविकारी ।।13।।

ॐ ह्रीं धनमद मलदोषरहित सम्यक्दर्शनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वीर्य जवानी का कायल है, बल मद वृद्ध न पावे।
सम्यक् दृष्टी प्राणी अपने, सारे दोष नशावे।।
जैन धर्म की महिमा अनुपम, जग में मंगलकारी।
विशद भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, हो जाऊँ अविकारी ।।14।।

ॐ ह्रीं शक्तिमद मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप का मद करने से भाई, तप का फल क्यों पावे।
सम्यक् दृष्टी प्राणी अपने, सारे दोष मिटावे।।
जैन धर्म की महिमा अनुपम, जग में मंगलकारी।
विशद भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, हो जाऊँ अविकारी ।।15।।

ॐ ह्रीं तपमद मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भंगुर प्रभुता होती है, ज्ञानी मद क्यों धारे।
सम्यक् दृष्टी प्राणी अपने, सारे दोष निवारे।।
जैन धर्म की महिमा अनुपम, जग में मंगलकारी।
विशद भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, हो जाऊँ अविकारी ।।16।।

ॐ ह्रीं प्रभुतामद मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन मूढ़ता वर्णन (वीर छन्द)

न्हवन करे सरिता सागर में, शिखर आदि से भी गिर जाय।
ढेर करे पत्थर बालू के, अग्नी में जलकर मर जाय।।
लोकमूढ़ता की क्रियाएँ, सम्यक्‌दृष्टी करें नहीं।
इन दोषों से रहित सुनिर्मल, जैन धर्म कहलाए सही ।।17।।

ॐ ह्रीं लोकमूढ़ता मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग द्वेष से मलिन देव की, भक्ती पूजा जो करते।
समय-समय पर वर की आशा, अपने मन में जो धरते।।
लोकमूढ़ता की क्रियाएँ, सम्यक्‌दृष्टी करें नहीं।
इन दोषों से रहित सुनिर्मल, जैन धर्म कहलाए सही ।।18।।

ॐ ह्रीं देवमूढ़ता मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसादिक आरम्भ परिग्रह, पास में अपने जो धरते।
भ्रमण करावें जग जीवों को, स्वयं आप ही वह करते।।
लोकमूढ़ता की क्रियाएँ, सम्यक्‌दृष्टी करें नहीं।
इन दोषों से रहित सुनिर्मल, जैन धर्म कहलाए सही ।।19।।

ॐ ह्रीं पाखण्ड मूढता मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् अनायतन वर्णन

लक्षण नहीं देव के गुण ना, फिर भी देव कहे जाते।
रागी द्वेषी भी होते हैं, दोष अठारह भी पाते।।
देव नहीं वह हैं कुदेव जो, इनका ही गुणगान करें।
नमन् करें जो प्राणी इनको, दूषित वह श्रद्धान करें ।।20।।

ॐ ह्रीं कुदेव अनायतन मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो एकान्त से दूषित है अरु, कपिलादी से रचित रहा।
हिंसादिक में धर्म बताए, मिथ्या आगम उसे कहा।।
शास्त्र नहीं वह है कुशास्त्र जो, इनका ही गुणगान करें।
नमन् करें जो प्राणी इनको, दूषित वह श्रद्धान करें ।।21।।

ॐ ह्रीं कुशास्त्र अनायतन मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो आरम्भ परिग्रह धारें, इन्द्रिय वश में नहीं करें ।
भस्म लपेटे रहते तन में, जटा जूट निज शीश धरें ।।
गुरू नहीं वह कुगुरु भाई, इनका जो गुणगान करें ।
नमन् करें जो प्राणी इनको, दूषित वह श्रद्धान करें ।।22।।

ॐ ह्रीं कुगुरु अनायतन मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग युक्त मोही कुदेव है, भार्या जिनके साथ रहे ।
हाथों में जो शस्त्र लिए है, गंगा जिनके माथ बहे ।।
इनके रहे उपासक जो भी, इनका ही गुणगान करें ।
इनमें श्रद्धा करने वाले, दूषित निज श्रद्धान करें ।।23।।

ॐ ह्रीं कुदेव उपासक अनायतन मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

वाणी जो सर्वज्ञ कथित ना, मिथ्याज्ञानी रचित कहे ।
जो एकांतवाद से दूषित, मिथ्या आगम वही रहे ।।
इनके रहे उपासक जो भी, इनका ही गुणगान करें ।
इनमें श्रद्धा करने वाले, दूषित निज श्रद्धान करें ।।24।।

ॐ ह्रीं कुशास्त्र उपासक अनायतन मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

राग भरा जिनके अन्तर में, अम्बर तन में धार रहे ।
मिथ्या भेष बनाए फिरते, मिथ्या दृष्टी गुरू कहे ।।
इनके रहे उपासक जो भी, इनका ही गुणगान करें ।
इनमें श्रद्धा करने वाले, दूषित निज श्रद्धान करें ।।25।।

ॐ ह्रीं कुगुरू उपासक अनायतन मलदोषरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सप्त व्यसन वर्णन

सब पापों का मूल है, द्यूत व्यसन दुखकार।
अपयश वध बन्धन करे, श्रद्धा करता क्षार।।26।।

ॐ ह्रीं द्यूतव्यसनरहिताय दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मांस व्यसन से मद बढ़े, करे अनेकों पाप।
दुख देवें वह और को, दुख पाते है आप।।27।।

ॐ ह्रीं मांसव्यसनरहिताय दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूर्छा आवे मद्य से, सुध बुधि जावे भूल।
जीव घात होवे तथा, श्रद्धा से प्रतिकूल।।28।।

ॐ ह्रीं मद्यव्यसनरहिताय दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक निंद्य होती विशद, गणिका जूठी थाल।
दुर्गति की कारण कही, है श्रद्धा की काल।।29।।

ॐ ह्रीं गणिकाव्यसनरहिताय दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूक पशू निर्दोष हैं, उनका करें शिकार।
सम्यक् श्रद्धा जो तजें, भटकें वह संसार।।30।।

ॐ ह्रीं आखेट्यव्यसनरहिताय दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य हरण जो और का, करते हैं जग जीव।
हीन होय श्रद्धान से, पावें दुःख अतीव।।31।।

ॐ ह्रीं चौर्यव्यसनरहिताय दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर नारी पैनी छुरी, करे धर्म पर वार।
दुर्गति का कारण बने, भटकाए संसार।।32।।

ॐ ह्रीं परनारीव्यसनरहिताय दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्दर्शन के आठ गुण (जोगीरासा छंद)

आठ अंग सम्यक् दर्शन के, आठ अन्य गुण गाये।
है संवेग प्रथम गुण अनुपम, धर्मानुराग कहाए।।
सम्यक्दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए।।33।।

ॐ ह्रीं संवेगगुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण निर्वेग प्राप्त जो करते, भोग उन्हें ना पाते।
इस संसार शरीर भोग से, पूर्ण विरक्ती भाते।।
सम्यक्दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए।।34।।

ॐ ह्रीं निर्वेगगुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज पापों की निन्दा करके, मन में खेद मनाते।
प्रायश्चित्त करते भावों से, यत्नाचार जगाते।।

सम्यक्दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए।।35।।

ॐ ह्रीं आत्मनिंदागुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रागद्वेष आदिक भावों से, पाप हुए जो भाई।
गुरु सम्मुख आलोचन करना, यह गर्हा कहलाई।।
सम्यक्दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए।।36।।

ॐ ह्रीं आत्मगर्हागुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध लोभ रागादिक जिनके, मन में ना रह पावें।
उपशम गुण से जीव युक्त वह, सारे पाप भगावें।।
सम्यक्दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए।।37।।

ॐ ह्रीं उपशमगुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरु नव देवों में, विनय भाव आचरते
भक्ती गुण के धारी प्राणी, कर्म कालिमा हरते।।
सम्यक्दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए।।38।।

ॐ ह्रीं भक्तिगुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधर्मी से प्रीति बढ़ाना, वात्सल्य कहलाए।
धर्मायतन की रक्षा करने, में उसका मन जाए।।
सम्यक्दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए।।39।।

ॐ ह्रीं वात्सल्यगुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव सिन्धू में डूबे प्राणी, के प्रति करुणा आए।
अनुकम्पा गुण सम्यक् दृष्टी, का पावन कहलाए।।
सम्यक्दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए।।40।।

ॐ ह्रीं अनुकम्पागुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संवेगादिक अष्ट गुणों से, द्वादश तप को पाए।
इस भव के सुख पाकर वह, मोक्ष महल को जाए।।
सम्यक्दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए।।41।।

ॐ ह्रीं संवेगादि अष्टगुणसमन्वित दर्शनविशुद्धिभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभक्ष्यादि त्याग वर्णन (चौपाई)

वट के फल में जीव अनेक, त्यागें ज्ञानी धार विवेक।
भाव सहित त्यागें जो पाप, दर्श विशुद्धी धारें आप।।42।।

ॐ ह्रीं वटफल भक्षणरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पीपल में जीवों को जान, त्यागें ज्ञानी धर श्रद्धान।
भाव सहित त्यागें जो पाप, दर्श विशुद्धी धारें आप।।43।।

ॐ ह्रीं पीपल फल भक्षणरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊमर फल में जीव विचार, त्यागें नर धर शुद्धाचार।
भाव सहित त्यागें जो पाप, दर्श विशुद्धी धारें आप।।44।।

ॐ ह्रीं ऊमर फल भक्षणरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहें कठूमर में त्रस जीव, त्याग किए हो पुण्य अतीव।
भाव सहित त्यागें जो पाप, दर्श विशुद्धी धारें आप।।45।।

ॐ ह्रीं कठूमर फल भक्षणरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाकर फल में जीव अपार, त्यागें रक्षा को नर–नार।
भाव सहित त्यागें जो पाप, दर्श विशुद्धी धारें आप।।46।।

ॐ ह्रीं पाकर फल भक्षणरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्याग करें निशि का आहार, पर जीवों में दया विचार।
भाव सहित त्यागें जो पाप, दर्श विशुद्धी धारें आप।।47।।

ॐ ह्रीं निशि आहार भक्षणरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिनछाने जल पीवें नाहिं, करुणाकारी जीव कहाहिं।
भाव सहित त्यागें जो पाप, दर्श विशुद्धी धारें आप।।48।।

ॐ ह्रीं जलगालन विधिसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मक्खी वमन मद्य मधु जान, शुभ आचारी खाय ना आन।
भाव सहित त्यागें जो पाप, दर्श विशुद्धी धारें आप।।49।।

ॐ ह्रीं मधु भक्षण भक्षणरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करे नहीं संक्रान्ति दान, जिसके हैं सम्यक् श्रद्धान।
होने दर्श विशुद्धीवान, शिव मगचारी बने महान।।50।।

ॐ ह्रीं संक्रान्ति दिवस दानरहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रह नक्षत्र आदि को जान, ना पूजे जिसको श्रद्धान।
भाव सहित त्यागें जो पाप, दर्श विशुद्धी धारें आप।।51।।

ॐ ह्रीं ग्रहनक्षत्र सेवारहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोमूत्रादिक द्रव्य विशेष, कभी ना पूजें कोई अशेष।
भाव सहित त्यागें जो पाप, दर्श विशुद्धी धारें आप।।52।।

ॐ ह्रीं गोमूत्रादि श्रद्धारहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भू गिरि रत्न आदि की सेव, पूजा ज्ञानी तजैं सदैव।
भाव सहित त्यागें जो पाप, दर्श विशुद्धी धारें आप।।53।।

ॐ ह्रीं भूगिरि रत्नपाषाणादि सेवारहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पर्वत वृक्ष पतन सुखकार, मिथ्या भ्रम करते परिहार।
भाव सहित त्यागें जो पाप, दर्श विशुद्धी धारें आप।।54।।

ॐ ह्रीं पर्वतवृक्ष पतन श्रद्धारहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि पतन से मुक्ती पाय, यह श्रद्धान ना मन में लाय।
भाव सहित त्यागें जो पाप, दर्श विशुद्धी धारें आप।।55।।

ॐ ह्रीं अग्निपतन श्रद्धारहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाहन सेवा रही महान, ऐसी श्रद्धा करें ना आन।
भाव सहित त्यागें जो पाप, दर्श विशुद्धी धारें आप।।56।।

ॐ ह्रीं वाहन सेवा श्रद्धारहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्त्र–शस्त्र आदिक अनुराग, इनकी पूजन करते त्याग।
भाव सहित त्यागें जो पाप, दर्श विशुद्धी धारें आप।।57।।

ॐ ह्रीं शस्त्र सेवा श्रद्धारहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- दर्श विशुद्धी भावना, जग में रही महान।
भाकर के यह भावना, नर पावें निर्वाण।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप : ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै नमः।

जयमाला

दोहा- सोलह कारण पूज्य है, तीनों लोक त्रिकाल।
दर्श विशुद्धी भावना, की गाते जयमाल।।

(छन्द स्रग्विणी)

तीर्थेश की हम भाव से शुभ वन्दना करें,
दर्शन विशुद्धी भावना की अर्चना करें।
तीर्थेश पद के हेतु सोलह भावना कहीं,
दर्शन विशुद्धी मुख्य गौण अन्य सब रहीं।।
श्री देव शास्त्र गुरु में श्रद्धान जो रहा,
आगम में सम्यक् दर्शन वश इसको ही कहा।
जो मोक्ष की सीढ़ी प्रथम इस जग में बताया,
निःशंक आदि अष्ट अंग युक्त कहाया।।
शंकादि आठ दोष आठ मद विहीन हैं,
जो तीन मूढ़ता अनायतन से हीन हैं।
मलदोष यह पच्चीस सम्यक् दर्श के गाए,
संवेग आदि आठ गुण भी श्रेष्ठ बताए।।
इस लोक में भयशील सभी भय से रहे हैं,
इह लोक मरण आदि भय सात कहे हैं।
दर्शन विशुद्धी धारी ना भय करें कभी,
परिहार करते मन से दोषों का जो सभी।।
चक्रेश वज्रजंघ ने ये भावना भाई,
तीर्थेश की पदवी स्वयं वृषभेष बन पाई।

राजा था राजगृह का श्रेणिक जो कहाया,
दर्शन विशुद्धी भावना का श्रेष्ठ फल पाया।।
पहले तो मुनिराज पे उपसर्ग किया था,
उस पाप का फल नरक आयुबंध लिया था।
उपसर्ग निवारण को रानी चेलना आई,
पति देव श्रेणिक नृप को वह साथ में लाई।।
मुनिराज ने दोनों को आशीर्वाद शुभ दिया,
श्रेणिक ने पश्चात्ताप तव अन्तरंग में किया।
तब देव-शास्त्र-गुरु में श्रद्धान जगाया,
जाके समवशरण में श्रावक का पद पाया।।
दर्शन विशुद्धी भावना जिन पाद में भाये,
तब बन्ध तीर्थंकर प्रकृति का श्रेष्ठतम पाये।
हे नाथ ! धर्म कर्म की महिमा नहीं जानी,
संसार में भटके अनादी बनके अज्ञानी।।
दर्शन विशुद्धी भावना तव पाद में भाएँ,
भव सिन्धु पार हेतु हम सम्यक्त्व जगाएँ।
हम दर्श विशुद्धी को यहाँ, पर भाव से ध्याते।
हे नाथ ! चरण आपके हम शीश झुकाते।।

(छन्द घत्तानन्द)

हम दर्श विशुद्धी, आतम शुद्धी, करने को तव गुण गाते।
निज गुण में वृद्धी, करने सिद्धी, 'विशद' चरण में सिरनाते।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

सोलह कारण भावना जो, जीव भाते हैं सही।
वे कर्म आठ विनाश करके, पहुँचते अष्टम मही।।
ये भावना तीर्थेश पद की, मूल है संसार में।
हो 'विशद' उर में भावना, अनुकूल है उद्धार में।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री विनयसम्पन्नता भावना पूजा

स्थापना (गीता छंद)

सोलह कारण भावना में, भावना द्वितीय कही।
जो है विनय सम्पन्नता शुभ, ज्ञान में कारण रही।।
इस भावना की अर्चना को, पुष्प सुरभित लाए हैं।
आहवान करने को हृदय में, आज हम भी आए हैं।।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नता भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नता भावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नता भावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(भुजंग प्रयात)

नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं, कलश नीर लाके चढ़ावें अधीशं।
चरण में प्रभु हम विनय भावना ये, विशद भाव से भा रहे लौ लगाये।।1।।
ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं, चरण में सुचन्दन चढ़ाते गिरीशं।
चरण में प्रभु हम विनय भावना ये, विशद भाव से भा रहे लौ लगाये।।2।।
ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं, धवल तन्दुलों से सुपूजें खगीशं।
चरण में प्रभु हम विनय भावना ये, विशद भाव से भा रहे लौ लगाये।।3।।
ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं, खिले पुष्प ले पूजते सर्व ईशं।
चरण में प्रभु हम विनय भावना ये, विशद भाव से भा रहे लौ लगाये।।4।।
ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं, चढ़ाते चरू ताजे नत हो हरीशं।
चरण में प्रभु हम विनय भावना ये, विशद भाव से भा रहे लौ लगाये।।5।।
ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं, सुदीपक जलाते विनत आग्नीशं।
चरण में प्रभु हम विनय भावना ये, विशद भाव से भा रहे लौ लगाये।।6।।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं, करें धूप से अर्चना नत नरीशं।
चरण में प्रभु हम विनय भावना ये, विशद भाव से भा रहे लौ लगाये।।7।।
ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं, सरस फल चढ़ाते चरण में अधीशं।
चरण में प्रभु हम विनय भावना ये, विशद भाव से भा रहे लौ लगाये।।8।।
ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं, अरघ शुभ चढ़ाते चरण में सुरीशं।
चरण में प्रभु हम विनय भावना ये, विशद भाव से भा रहे लौ लगाये।।9।।
ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जल धारा देते यहाँ, लेकर निर्मल नीर।
विनय भावना धारकर, पाएँ भव का तीर।। *शांतये शांतिधारा*
पुष्पाञ्जलि को पुष्प ले, विनय भाव के साथ।
शिव पद पाने के लिए, जोड़ रहे द्वय हाथ।। *पुष्पांजलिं क्षिपेत्*

अर्घ्यावली

दोहा- विनय भाव सम्पन्न हो, पुष्पाञ्जलि ले हाथ।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, विनय भाव के साथ।।

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चौबोला छन्द)

तीर्थंकर प्रकृति में कारण, विनय भावना भाते हैं।
दर्शन विनय प्राप्त करने हम, जिनवर के गुण गाते हैं।।
विशद विनय सम्पन्न भावना, भाने शीश झुकाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पावन यहाँ चढ़ाते हैं।।1।।
ॐ ह्रीं दर्शनविनयभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैनागम है ज्ञान में कारण, ज्ञानी ज्ञान प्रदान करें।
विनय भाव से हर्षित होकर, उनका हम सम्मान करें।।

विशद विनय सम्पन्न भावना, भाने शीश झुकाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पावन यहाँ चढ़ाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं ज्ञानविनयभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल देश चारित्र मोक्ष पथ, में कारण है अपरम्पार।
पञ्च भेद सम्यक् चारित के, उनकी विनय करें उर धार।।
विशद विनय सम्पन्न भावना, भाने शीश झुकाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पावन यहाँ चढ़ाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं चारित्रविनयभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरु के प्रति एवं, अन्य सभी से विनय करें।
सम्यक् पथ के अनुगामी, उपचार विनय का भाव धरें।।
विशद विनय सम्पन्न भावना, भाने शीश झुकाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पावन यहाँ चढ़ाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं उपचारविनयभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन-ज्ञान-चारित्र विनय शुभ, अरु उपचार विनय धारी।
शिवपथ के राही बनते हैं, इस जग में मंगलकारी।।
विशद विनय सम्पन्न भावना, भाने शीश झुकाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पावन यहाँ चढ़ाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्विधविनयसमन्वितविनयसम्पन्नताभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै नमः।

जयमाला

दोहा- विशद विनय सम्पन्नता, कही भावना श्रेष्ठ।
गाते हैं जयमाल हम, जिसकी यहाँ यथेष्ठ।।

(शम्भू छंद)

सोलहकारण भव्य भावना, में द्वितिय शुभ बतलाई।
विनय सम्पन्न भावना अनुपम, जग में जीवों ने पाई।।
चार भेद शुभ कहे विनय के, दर्शन ज्ञान चरित उपचार।
विनय धारने वाला प्राणी, हो जाता है भव से पार।।
विनय गुणों को वे ही पाते, मद का जो करते संहार।
मार्दव गुण के धारी होकर, करते जन-जन का उपकार।।

सेठ धनञ्जय ने जिन भक्ती, और विनय की अपरम्पार।
सोमा सती ने जिन अर्चा कर, पाया नाग फूल का हार।।
ग्वाला था कोण्डेश नाम का, भोला भाला ज्ञान विहीन।
पुण्य उदय आया उसका तो, शास्त्र विनय में हुआ प्रवीण।।
चन्द्रगुप्त मुनि गुरू विनय कर, सर्व जगत् में हुए प्रधान।
सारे जग में श्री मुनिवर ने, पाया है अतिशय सम्मान।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु भी, करें परस्पर में व्यवहार।
विनय भाव धारण करते हैं, अपनी पदवी के अनुसार।।
क्षुल्लक ऐलक देशव्रती भी, विनय भाव धारी गुणवान।
पुण्यवान शिवपथ के राही, करते हैं आतम कल्याण।।
विनयवान ज्ञानी होकर के, विद्याएँ पावें शुभकार।
ऋद्धि सिद्धियाँ पाने वाला, पालन करता सद् आचार।।
दर्शन ज्ञान चारित्र विनय तप, मम जीवन में आ जावे।
हो उपचार विनय का पालन, मेरे मन में यह भावे।।
पूर्व काल में मुक्त हुए जो, सबने विनय भाव पाया।
विनय भाव को धारण करके, मुक्ती का पथ अपनाया।।
'विशद' भावना भाते हैं हम, विनय बने जीवन का हार।
विनय भाव को धारण करके, पाएँ मुक्ती फल उपहार।।

दोहा- शिवपथ का राही बने, विनयवान इन्सान।
अल्प समय में जीव वह, पावे पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

सोलह कारण भावना जो, जीव भाते हैं सही।
वे कर्म आठ विनाश करके, पहुँचते अष्टम मही।।
ये भावना तीर्थेश पद की, मूल हैं संसार में।
हो 'विशद' उर में भावना, अनुकूल है उद्धार में।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावना पूजा

स्थापना

अनतिचार व्रत शील भावना, भाते हैं जो ज्ञानी जीव।
शील व्रतों का पालन करके, प्राप्त करें वह पुण्य अतीव।।
सोलह कारण भव्य भावना, में तृतिय यह रही महान।
विशद हृदय के आसन पर हम, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचार भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचार भावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचार भावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

उज्ज्वल जल ये क्षीरोदधि का, झारी में भर लाए हैं।
जन्म जरादिक रोग नाश हों, यही भावना भाए हैं।।
अनतिचार व्रत शील भावना, को हम हृदय सजाते हैं।
हम भी तीर्थंकर पद पाएँ, विशद भावना भाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केसर एक मिलाकर, स्वर्ण पात्र में लाए हैं।
भवाताप के नाश हेतु हम, अर्चा करने आए हैं।।
अनतिचार व्रत शील भावना, को हम हृदय सजाते हैं।
हम भी तीर्थंकर पद पाएँ, विशद भावना भाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल तन्दुल मनहर सुन्दर, रजत थाल में लाए हैं।
अक्षय पद पाने हम निर्मल, यहाँ चढ़ाने आए हैं।।
अनतिचार व्रत शील भावना, को हम हृदय सजाते हैं।
हम भी तीर्थंकर पद पाएँ, विशद भावना भाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्प सुगन्धित अनुपम, उपवन से हम लाए हैं।
निज गुण की सुरभित खुशबू हम, यहाँ जगाने आए हैं।।

अनतिचार व्रत शील भावना, को हम हृदय सजाते हैं।
हम भी तीर्थंकर पद पाएँ, विशद भावना भाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत मेवा चीनी के पावन, व्यंजन सरस बनाए हैं।
क्षुधा व्याधि उपशम करने को, आज यहाँ पर आए हैं।।
अनतिचार व्रत शील भावना, को हम हृदय सजाते हैं।
हम भी तीर्थंकर पद पाएँ, विशद भावना भाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योति जलाकर के दीपक में, तिमिर नशाने आए हैं।
मोह अन्ध हो नाश हमारा, यही भावना भाए हैं।।
अनतिचार व्रत शील भावना, को हम हृदय सजाते हैं।
हम भी तीर्थंकर पद पाएँ, विशद भावना भाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपायन में धूप जलाकर, कर्म नशाने लाये हैं।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, चरण शरण में आए हैं।।
अनतिचार व्रत शील भावना, को हम हृदय सजाते हैं।
हम भी तीर्थंकर पद पाएँ, विशद भावना भाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भाँति-भाँति के फल उपवन से, लेकर थाल भराए हैं।
मोक्ष महाफल पाने को हम, विशद भावना भाए हैं।।
अनतिचार व्रत शील भावना, को हम हृदय सजाते हैं।
हम भी तीर्थंकर पद पाएँ, विशद भावना भाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ पाने को अनुपम, अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
शाश्वत सुपद प्राप्त हो हमको, पूजा करने आए हैं।।
अनतिचार व्रत शील भावना, को हम हृदय सजाते हैं।
हम भी तीर्थंकर पद पाएँ, विशद भावना भाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– होता है जल का सदा, शीतल श्रेष्ठ स्वभाव।
भवसिन्धु से पार हो, मेरी भी अब नाव।। *शांतये शांतिधारा*
मोहित करते जीव को, सुरभित सुन्दर फूल।
पुष्पाञ्जलि जो भी करें, नशे कर्म का मूल।। *पुष्पांजलिं क्षिपेत्*

अर्घ्यावली

दोहा– शीलव्रतेष्वनतिचार की, महिमा अपरम्पार।
मण्डल पर पुष्पाञ्जली, करते हम शुभकार।।

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत

(शम्भू छंद)

वचन मनोगुप्ती के धारी, ईर्या समिती पाल रहे।
आदान निक्षेपण समिति पाकर, दिन के भोजन वान कहे।।
पञ्च भावना सहित अहिंसा, व्रत के धारी जो गाए।
अनतिचार व्रत शील भावना, धारक पावन कहलाए।।1।।

ॐ ह्रीं पंचभावनासहितनिरतिचार अहिंसाव्रतरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सत्य महाव्रत के धारी मुनि, क्रोध लोभ भय त्याग रहे।
हास्य त्याग अनुवीचि भाषण, कहने वाले श्रेष्ठ कहे।।
पञ्च भावना सहित सत्य शुभ, व्रत के धारी जो गाए।
अनतिचार व्रत शील भावना, धारक पावन कहलाए।।2।।

ॐ ह्रीं पंचभावनासहितनिरतिचार सत्यव्रतरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

परोपरोधाकरण विमोचित, शून्यागारावास करें।
भैक्ष्य शुद्धि साधर्मी जन से, विसम्वाद को पूर्ण हरें।।
पञ्च भावना सहित अचौर्य शुभ, व्रत के धारी जो गाए।
अनतिचार व्रत शील भावना, धारक पावन कहलाए।।3।।

ॐ ह्रीं पंचभावनासहितनिरतिचार अचौर्यव्रतरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्त्री राग कथा सुनने का, अंग निरीक्षण त्याग करें।
भोजन इष्ट गरिष्ट त्यागते, देह संस्कार पूर्ण हरें।।
पञ्च भावना सहित ब्रह्मचर्य, व्रत के धारी जो गाए।
अनतिचार व्रत शील भावना, धारक पावन कहलाए।।4।।

ॐ ह्रीं पंचभावनासहितनिरतिचार ब्रह्मचर्यव्रतरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पञ्चेन्द्रिय के विषयों में जो, राग दोष परिहार करें।
जन–जन के उपकारी साधू, जीवों का उद्धार करें।।
पञ्च भावना सहित अपरिग्रह, व्रत के धारी जो गाए।
अनतिचार व्रत शील भावना, धारक पावन कहलाए।।5।।

ॐ ह्रीं पंचभावनासहितनिरतिचार परिग्रहत्यागव्रतरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार हाथ भूमी को लखकर, चलते ईर्या समिति विचार।
यत्नाचार क्रिया में रखते, मुनिवर जग में मंगलकार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, लाये हैं यह अपरम्पार।
अनतिचार व्रत शील की महिमा, कही लोक में शुभ मनहार।।6।।

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिपालनरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित–मित–प्रिय वचन का मुख से, करने वाले उच्चारण।
अशुभ कटुक वचनों का करते, पूर्ण रूप से जो वारण।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, लाये हैं यह अपरम्पार।
अनतिचार व्रत शील की महिमा, कही लोक में शुभ मनहार।।7।।

ॐ ह्रीं भाषासमितिपालनरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छियालिस दोष टालकर भोजन, करते हैं जो हो अविकार।
समिति एषणा धारण करके, भाव बनाते हैं शुभकार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, लाये हैं यह अपरम्पार।
अनतिचार व्रत शील की महिमा, कही लोक में शुभ मनहार।।8।।

ॐ ह्रीं एषणासमितिपालनरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तू देख शोधकर के मुनि, करते निक्षेपण आदान।
यत्नाचार क्रिया में रखते, मुनिवर जग में मंगलकार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, लाये हैं यह अपरम्पार।
अनतिचार व्रत शील की महिमा, कही लोक में शुभ मनहार।।9।।

ॐ ह्रीं आदान–निक्षेपणसमितिपालनरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समिति प्रतिष्ठापन के धारी, निर्जन्तुक देखें स्थान।
मल मूत्रादिक क्षेपण करने, में जीवों का रखते ध्यान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, लाये हैं यह अपरम्पार।
अनतिचार व्रत शील की महिमा, कही लोक में शुभ मनहार।।10।।

ॐ ह्रीं उत्सर्गसमितिपालनरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छंद)

हैं मनोयोग के धारी, आश्रव करते हैं भारी।
मन की चेष्टा के त्यागी, प्राणी होते बड़भागी।।
जो मन को रोकें भाई, उनकी फैली प्रभुताई।
वह अपने कर्म नशावें, फिर शिव पदवी को पावें।।11।।

ॐ ह्रीं मनगुप्तिपालनरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो वचन योग को पावें, जीवन में कष्ट उठावें।
कर्माश्रव करते भारी, होते वह जीव दुखारी।।
जो वचन को रोकें भाई, उनकी फैली प्रभुताई।
वह अपने कर्म नशावें, फिर शिव पदवी को पावें।।12।।

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिपालनरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं कायगुप्ति के धारी, मुनि महाव्रती अनगारी।
स्थिर जो आसन पाते, आतम का ध्यान लगाते।।
जो तन को रोकें भाई, उनकी फैली प्रभुताई।
वह अपने कर्म नशावें, फिर शिव पदवी को पावें।।13।।

ॐ ह्रीं कायगुप्तिपालनरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छंद)

एक देश हिंसा के त्यागी, देशव्रती होते बड़भागी।
अनतिचार व्रत के जो धारी, होते जग में मंगलकारी।।14।।

ॐ ह्रीं अहिंसाणुव्रत पालनरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो स्थूल झूठ के त्यागी, देशव्रती हों जिन अनुरागी।
अनतिचार व्रत के जो धारी, होते जग में मंगलकारी।।15।।

ॐ ह्रीं सत्याणुव्रत पालनरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक देश चोरी जो त्यागें, अणुव्रती संयम में लागें।
अनतिचार व्रत के जो धारी, होते जग में मंगलकारी।।16।।

ॐ ह्रीं अचौर्याणुव्रत पालनरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो स्वदार संतोषी प्राणी, देशव्रती होते हैं ज्ञानी।
अनतिचार व्रत के जो धारी, होते जग में मंगलकारी।।17।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्याणुव्रत पालनरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह की मर्यादा वाले, देशव्रती जन रहे निराले।
अनतिचार व्रत के जो धारी, होते जग में मंगलकारी।।18।।

ॐ ह्रीं परिग्रहपरिमाणअणुव्रत पालनरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशों दिशा की सीमा धारें, गमनागमन पूर्ण परिहारें।
अनतिचार व्रत के जो धारी, दिग्व्रत धारे मंगलकारी।।19।।

ॐ ह्रीं दिग्व्रतनामगुणव्रत पालनरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देशव्रती मर्यादा धारे, देश काल की सीम सम्हारे।
अनतिचार व्रत के जो धारी, होते जग में मंगलकारी।।20।।

ॐ ह्रीं देशव्रतनामगुणव्रत पालनरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनर्थदण्ड व्रत पाने वाले, दुःश्रुति आदी तजें निराले।
अनतिचार व्रत के जो धारी, होते जग में मंगलकारी।।21।।

ॐ ह्रीं अनर्थदण्डविरतिनामगुणव्रत पालनरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सामायिक शिक्षाव्रत धारें, देश व्रतों को आप सम्हारें।
अनतिचार व्रत के जो धारी, होते जग में मंगलकारी।।22।।

ॐ ह्रीं सामायिकनामशिक्षाव्रत पालनरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे प्रोषधोपवास के धारी, देशव्रती गाये उपकारी।
अनतिचार व्रत के जो धारी, होते जग में मंगलकारी।।23।।

ॐ ह्रीं प्रोषधोपवासनामशिक्षाव्रत पालनरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगोपभोग प्रमाण जो पाते, शिक्षाव्रत धारी कहलाते।
अनतिचार व्रत के जो धारी, होते जग में मंगलकारी।।24।।

ॐ ह्रीं भोगोपभोगपरिमाणनामशिक्षाव्रत पालनरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अतिथि संविभाग को पाते, शिक्षाव्रत धारी कहलाते।
अनतिचार व्रत के जो धारी, होते जग में मंगलकारी।।25।।

ॐ ह्रीं अतिथिसंविभागनामशिक्षाव्रत पालनरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पच्चिस दोष टालने वाले, सम्यक्त्वी वह रहे निराले।
अनतिचार व्रत के जो धारी, होते जग में मंगलकारी।।26।।

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वगुणपालनरूप शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– अनतिचार व्रत शील धर, होते जो अनगार।
तेरह विधि चारित्र शुभ, पाले मुनि अनगार।।
श्रावक बारह व्रत धरें, देशव्रती शुभकार।
सल्लेखना सम्यक्त्व के, दूर करें अतिचार।।27।।

ॐ ह्रीं सल्लेखनागुणपालनरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनतिचार व्रत शीलधर, जग में रहे महान्।
संयम पालन कर विशद, पाते पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै नमः।

जयमाला

दोहा– सोलह कारण पूज्य हैं, तीनों लोक त्रिकाल।
अनतिचार व्रत शील की, गाते हम जयमाल।।

(सृग्विणी छंद)

अनतिचार शीलव्रत भावना भाइये, जैन मंदिर में आ पूजा रचाइये।
सोलहकारण की ये तीसरी भावना, भाके भव्यों की हो पूर्ण मनोकामना।।
चारित्र तेरह विधि मुनिवर जी धारते, सर्व दोषों को भाव से विचारते।
सोलहकारण की यह तीसरी भावना, भाके भव्यों की हो पूर्ण मनोकामना।।
श्रावक के श्रेष्ठ बारह व्रत जानिए, पाँच–पाँच अतिचार सबके हैं मानिए।
सोलहकारण की यह तीसरी भावना, भाके भव्यों की हो पूर्ण मनोकामना।।

अणुव्रत अहिंसादिक पंच गाए अहा, शील व्रत शेष सातों कहे हैं महा।
सोलहकारण की यह तीसरी भावना, भाके भव्यों की हो पूर्ण मनोकामना।।
गुण में वृद्धी करें श्रेष्ठ गुण व्रत कहे, शिक्षा दें जो व्रतों की शिक्षाव्रत वह रहे।
सोलहकारण की यह तीसरी भावना, भाके भव्यों की हो पूर्ण मनोकामना।।
सुतप छह बाह्य आगम में गाए हैं, अन्तरंग भी छह श्रेष्ठ बतलाए हैं।
सोलहकारण की यह तीसरी भावना, भाके भव्यों की हो पूर्ण मनोकामना।।
बाइस परीषह जय मुनिवर जी धारते, चौंतिस यह उत्तर गुण स्वयं ही सम्हारते।
सोलहकारण की यह तीसरी भावना, भाके भव्यों की हो पूर्ण मनोकामना।।
शील और व्रत जो भाव से पालते, आतम से कर्म को जीव वह पिछानते।
सोलहकारण की यह तीसरी भावना, भाके भव्यों की हो पूर्ण मनोकामना।।
सिद्ध हुए जीव कई शीलव्रत धारके, मोक्ष पाए हैं वह संयम सम्हार के।
सोलहकारण की यह तीसरी भावना, भाके भव्यों की हो पूर्ण मनोकामना।।
शीलव्रत धार कई जीव सिद्धि पाएँगे, कर्म नाशकर के शिवपुरी जाएँगे।
सोलहकारण की यह तीसरी भावना, भाके भव्यों की हो पूर्ण मनोकामना।।
शीलव्रत धारके सौख्य शांति जगे, भावना ये भा जीव मोक्ष मग में लगे।
सोलहकारण की यह तीसरी भावना, भाके भव्यों की हो पूर्ण मनोकामना।।
अनतिचार शील व्रत भाव अब भाइये, पूजकर भाव से सिद्धश्री पाइये।
सोलहकारण की यह तीसरी भावना, भाके भव्यों की हो पूर्ण मनोकामना।।

दोहा– विशद भावना भाय, अनतिचार व्रत शील की।
सिद्धश्री वह पाय, पूजा करके भाव से।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

सोलह कारण भावना जो, जीव भाते हैं सही।
वे कर्म आठ विनाश करके, पहुँचते अष्टम मही।।
ये भावना तीर्थेश पद की, मूल है संसार में।
हो 'विशद' उर में भावना, अनुकूल है उद्धार में।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावना पूजा

स्थापना

ज्ञानाभ्यास अभीक्ष्ण भावना, विशद भाव से भाते हैं।
शिवपथ के राही बनते वह, ज्ञानी जीव कहाते हैं।।
ज्ञान और ज्ञानी जो जग में, वह सब पूज्य कहे जाते।
सतत् ज्ञान अभ्यास के द्वारा, केवलज्ञान स्वयं पाते।।

दोहा– सोलह कारण भावना, में चौथा स्थान।
अभीक्ष्ण ज्ञान उपयोग का, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छंद)

भव-भव में नीर पिया है, ना समरस पान किया है।
हम राग में जलते आए, जल क्षीर सिन्धु से लाए।।
अब सम्यक् ज्ञान जगाएँ, बस यही भावना भाएँ।
हैं ज्ञानाभ्यास के धारी, होते जग मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन सन्ताप नशाए, ना भव का ताप मिटाए।
अब निज स्वभाव को पाएँ, चेतन के गुण प्रगटाएँ।।
अब सम्यक् ज्ञान जगाएँ, बस यही भावना भाएँ।
हैं ज्ञानाभ्यास के धारी, होते जग मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय निज ज्ञान ना पाए, आतम निधि जान ना पाए।
हे नाथ ! शरण में आए, अब निज स्वभाव जग जाए।।

अब सम्यक् ज्ञान जगाएँ, बस यही भावना भाएँ।
हैं ज्ञानाभ्यास के धारी, होते जग मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भव सन्तति सतत बढ़ाए, ना शील सम्पदा पाए।
अब शील सुमन प्रगटाएँ, निज के गुण में रम जाएँ।।
अब सम्यक् ज्ञान जगाएँ, बस यही भावना भाएँ।
हैं ज्ञानाभ्यास के धारी, होते जग मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

है क्षुधा रोग भयकारी, संज्ञा अहार दुखकारी।
नैवेद्य चढ़ाने लाए, अब क्षुधा नशाने आए।।
अब सम्यक् ज्ञान जगाएँ, बस यही भावना भाएँ।
हैं ज्ञानाभ्यास के धारी, होते जग मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छाया मिथ्यातम भारी, अब भोर होय मनहारी।
पुरुषार्थ जगादो स्वामी, हे शिवपुर के पथगामी।।
अब सम्यक् ज्ञान जगाएँ, बस यही भावना भाएँ।
हैं ज्ञानाभ्यास के धारी, होते जग मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मम आतम हुआ है काला, कर्मों ने घेरा डाला।
यह धूप जलाने लाए, शिवपद पाने को आए।।
अब सम्यक् ज्ञान जगाएँ, बस यही भावना भाएँ।
हैं ज्ञानाभ्यास के धारी, होते जग मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के फल से भारी, हम होते रहे दुखारी।
फल यहाँ चढ़ाने लाए, शिवफल की आशा पाए।।

अब सम्यक् ज्ञान जगाएँ, बस यही भावना भाएँ।
हैं ज्ञानाभ्यास के धारी, होते जग मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की शक्ति नशाएँ, चेतन शक्ति प्रगटाएँ।
यह अर्घ्य चढ़ाने लाए, प्रभु तुमसा बनने आए।।
अब सम्यक् ज्ञान जगाएँ, बस यही भावना भाएँ।
हैं ज्ञानाभ्यास के धारी, होते जग मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– ज्ञान भावना से मिले, गुण अनन्त भण्डार।
विशद योग से हम यहाँ, देते शांती धार।।

शांतये शांतिधारा

दोषों के हम कोष हैं, अल्प मती हे नाथ।
फिर भी अर्चा कर रहे, पुष्पाञ्जलि ले हाथ।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

प्रत्येकार्घ्य

दोहा– अभीक्ष्ण ज्ञान उपयोग है, नर जीवन का सार।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, होय आत्म उद्धार।।

वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(छन्द : चौबोला)

मतिज्ञान मन इन्द्रिय द्वारा, पाते हैं इस जग के जीव।
तीन सौ छत्तिस भेद रूप है, ध्याकर पाते पुण्य अतीव।।
ज्ञानोपयोग अभीक्ष्ण भावना, भाने को हम आए हैं।
सोलह कारण की पूजा को, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं मतिज्ञानसंयुक्त अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतज्ञान के अंग प्रविष्टी, अंग बाह्य दो भेद कहे।
अंग प्रविष्टि के बारह एवं, बाह्य के भेद अनेक रहे।।
ज्ञानोपयोग अभीक्ष्ण भावना, भाने को हम आए हैं।
सोलह कारण की पूजा को, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानसंयुक्त अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अष्टांग निमित्त ज्ञानश्रुत, है निमित्त जिसमें कारण।
सम्यक् ज्ञानी श्रुतभ्यास से, दोषों को करते वारण।।
ज्ञानोपयोग अभीक्ष्ण भावना, भाने को हम आए हैं।
सोलह कारण की पूजा को, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं अष्टांगनिमित्तश्रुतज्ञानसंयुक्त अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्य चन्द्र ग्रह मेघ पटल को, देख निमित्त लगाते हैं।
तन में तिल व्यञ्जन आदी लख, शुभ या अशुभ बताते हैं।।
हम अंतरिक्ष श्रुतज्ञानी पद, पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
सम्यक् श्रुत हो प्राप्त हमें हम, यही भावना भाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं अंतरिक्षनिमित्तक श्रुतज्ञानसमन्वित अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण रत्न अस्थी आदिक से, भूमि परीक्षण करें मुनीश।
कहें शुभाशुभ चिन्हों द्वारा, उनके चरण झुका मम शीश।।
मुनी निमित्तक श्रुतज्ञानी पद, पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
अब सम्यक् श्रुत हो प्राप्त हमें, हम यही भावना भाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं भौमनिमित्तक श्रुतज्ञानसमन्वित अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर पशु पक्षी के अंगों को, देख शुभाशुभ करते ज्ञान।
रस रुधिरादी देख देह का, करें हिताहित का व्याख्यान।।
अंग निमित्तक श्रुतज्ञानी पद, पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
अब सम्यक् श्रुत हो प्राप्त हमें, हम यही भावना भाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अंगनिमित्तक श्रुतज्ञानसमन्वित अभीक्षणज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर पशु आदिक के शब्दों को, या स्वर सुनकर करते ज्ञान।
कहें शुभाशुभ मुनिवर ज्ञानी, करने वाले यह पहिचान।।
स्वर निमित्त धर श्रुतज्ञानी पद, पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
सम्यक् श्रुत हो प्राप्त हमें, हम यही भावना भाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं स्वरनिमित्तक श्रुतज्ञानसमन्वित अभीक्षणज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में तिल मस्सा आदिक लख, जो भविष्य बतलाते हैं।
जान शुभाशुभ मुनिवर सारा, संकट दूर भगाते हैं।।
हम निमित्तज्ञानी व्यंजन के, पद में अर्घ्य चढ़ाते हैं।
सम्यक् श्रुत हो प्राप्त हमें, हम यही भावना भाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं व्यंजननिमित्तक श्रुतज्ञानसमन्वित अभीक्षणज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्तिक कलश मीन ध्वज आदिक, तन में जो लक्षण पाते।
उनका अवलोकन करके मुनि, पूर्ण शुभाशुभ बतलाते।।
हम लक्षण निमित्तधारी मुनि, के पद अर्घ्य चढ़ाते हैं।
सम्यक् श्रुत हो प्राप्त हमें, हम यही भावना भाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं लक्षणनिमित्तक श्रुतज्ञानसमन्वित अभीक्षणज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्त्राभूषण छिन्न-भिन्न जब, देह के ऊपर हो जाते।
अवलोकन करके मुनिवर जी, काल शुभाशुभ बतलाते।।
छिन्न निमित्तक श्रुतज्ञानी पद, पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
सम्यक् श्रुत हो प्राप्त हमें, हम यही भावना भाते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं छिन्ननिमित्तक श्रुतज्ञानसमन्वित अभीक्षणज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोते समय स्वप्न में कोई, जब विकल्प आ जाते हैं।
उनका अर्थ समझ कर मुनिवर, सुख दुख फल बतलाते हैं।।
स्वप्न निमित्त श्रुतज्ञानी पद, पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
सम्यक् श्रुत हो प्राप्त हमें, हम यही भावना भाते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं स्वप्ननिमित्तक श्रुतज्ञानसमन्वित अभीक्षणज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतरिक्ष अरु औम अंग स्वर, व्यंजन लक्षण जान रहे।
छिन्न स्वप्न यह आठ निमित्तक, के धारी मुनिराज कहे।।
इन निमित्त के धारी मुनि पद, पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
सम्यक् श्रुत हो प्राप्त हमें, हम यही भावना भाते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं अष्टांगनिमित्तक श्रुतज्ञानोत्पादक अभीक्षणज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल टप्पा)

अवधिज्ञान भव प्रत्यय एवं, गुण प्रत्यय गाये।
देशावधि परमावधि सर्वा, वधि भी बतलाये।।
भेद यह जिनवर ने गाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, पूजा को लाए।।13।।

ॐ ह्रीं अवधिज्ञानोत्पादक अभीक्षणज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्गती के जीव प्रथम यह, देशावधि पाये।
द्रव्य क्षेत्र की मर्यादा से, वस्तू दिखलाए।।
भेद यह जिनवर ने गाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, पूजा को लाए।।14।।

ॐ ह्रीं देशावधिज्ञानोत्पादक अभीक्षणज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरम शरीरी परमावधि के, धारी कहलाए।
केवलज्ञान प्राप्त होने तक, मुनिवर जी पाए।।

भेद यह जिनवर ने गाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, पूजा को लाए।।15।।

ॐ ह्रीं परमावधिज्ञानोत्पादक अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वावधी ज्ञान के धारी, मुनिवर कहलाए।
केवलज्ञान प्राप्त होने तक, नहीं छूट पाए।।
भेद यह जिनवर ने गाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, पूजा को लाए।।16।।

ॐ ह्रीं सर्वावधिज्ञानोत्पादक अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान मनःपर्यय के भाई, दो प्रकार गाये।
ऋजुमति है भेद प्रथम जो, सरल विषय पाये।।
भेद यह जिनवर ने गाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, पूजा को लाए।।17।।

ॐ ह्रीं ऋजुमतिमनःपर्ययज्ञानोत्पादक अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

विपुलमति मनःपर्यय भाई, जटिल विषय गाये।
पर के मन की बात ज्ञान में, मुनिवर के आए।।
भेद यह जिनवर ने गाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, पूजा को लाए।।18।।

ॐ ह्रीं विपुलमतिमनःपर्ययज्ञानोत्पादक अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन काल त्रैलोक्यवर्ति जो, द्रव्यें बतलाए।
केवलज्ञानी मूर्तामूर्त सब, तत्त्वों को गाए।।
भेद यह जिनवर ने गाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, पूजा को लाए।।19।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानोत्पादक अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मतिश्रुत अवधि मनःपर्यय यह, छद्म ज्ञान गाए।
क्षायिक केवलज्ञान स्वयं, अरहंत प्रभू पाए।।

भेद यह जिनवर ने गाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, पूजा को लाए।।20।।

ॐ ह्रीं पंचज्ञानभेदसहित अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै नमः।

जयमाला

दोहा– ज्ञान हीन हम हैं प्रभू, फिर भी हैं वाचाल।
अभीक्ष्ण ज्ञान उपयोग की, गाते हम जयमाल।।

(नरेन्द्र छन्द)

सोलह कारण भव्य भावना, भाते हैं जो ज्ञानी।
सम्यक् दृष्टी होते हैं वह, रहे भेद विज्ञानी।।
तीर्थंकर के मुख से निकली, है वाणी जिनवाणी।
अंग बाह्य और अंग प्रविष्टी, रूप कही कल्याणी।।
गणधर ने चारों अनुयोगों, में जिनवाणी गाई।
द्वादशांग श्रुत की जननी शुभ, जिनवाणी कहलाई।।
गुरुमुख से सुनकर पढ़कर के, श्रुत का ज्ञान बढ़ाएँ।
सम्यक् श्रद्धा सहित सुधी जन, श्रुतज्ञानी बन जाएँ।।
स्वाध्याय शुभ कहा परम तप, श्रेष्ठ निर्जरा कारी।
संयम धारण करने वाले, बनें जीव अनगारी।।
सप्त तत्त्व अरु नव पदार्थ का, वर्णन करने वाली।
श्री जिनेन्द्र की वाणी मानो, है अमृत की प्याली।।
अनेकान्तमय वाणी प्यारी, जग-जन की हितकारी।
वस्तु स्वरूप बताने वाली, जग में मंगलकारी।।
ॐकारमय दिव्य ध्वनि शुभ, सप्त भंग मय गाई।
चार कोष के जीव सुनें सब, त्रय गतियों के भाई।।

त्रय मुहूर्त तक त्रि संध्याओं, में जिनवर बिखराए।
चक्री इन्द्र गणेन्द्र के पूछे, शेष समय खिर जाए।।
स्याद्वाद मय परम औषधि, जिनवाणी भव हारी।
भेद ज्ञान प्रगटाने वाली, जन–जन की उपकारी।।
द्रव्य भावश्रुत रूप मनोहर, जिनवाणी शुभ जानो।
परम्परागत आचार्यों ने, लेखन किया है मानो।।
स्वाध्याय कर जिनवाणी का, भेद विज्ञान जगाना।
बनकर अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, आतम शुद्ध बनाना।।
सूत्र ग्रन्थ का अध्ययन भाई, ना अकाल में कीजे।
जो अकाल का समय बताया, भक्ति पाठ में दीजे।।
जैनागम का पठन त्रिकालिक, भव्यों का सुखकारी।
स्वाध्याय होवे सुकाल में, जग जन मंगलकारी।।
श्रुताभ्यास शुभ किया गया जो, विस्मृत भी हो जावे।
जन्मान्तर में या निमित्त कोई, ज्यों का त्यों प्रगटावे।।
इस प्रकार की श्रद्धा पाके, ज्ञानाभ्यास बढ़ाएँ।
विनय सहित जिन गुरु शास्त्रों की, करके विनय कराएँ।।

(धत्ता छन्द)

जय श्रुत अभ्यासी, ज्ञान प्रकाशी, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग धरें।
जय कर्म विनाशी शिवपुर वासी, हो अनन्त सुख भोग करें।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– विशद भाव से जो करें, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग।
अल्प समय में जीव वह, करें मोक्ष सुख भोग।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री संवेग भावना पूजा

स्थापना

इस संसार देह भोगों से, मन में विराग जिनको आवे।
शुभ धर्म और उसके फल में जो, हर्ष भाव भी प्रगटावे।।
संवेग भावना को पाकर, शुभ संयम भाव जगाते हैं।
आह्वानन् करते निज उर में, संवेग भावना भाते हैं।।

दोहा– संवेग भावना की रही, महिमा महति महान।
विशद हृदय में भाव से, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं संवेग भावना ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं संवेग भावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं संवेग भावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छंद)

हम निर्मल नीर चढ़ाएँ, अन्तर की प्यास मिटाएँ।
हे संवेग भावना धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।1।।

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन भव ताप मिटाए, हम यहाँ चढ़ाने लाए।
हे संवेग भावना धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।2।।

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत यह अक्षयकारी, हम चढ़ा रहे मनहारी।
हे संवेग भावना धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।3।।

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भव रोग नशाने आये, यह पुष्प चढ़ाने लाये।
हे संवेग भावना धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।4।।

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाते स्वामी, अब क्षुधा की होवे हानी।
हे संवेग भावना धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।5।।

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन यह दीप जलाते, जो मोह पूर्ण विनशाते।
हे संवेग भावना धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।6।।

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं अष्ट कर्म दुखकारी, नश जाएँ हे अनगारी।
हे संवेग भावना धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।7।।

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवफल की चाह सताए, फल यहाँ चढ़ाने लाए।
हे संवेग भावना धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।8।।

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हैं अनर्घपद दायी, यह अर्घ्य चढ़ाते भाई।
हे संवेग भावना धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।9।।

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– आत्म शांति के हेतु हम, देते शांतीधार।
प्राप्त भाव संवेग हो, पाने शिवपद द्वार।।

शांतये शांतिधारा

पुष्पाञ्जलि करते विशद, भाव जगे संवेग।
मोह महातम नाश हो, जागे हृदय विवेक।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावली

दोहा– है संवेग सुभावना, शिव पद की दातार।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, मिले मोक्ष का द्वार।।

वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(छन्द : जोगीरासा)

यह संसार महाभयकारी, भ्रमण चतुर्गति किया विशेष।
अब संवेग हृदय में जागे, पा जाएँ हम निज स्वदेश।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्गतिसंसारदुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवगती में वैभव देखा, इन्द्रों का तब हुए अधीर।
पाएँ अब संवेग भाव हम, प्रभू बंधाओ हमको धीर।।2।।

ॐ ह्रीं देवगतिजनित दुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वजन और परिजन को पाकर, मोह बढ़ाया अपरम्पार।
प्राप्त करें संवेग भाव हम, नर गति का पा जाएँ सार।।3।।

ॐ ह्रीं मनुष्यगतिजनित दुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरक गती में छेदन भेदन, आदि के बहुदुःख सहे।
हम संवेग भाव बिन जग में, मिथ्याज्ञानी बने रहे।।4।।

ॐ ह्रीं नरकगतिजनित दुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पृथ्वीकायिक बनकर हमने, छेदन भेदन दुख पाये।
अब संवेग भाव जागे प्रभु, शरण आपकी हम आये।।5।।

ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिक दुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल कायिक में तारण तापन, आदि के दुख बहु पाये।
अब संवेग भाव जागे प्रभु, शरण आपकी हम आये।।6।।

ॐ ह्रीं जलकायिक दुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी कायिक में बहुतेरे, दुख पाकर के अकुलाए।
अब संवेग भाव जागे प्रभु, शरण आपकी हम आये।।7।।

ॐ ह्रीं अग्निकायिक दुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पवन झकोरे वायू कायिक, में बनकर के घबड़ाए।
अब संवेग भाव जागे प्रभु, शरण आपकी हम आये।।8।।

ॐ ह्रीं वायुकायिक दुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कटे-फटे रौदें जीवों से, वनस्पति बन दुख पाए।
अब संवेग भाव जागे प्रभु, शरण आपकी हम आये।।9।।

ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिक दुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनन्त निगोद वास कर, जन्म मरण के दुख पाये।
अब संवेग भाव जागे प्रभु, शरण आपकी हम आये।।10।।

ॐ ह्रीं नित्यनिगोद दुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

कृमि आदिक दो इन्द्रिय भाई, पर्याय दुखकारी बहु पाई।
भव सागर से मुक्ती पाएँ, हम संवेग भाव उपजाएँ।।11।।

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रिय जीवदुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन इन्द्रिय बनकर के भाई, चींटी आदिक पर्याय पाई।
भव सागर से मुक्ती पाएँ, हम संवेग भाव उपजाएँ।।12।।

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रिय जीवदुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मच्छर आदिक बनकर प्राणी, बने चार इन्द्रिय अज्ञानी।
भव सागर से मुक्ती पाएँ, हम संवेग भाव उपजाएँ।।13।।

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रिय जीवदुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पशू असैनी बन भटकाए, मन बिन दुःख घोर अति पाए।
भव सागर से मुक्ती पाएँ, हम संवेग भाव उपजाएँ।।14।।

ॐ ह्रीं असंज्ञी जीवदुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचेन्द्रिय पशु बन अकुलाए, वध बन्धन के दुख बहु पाए।
भव सागर से मुक्ती पाएँ, हम संवेग भाव उपजाएँ।।15।।

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियमनुष्यपर्यायजनित दुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म रोग गाया भयकारी, उसको पाकर हुए दुखारी।
भव सागर से मुक्ती पाएँ, हम संवेग भाव उपजाएँ।।16।।

ॐ ह्रीं जन्मरोग दुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मरण रोग से बचा ना कोई, दुखकर यह भी जानो सोई।
भव सागर से मुक्ती पाएँ, हम संवेग भाव उपजाएँ।।17।।

ॐ ह्रीं मरण रोग दुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इष्ट वस्तु ना पावें प्राणी, दुखी होय भारी अज्ञानी।
भव सागर से मुक्ती पाएँ, हम संवेग भाव उपजाएँ।।18।।

ॐ ह्रीं इष्ट वस्तु दुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनिष्ट संयोग रहा दुखदाई, जैनागम यह कहाता भाई।
भव सागर से मुक्ती पाएँ, हम संवेग भाव उपजाएँ।।19।।

ॐ ह्रीं अनिष्ट संयोग जीवदुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग व्याधि तन में हो जावे, जिससे प्राणी अति दुख पावे।
भव सागर से मुक्ती पाएँ, हम संवेग भाव उपजाएँ।।20।।

ॐ ह्रीं रोग-व्याधि जीवदुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्गति में रहके प्राणी, दुखी रहे कहती जिनवाणी।
भव सागर से मुक्ती पाएँ, हम संवेग भाव उपजाएँ।।

ॐ ह्रीं चतुर्गतिदुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **जिनवर के चरणों खड़े, करते हम गुणगान।**
जयमाला गाते यहाँ, है संवेग महान।।

(काव्य छन्द)

काल अनादी से यह प्राणी, सारे जग में भटकाते।
लख चौरासी योनी में कई, दुःख अनेकों जो पाते।।
पुण्ययोग से नरभव पाकर, भोगों में ही बिता रहे।
मैं अरु मेरा की कथनी में, अन्जाने कई कष्ट सहे।।
जिन दर्शन पाने का अवसर, कभी पुण्य से पाते हैं।
जिनवाणी सुनने को प्राणी, महा पुण्य से आते हैं।।
हो सौभाग्य उदय मानव का, साधू के दर्शन पाते।
प्राणी शुभ संवेग भावना, महत पुण्य हो तब भाते।।
नरभव छोड़ स्वर्ग में जाकर, विषय भोग में रम जाते।
वैभव देख इन्द्र का भारी, शांति वहाँ भी ना पाते।।

सम्यक् दर्शन कभी कदाचित्, स्वर्गों में पा जाते हैं।
किन्तू संयम देव लोक में, प्राप्त नहीं कर पाते हैं।।
कभी तिर्यंचों में दुख भोगे, वध बन्धन के कष्ट सहे।
छेदन भेदन मारण तापन, कष्ट कोई न शेष रहे।।
नरक गती के दुखों का वर्णन, करने की सामर्थ्य नहीं।
रहे कोई ना तीन लोक में, कष्ट सहे ना जहाँ कहीं।।
पुण्य उदय आया है मेरा, नाथ आपके द्वार खड़े।
प्रभू आपका दर्शन पाने, भटके कई नर बड़े-बड़े।।
हमने यह संकल्प किया अब, शुद्ध भावना भायेंगे।
विशद हृदय संवेग भाव हम, निश्चित आज जगाएँगे।।
अब संसार दुखों से हे प्रभु, हम भारी घबड़ाए हैं।
भव सागर अब पार उतरने, आप शरण में आए हैं।।
नाथ आपके चरण-शरण कई, भव्य भावना भाते हैं।
निश्चय ही वह कर्म नाशकर, आतम सिद्धी पाते हैं।।
यही सोचकर हम भी स्वामी, द्वार आपके आए हैं।
यह संवेग भाव की पूजा, के सौभाग्य जगाए हैं।।
अर्चा करके हम आतम को, निश्चित शुद्ध बनाएँगे।
'विशद' भाव की परिणति द्वारा, शिव पदवी को पाएँगे।।

दोहा- भाते हैं हम भावना, हृदय जगे संवेग।
जग में रहते एक हम, मोक्ष जाएँगे एक।।

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- हृदय जगे संवेग, हे प्रभु मन के भाव यह।
जाग्रत करो विवेक, संयम के धारी बनें।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री शक्तितस्त्याग भावना पूजा

स्थापना

शक्तितस् शुभ त्याग भावना, भा करके शुभ ज्ञानी जीव।
पूजा करके श्री जिनेन्द्र की, अर्जित करते पुण्य अतीव।।
विशद पुण्य का फल पाके फिर, तीर्थंकर पदवी पाते।
अतः शक्तिशः त्याग भावना, को उर में हम भी ध्याते।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्याग भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं शक्तितस्त्याग भावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं शक्तितस्त्याग भावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छन्द-मोतियादाम)

कराया प्रासुक हमने नीर, पार करने को भव का तीर।
चढ़ाते चरणों में भगवान, मेरा भी हो जाए कल्याण।।1।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिसाया चन्दन यहाँ विशेष, नाश हो भव संताप अशेष।
चढ़ाते चरणों में भगवान, मेरा भी हो जाए कल्याण।।2।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

भराए अक्षत के शुभ थाल, मिले अक्षय पद हमें विशाल।
चढ़ाते चरणों में भगवान, मेरा भी हो जाए कल्याण।।3।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प यह लाए सुगन्धित वास, काम का होवे पूर्ण विनाश।
चढ़ाते चरणों में भगवान, मेरा भी हो जाए कल्याण।।4।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यञ्जन लाये यह रसदार, क्षुधा व्याधी का हो संहार।
चढ़ाते चरणों में भगवान, मेरा भी हो जाए कल्याण।।5।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जलाते दीप में यहाँ कपूर, मोहतम होवे सारा दूर।
चढ़ाते चरणों में भगवान, मेरा भी हो जाए कल्याण।।6।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जलाते अग्नी में हम धूप, प्राप्त हो हमको निज स्वरूप।
चढ़ाते चरणों में भगवान, मेरा भी हो जाए कल्याण।।7।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ फल लाये यह रसदार, मिले अब मोक्ष महल का द्वार।
चढ़ाते चरणों में भगवान, मेरा भी हो जाए कल्याण।।8।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

बनाया अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।
चढ़ाते चरणों में भगवान, मेरा भी हो जाए कल्याण।।9।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– क्षीर सिन्धु का नीर ले, देते शांती धार।
त्याग भावना भा विशद, नाश करें संसार।।

शांतये शांतिधारा

पुष्पाञ्जलि करते विशद, लेकर पुष्प पराग।
त्याग भाव से कर्म की, शीघ्र बुझेगी आग।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावली

दोहा– अर्घ्य चढ़ाते भाव से, मन में भरी उमंग।
त्याग भावना पूजकर, होंगे हम निःसंग।।

वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(छन्द : टप्पा)

जो आहार दान करते हैं, जग में सुखदायी।
परम्परा से उन सब जीवों, ने मुक्ती पाई।।

दान की महिमा शुभगाई।
अतः शक्तिशः त्याग भाव से, दान करो भाई।।1।।

ॐ ह्रीं आहारदानरूप शक्तितस्त्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

औषधि दान जगत जीवों का, रोग हरे भाई।
स्वास्थ्य लाभ पाते हैं जग में, प्राणी सुखदायी।।
दान की महिमा शुभगाई।
अतः शक्तिशः त्याग भाव से, दान करो भाई।।2।।

ॐ ह्रीं औषधिदानरूप शक्तितस्त्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शास्त्र दान की महिमा बन्धू, इस जग में गाई।
कुन्द-कुन्द बनकर ग्वाला ने, पाई प्रभुताई।।
दान की महिमा शुभगाई।
अतः शक्तिशः त्याग भाव से, दान करो भाई।।3।।

ॐ ह्रीं शास्त्रदानरूप शक्तितस्त्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्षा त्रस स्थावर जीवों, की करके भाई।
अभयदान करने वालों ने, शुभ मुक्ती पाई।।
दान की महिमा शुभगाई।
अतः शक्तिशः त्याग भाव से, दान करो भाई।।4।।

ॐ ह्रीं अभयदानरूप शक्तितस्त्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यथा शक्ति यह चार तरह के, दान करो भाई।
यही भावना त्याग शक्तिशः, की पावन गाई।।
दान की महिमा शुभगाई।
अतः शक्तिशः त्याग भाव से, दान करो भाई।।5।।

ॐ ह्रीं चतुःभेदसमन्वित शक्तितस्त्यागभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छंद)

महाव्रती मुनिवर अनगार, हिंसा त्यागें दया विचार।
त्याग धर्म पाले जिनसंत, बनते मुक्ति वधू के कंत।।6।।

ॐ ह्रीं हिंसा शक्तितस्त्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झूठ वचन ना कहें मुनीश, चाहे कट जाये यह शीश।
त्याग धर्म पाले जिनसंत, बनते मुक्ति वधू के कंत।।7।।

ॐ ह्रीं असत्य शक्तितस्त्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परवस्तु को लोष्ठ समान, जाने चोरी तजे प्रधान।
त्याग धर्म पाले जिनसंत, बनते मुक्ति वधू के कंत।।8।।

ॐ ह्रीं चोरी शक्तितस्त्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर नर पशू अचेतन नार, करें संत जिसका परिहार।
त्याग धर्म पाले जिनसंत, बनते मुक्ति वधू के कंत।।9।।

ॐ ह्रीं कुशील शक्तितस्त्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह त्यागें भली प्रकार, मुनिवर होते हैं अविकार।
त्याग धर्म पाले जिनसंत, बनते मुक्ति वधू के कंत।।10।।

ॐ ह्रीं परिग्रह शक्तितस्त्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें ममत्व का तन से त्याग, शिवपद से जिनको अनुराग।
त्याग धर्म पाले जिनसंत, बनते मुक्ति वधू के कंत।।11।।

ॐ ह्रीं तनममत्व शक्तितस्त्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राज सम्पदा आदिक भोग, मान छोड़ते जिसको योग।
त्याग धर्म पाले जिनसंत, बनते मुक्ति वधू के कंत।।12।।

ॐ ह्रीं राजममत्व शक्तितस्त्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दान बताया चार प्रकार, त्याग भावना उर में धार।
त्याग धर्म पाले जिनसंत, बनते मुक्ति वधू के कंत।।13।।

ॐ ह्रीं सर्वशक्तितस्त्यागभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै नमः।

जयमाला

दोहा– त्याग भावना शक्तिशः भाएँ सभी त्रिकाल।
शिवपथ के राही बनें, गाकर के जयमाल।।

चौपाई

उत्तम त्याग धर्म शुभकारी, जिसको धारें मुनि अविकारी।
त्याग योग्य संसार बताया, मुक्ती पथ जिसने अपनाया।।1।।
हाथी घोड़ा गाड़ी जानो, सेना रथ आदिक पहिचानो।
इत्यादिक में ममता त्यागें, मोक्ष मार्ग में जो जन लागें।।2।।
त्यागें राज्य पाठ दुखदायी, क्षेत्रादिक भी त्यागें भाई।
स्वजन और परिजन भी त्यागें, करके क्षमा सभी से माँगें।।3।।
अरति भाव न मन में लावें, समता भाव हृदय उपजावें।
क्रोध मान माया के त्यागी, रत्नत्रय के हों अनुरागी।।4।।
राग द्वेष भय लोभ न धारे, ऐसे त्यागी गुरु हमारे।
रौद्र ध्यान करते न भाई, मद मत्सर त्यागें दुखदायी।।5।।
हास्यादिक सब तजने वाले, धर्म ध्यान जो हृदय सम्हाले।
वीतराग मय व्रत के धारी, अरति भाव त्यागी अविकारी।।6।।
क्षेत्र वास्तु धन–धान्य कहाए, दासी दास स्वर्ण भी गाए।
रजत भाण्ड अरु कपड़े जानो, बाह्य परिग्रह यह दश मानो।।7।।
क्रोधादिक हैं चार कषाएँ, नो कषाय भी साथ में पाएँ।
मिथ्यात्व सहित ये चौदह गाए, अभ्यन्तर यह संग कहाए।।8।।
बाह्याभ्यन्तर परिग्रह त्यागी, होते हैं अर्हत् गुणभागी।
हम भी उनको मन से ध्याते, उनके चरणों प्रीति जगाते।।9।।
त्यागी हम भी कब बन जाएँ, मन से यही भावना भाएँ।
उत्तम त्याग धर्म को पाएँ, 'विशद' गुणों को हम उपजाएँ।।10।।

दोहा– त्याग धर्म की लोक में, महिमा अगम अपार।
त्यागी बनकर जीव सब, होते भव से पार।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– त्याग धर्म को प्राप्त कर, प्राणी बनते सिद्ध।
अविचल अविनाशी बनें, तीनों लोक प्रसिद्ध।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री शक्तितस्तपो भावना पूजा

स्थापना

शक्तितस्तप श्रेष्ठ भावना, भाते हैं जो जीव विशेष।
पुण्योदय आने पर वह सब, स्वयं आप बनते तीर्थेश।।
भव्य भावना सोलह कारण, सारे जग में महति महान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते हैं हम भी आह्वान।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(भुजंग प्रयात्)

गरम कूप का नीर झारी भराएँ, प्रभु आपके पाद धारा कराएँ।
सुतप शक्तितस् भावना के हो धारी, करो पार भव से हे धर्माधिकारी।।1।।
ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनायै जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन कपूरादि केसर घिसाए, चढ़ाते प्रभु पाद संताप जाए।
सुतप शक्तितस् भावना के हो धारी, करो पार भव से हे धर्माधिकारी।।2।।
ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनायै संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल फैन सम श्वेत तन्दुल धुवाए, अक्षय सुपद श्रेष्ठ पूजा से पाए।
सुतप शक्तितस् भावना के हो धारी, करो पार भव से हे धर्माधिकारी।।3।।
ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनायै अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुमन श्रेष्ठ सुरभित सुगन्धित चढ़ाएँ, विषय वासना काम की अब नशाएँ।
सुतप शक्तितस् भावना के हो धारी, करो पार भव से हे धर्माधिकारी।।4।।
ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनायै कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस श्रेष्ठ नैवेद्य घृत के बनाए, क्षुधा रोग नाशें जो पूजा रचाएँ।
सुतप शक्तितस् भावना के हो धारी, करो पार भव से हे धर्माधिकारी।।5।।
ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनायै क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक जलाके जो जयमाल गाए, अमर दीप की ज्योति मानव जलाए।
सुतप शक्तितस् भावना के हो धारी, करो पार भव से हे धर्माधिकारी।।6।।
ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनायै मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में शुभ धूप सुरभित जलाए, कर्मों की सेना वह क्षण में नशाए।
सुतप शक्तितस् भावना के हो धारी, करो पार भव से हे धर्माधिकारी।।7।।
ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम श्रीफल से पूजा रचाए, परम मोक्ष पद श्रेष्ठ मानव वह पाए।
सुतप शक्तितस् भावना के हो धारी, करो पार भव से हे धर्माधिकारी।।8।।
ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनायै मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दनादि वसू द्रव्य लाए, पायेगा शिवपद जो नत हो चढ़ाए।
सुतप शक्तितस् भावना के हो धारी, करो पार भव से हे धर्माधिकारी।।9।।
ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनायै अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **शांतीधारा के लिए, भक्त खड़े कर जोर।**
तप चर्या सद् साधना, होवे चारों ओर।।
शांतये शांतिधारा

पुष्पों से पुष्पाञ्जलि, करने आए आज।
शक्तितस्तप भावना, भाए सकल समाज।।
पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावली

दोहा- **कर्म निर्जरा सुतप से, होती अपरम्पार।**
तप धारी का शीघ्र ही, नश जाता संसार।।
वलयोपरि परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(चौपाई)

विषय कषाय तजें आहार, अनशन तप है मंगलकार।
उत्तम एक वर्ष का जान, भेद कई इसके पहिचान।।1।।
ॐ ह्रीं अनशनतपरूप शक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन भूख से जो कम खाय, यह ऊनोदर तप कहलाय ।
तप कर कर्म निर्जरा पाय, अनुक्रम से नर शिवपुर जाय ।।2।।
ॐ ह्रीं ऊनोदरतपरूप शक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मन में सोच विधि कर जाय, मिले तभी वह भोजन पाय ।
तप यह जानो व्रत संख्यान, मुनिवर तप यह करें महान् ।।3।।
ॐ ह्रीं व्रतपरिसंख्यानतपरूप शक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
रस त्यागें शक्ती अनुसार, विषयों का करने परिहार ।
तप कहलाये रस परित्याग, इसमें रखना तुम अनुराग ।।4।।
ॐ ह्रीं रसपरित्यागतपरूप शक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
भूमी पाटा हो या घास, शांत रहें न होंय उदास ।
प्रासुक शुभ शय्या को पाय, विविक्त शय्यासन तप कहलाय ।।5।।
ॐ ह्रीं विविक्तशय्यासनतपरूप शक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
विषयों की तजकर के आस, सहकर क्लेश देह से खास ।
काय क्लेश यह तप कहलाए, कभी नहीं मन में घबड़ाय ।।6।।
ॐ ह्रीं कायक्लेशतपरूप शक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जो प्रमाद से लागे दोष, दूषण तज होवें निर्दोष ।
करें प्रार्थना गुरू के पास, प्रायश्चित्त मैटे संताप ।।7।।
ॐ ह्रीं प्रायश्चिततपरूप शक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
देव शास्त्र गुरूवर के द्वार, अतिशय सिद्ध क्षेत्र उर धार ।
इनकी विनय करे गुण गान, विनय सुतप हो उन्हें महान् ।।8।।
ॐ ह्रीं विनयतपरूप शक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्मोदय से होवे रोग, खेद का हो जावे संयोग ।
वह बाधा करने को दूर, वैय्यावृत्ती हो भरपूर ।।9।।
ॐ ह्रीं वैय्यावृत्तितपरूप शक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिनवर की वाणी को पाय, हर्ष भाव से सुनें सुनाय।
स्वाध्याय ये तप कहलाय, तपकर प्राणी कर्म नशाय ।।10।।

ॐ ह्रीं स्वाध्यायतपरूप शक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जो ममत्व का करते त्याग, तन से न रखते हैं राग ।
तप धारें प्राणी व्युत्सर्ग, कर्म नाश पावें अपवर्ग ।।11।।
ॐ ह्रीं व्युत्सर्गतपरूप शक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जो एकाग्र चित्त हो जाय, परमेष्ठी का ध्यान लगाय ।
ध्यान सुतप पाके हर्षाय, कर्म निर्जरा कर शिव पाय ।।12।।
ॐ ह्रीं ध्यानतपरूप शक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

जिन गुण सम्पत्ती व्रत धारी, त्रेसठ करता है उपवास ।
भिन्न-भिन्न तिथियों में करके, विषयों से जो रहे उदास ।।13।।
ॐ ह्रीं जिनगुणसम्पत्तितपरूप शक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्म क्षपण के हेतू तप यह, करते विनय भाव के साथ ।
अल्प समय में भव्य जीव वह, बनते सिद्ध श्री के नाथ ।।14।।
ॐ ह्रीं कर्मक्षपणतपरूप शक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्म दहन व्रत के तप जानो, एक सौ अड़तालिस उपवास ।
भिन्न-भिन्न विधियों में करके, विषयों से जो रहें उदास ।।15।।
ॐ ह्रीं कर्मदहनतपरूप शक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सिंह निष्क्रीडन व्रत में क्रमशः, क्रमशः बढ़के हों उपवास ।
पन्द्रह दिन में हीन करें फिर, मध्य पारणा होवे खास ।।
बत्तिस करें पारणा भाई, एक सौ पैंतालिस उपवास ।
यह उत्तम तप करने वाले, विषयों से नित रहें उदास ।।16।।
ॐ ह्रीं सिंहनिष्क्रीडिततपरूप शक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्रेष्ठ सर्वतोभद्र सुतप के, पचहत्तर होते उपवास ।
करें पारणा पच्चिस भाई, विषयों में जो रहें उदास ।।
कर्म निर्जरा करने को तप, करते विनय भाव के साथ ।
अल्प समय में भव्य जीव, वह बनते सिद्ध श्री के नाथ ।।17।।

ॐ ह्रीं सर्वतोभद्र तपो धर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महासर्वतोभद्र सुतप में, एक सौ छियानवे कर उपवास ।
करें पारणा उनन्चास दिन, विषयों की न जिसको आस ।।
दो सौ पैंतालिस दिन का व्रत, ये करके जिन विधि के साथ ।
अल्प समय में भव्य जीव वह, बनते सिद्ध श्री के नाथ ।।18।।

ॐ ह्रीं महासर्वतोभद्रतपरूप शक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लघु सिंहनिष्क्रीडन व्रत के, साठ बताए हैं उपवास ।
बीस पारणा करके अस्सी, दिन का होता है व्रत खास।।
कर्म निर्जरा करने को तप, करते विनय भाव के साथ ।
अल्प समय में भव्य जीव वह, बनते सिद्ध श्री के नाथ ।।19।।

ॐ ह्रीं लघुनिष्क्रीडिततपरूप शक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तावलि व्रत में चौंतिस दिन, पच्चिस होते हैं उपवास ।
नव दिन करें पारणा भाई, विषयों से भी रहें उदास ।।
कर्म निर्जरा करने को तप, करते विनय भाव के साथ ।
अल्प समय में भव्य जीव वह, बनते सिद्ध श्री के नाथ ।।20।।

ॐ ह्रीं मुक्तावलितपरूप शक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कनकावलि व्रत में प्रति महिने, होते हैं छह-छह उपवास ।
एक वर्ष में करें बहत्तर, विषयों की तज कर के आस ।।
कर्म निर्जरा करने को तप, करते विनय भाव के साथ ।
अल्प समय में भव्य जीव वह, बनते सिद्ध श्री के नाथ ।।21।।

ॐ ह्रीं कनकावलितपरूप शक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होते है आचाम्ल सुतप में, सौ दिन के भाई उपवास ।
उन्नीस करे पारणा उसमें, एक सौ उन्नीस दिन के खास ।।
कर्म निर्जरा करने को तप, करते विनय भाव के साथ ।
अल्प समय में भव्य जीव वह, बनते सिद्ध श्री के नाथ ।।22।।

ॐ ह्रीं आचाम्लतपरूप शक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबिस दिन के करें पारणा, चौबिस ही होते उपवास ।
श्रेष्ठ सुदर्शन व्रत में भाई, तप करते तज जग की आस ।।
कर्म निर्जरा करने को तप, करते विनय भाव के साथ ।
अल्प समय में भव्य जीव वह, बनते सिद्ध श्री के नाथ ।।23।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनतपरूप शक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक वर्ष का तप होता है, उत्तम जिन शासन में खास ।
भेद अन्य कई तप व्रत के हैं, विषयों की तजना है आस ।।
कर्म निर्जरा करने को तप, करते विनय भाव के साथ ।
अल्प समय में भव्य जीव वह, बनते सिद्ध श्री के नाथ ।।24।।

ॐ ह्रीं उत्कृष्टतपरूप शक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप के भेद बताए द्वादश, व्रत भी होते कई प्रकार ।
कर्म नाशकर उत्तम तप से, प्राणी हो जाते भव पार ।।
कर्म निर्जरा करने को तप, करते विनय भाव के साथ ।
अल्प समय में भव्य जीव वह, बनते सिद्ध श्री के नाथ ।।

ॐ ह्रीं सर्वउत्तम तपरूप शक्तितस्तपोभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनायै नमः।

जयमाला

दोहा- सोना तप से शुद्ध हो, तप से होता लाल ।
शक्तितस् तप भावना, की गाते जयमाल ।।

(शम्भू छन्द)

इच्छाओं का रोध कहा तप, समीचीन हो भली प्रकार ।
बाह्य सुतप के भेद कहे छह, श्री जिनवाणी के अनुसार ।।
अनशन ऊनोदर तप जानो, और कहा व्रत परिसंख्यान ।
रस परित्याग विविक्त शय्याशन, काय क्लेश तप रहा महान् ।।1।।

भेद कहे छह अभ्यन्तर के, प्रायश्चित्त अरु विनय विवेक ।
व्युत्सर्ग वैय्यावृत्ती अरु, ध्यान सुतप है सबसे नेक ।।
नर जीवन का सार सुतप है, जिसको धारें ज्ञानी जीव ।
सम्यक् तप कर कर्म निर्जरा, क्षण में होती श्रेष्ठ अतीव ।।2।।
जो भी अब तक सिद्ध हुए हैं, सबने तप को पाया है ।
उत्तम तप करके संतों ने, मुक्ती पथ अपनाया है ।।
स्वजन और परिजन हैं तप ही, सुतप जीव का मित्र कहा ।
सुतप धर्म कहलाए जग में, सुतप श्रेष्ठ चारित्र रहा ।।3।।
तप इस जग में सुखदायी है, तप है शिव नगरी का द्वार ।
तप है पावन तीर्थ जगत में, तप जीवों का तारणहार ।।
महापुरुष तप धारण करते, धार सकें न कायर लोग ।
अविचल तप करने वालों को, मिलता मुक्ति वधु का योग ।।4।।
तप से आसन दृढ़ होता है, प्राणी सहते काय क्लेश ।
ज्ञान ध्यान करते हैं प्राणी, सम्यक् तप से यहाँ विशेष ।।
इन्द्रिय मन भी वश में होवे, भाते तपसी को न भोग ।
बनते हैं शुभ भाव जीव के, तप से होता शुद्धोपयोग ।।5।।

(अडिल्ल छन्द)

सम्यक् तप ही नर जीवन का सार है, सम्यक् तप बिन जीवन यह बेकार है ।
आतम करता पावन परम पवित्र है, तप ही सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्र है ।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छन्द)

'विशद' योग से सम्यक् तप को धारिए, मानव जीवन का शुभ सार विचारिए ।
शिवरमणी के बनते तप से कंत हैं, उत्तम तप धारी होते जिन संत हैं ।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री साधुसमाधि भावना पूजा

स्थापना

साधु समाधि भव्य भावना, भाते हैं जो महति महान।
होता है कल्याण उन्हीं का, करते जो उनका गुणगान।।
विशद भाव से आह्वानन् कर, करते साधू पद अर्चन।
तीन योग से गुरुचरणों में, करते हम शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधि भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं साधुसमाधि भावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं साधुसमाधि भावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(विष्णुपद छंद)

जन्म मरण से मुक्ती पाने, चरणों जल लाए।
अनन्त काल से राग आग में, हम जलते आए।।
साधु समाधि विशद भावना, भाव सहित भाते।
देव शास्त्र गुरु के चरणाम्बुज, में हम सिर नाते।।1।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन से अनुपम सुरभि हम, पाने को आए।
भवाताप से तप्त हुए अब, चन्दन हम लाए।।
साधु समाधि विशद भावना, भाव सहित भाते।
देव शास्त्र गुरु के चरणाम्बुज, में हम सिर नाते।।2।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद को वरण करें हम, चाह रहे स्वामी।
स्वात्म प्रदेश असंख्य हमारे, अक्षत हैं नामी।।
साधु समाधि विशद भावना, भाव सहित भाते।
देव शास्त्र गुरु के चरणाम्बुज, में हम सिर नाते।।3।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुमन अनेक खिले उपवन में, वह भी मुरझाते।
ज्ञानोपवन के सुमन हमेशा, चेतन महकाते।।

साधु समाधि विशद भावना, भाव सहित भाते।
देव शास्त्र गुरु के चरणाम्बुज, में हम सिर नाते।।4।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानामृत भोजन के द्वारा, क्षुधा रोग जाए।
ले नैवेद्य चरण में स्वामी, आज यहाँ आए।।
साधु समाधि विशद भावना, भाव सहित भाते।
देव शास्त्र गुरु के चरणाम्बुज, में हम सिर नाते।।5।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहतिमिर के नाश हेतु यह, दीपक प्रजलाए।
चेतन गृह में हो प्रवेश प्रभु, द्वारे पर आए।।
साधु समाधि विशद भावना, भाव सहित भाते।
देव शास्त्र गुरु के चरणाम्बुज, में हम सिर नाते।।6।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वरूप को जान कर्म के, नाश हेतु आए।
अग्नी में यह धूप सुगन्धित, प्रजलाने लाए।।
साधु समाधि विशद भावना, भाव सहित भाते।
देव शास्त्र गुरु के चरणाम्बुज, में हम सिर नाते।।7।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

करके भी पुरुषार्थ अनेकों, शिवफल ना पाए।
मोक्ष महाफल पाने को हम, फल चरणों लाए।।
साधु समाधि विशद भावना, भाव सहित भाते।
देव शास्त्र गुरु के चरणाम्बुज, में हम सिर नाते।।8।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

परद्रव्यों की कीमत जानी, निज से अन्जाने।
अर्घ्य चढ़ाते आज यहां पर, पद अनर्घ्य पाने।।
साधु समाधि विशद भावना, भाव सहित भाते।
देव शास्त्र गुरु के चरणाम्बुज, में हम सिर नाते।।9।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– दिव्य भानु सम रूप है, जिन शासन के दीप।
शांती धारा दे रहे, हे प्रभु चरण समीप।।

शांतये शांतिधारा

भक्ति भाव से भक्त यह, आए चरण के दास।
पुष्पाञ्जलि करते चरण, करना नहीं उदास।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावली

दोहा– साधु समाधि भावना, भाते हे जिननाथ।
मोक्ष मार्ग पर हम बढ़ें, सदा निभाना साथ।।

वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(शम्भू छंद)

भेद पाँच निर्ग्रन्थ मुनी के, प्रथम पुलाक मुनी जानो।
उत्तर गुण के भाव रहित गुण, मूल में दोष सहित मानो।।
साधु समाधि विशद भावना, मुनि श्रेष्ठ शुभ भाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बना हम, मुनि के चरण चढ़ाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं पुलाकमुनि साधुसमाधिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वकुश मुनी निर्दोष मूल गुण, पालें आगम के अनुसार।
कभी कदाचित राग भाव से, ग्रहण करें उपकरणाहार।।
साधु समाधि विशद भावना, मुनि श्रेष्ठ शुभ भाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बना हम, मुनि के चरण चढ़ाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं वकुशमुनि साधुसमाधिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कषाय कुशील प्रति सेवन धारी, हैं कुशील मुनि के यह भेद।
सूक्ष्म कषायवान उत्तर गुण, में दोषों का करते खेद।।
साधु समाधि विशद भावना, मुनि श्रेष्ठ शुभ भाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बना हम, मुनि के चरण चढ़ाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं कुशीलमुनि साधुसमाधिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौथे हैं निर्ग्रन्थ मुनीश्वर, मोह कर्म का नाश करें।
क्षीण मोह के धारी निज का, आतम ज्ञान प्रकाश करें।।
साधु समाधि विशद भावना, मुनि श्रेष्ठ शुभ भाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बना हम, मुनि के चरण चढ़ाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं निर्ग्रन्थमुनि साधुसमाधिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम भेद रहा स्नातक, होते जो केवलज्ञानी।
दिव्य देशना जिनकी पावन, जन-जन की है कल्याणी।।
साधु समाधि विशद भावना, मुनि श्रेष्ठ शुभ भाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बना हम, मुनि के चरण चढ़ाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं स्नातकमुनि साधुसमाधिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच भेद निर्ग्रन्थ साधुओं, के बतलाए हैं तीर्थेश।
मोक्ष मार्ग के राही हैं जो, धारण करें दिगम्बर भेष।।
साधु समाधि विशद भावना, मुनि श्रेष्ठ शुभ भाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बना हम, मुनि के चरण चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं पंचभेदयुतमुनि साधुसमाधिभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै नमः।

जयमाला

दोहा- काटेंगे हम कर्म का, फैला जो जंजाल।
साधु समाधि भावना, की गाते जयमाल।।

(चौपाई)

साधु समाधि धरे जो प्राणी, है विराग की यही निशानी।
पञ्च महाव्रत धारे ज्ञानी, पञ्च समीति धर विज्ञानी।।
पञ्चेन्द्रिय जय करके भाई, आवश्यक पाले सुखदायी।
सप्त शेष गुण के भी धारी, मुनिवर होते हैं अनगारी।।

दशों दिशाएँ जिनकी अम्बर, नहीं साथ कुछ भी आडम्बर।
मुक्ती पथ के हैं जो राही, परम दिगम्बर मुद्रा शाही।।
ग्रीष्म ऋतु पर्वत पर स्वामी, ध्यान लगाते शिवपथगामी।
शीत में सरिता तट पर जाते, ध्यान में अपना समय बिताते।।
वर्षा ऋतु तरुतल में भाई, आत्म ध्यान करते शिवदायी।
द्वादश तप जो तपने वाले, साधु जग में रहे निराले।।
ऋद्धीधारी ऋषी कहाते, मौन रहें मुनिवर कहलाते।
शिव का यत्न करें यति भाई, संग रहित अनगार कहाई।।
संघ चतुर्विध ऐसा जानो, व्रत धारी होता है मानो।
मुनी आर्यिका श्रावक भाई, और श्राविकाएँ कहलाईं।।
मुनिव्रत धार नहीं जो पावें, वह श्रावक के व्रत अपनावें।
देव-शास्त्र-गुरु के श्रद्धानी, वैय्यावृत्ती करते ज्ञानी।।
कर्त्तव्यों का पालन करते, अपनी कर्म कालिमा हरते।
साधु समाधि के अनुरागी, हो जाते प्राणी बड़भागी।।
योगी साधु समाधि पाते, हम भी विशद भावना भाते।
साधु शरण को हम भी पाएँ, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ।।
पावन रत्नत्रय को पाएँ, शिव के हम राही बन जाएँ।
होय भावना पूर्ण हमारी, हे जिन तीन भुवन के धारी।।

दोहा- साधु समाधि भावना, है समाधि दातार।
शिवपथ राही जीव को, बने श्रेष्ठ आधार।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- साधु समाधि वे धरें, होते जो अनगार।
जो उनकी सेवा करें, उनका हो उद्धार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री वैय्यावृत्त्य भावना पूजा

स्थापना

मुनियों की आहार विधि का, रखना पूरा पूरा ध्यान।
शीत उष्ण की बाधाओं या, चर्या श्रम या होय थकान।।
साधु साधना में बाधाओं, का करना भाई प्रतिकार।
वैय्यावृत्ती कही भावना, जैन धर्म आगम अनुसार।।

दोहा– सेवा मुनियों की करें, उनका हो उत्थान।
वैय्यावृत्ती भावना, का करना आह्वान।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्यकरणभावना ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं वैय्यावृत्यकरणभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं वैय्यावृत्यकरणभावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौबोला छंद)

द्रव्य नित्य रहता अविनाशी, बनती मिटती पर्यायें।
भेद ज्ञान बिन जीव भटकते, जन्म धरें मृत्यु पायें।।
वैय्यावृत्ती श्रेष्ठ भावना, भाते हैं जो जग के जीव।
सेवा करके जिन मुनियों की, प्राप्त करें वह पुण्य अतीव।।1।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्तिभावनायै जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन जैसा लगे हृदय में, यदि निज में उपयोग रहे।
भवाताप का हो विनाश उर, ज्ञान की सरिता श्रेष्ठ बहे।।
वैय्यावृत्ती श्रेष्ठ भावना, भाते हैं जो जग के जीव।
सेवा करके जिन मुनियों की, प्राप्त करें वह पुण्य अतीव।।2।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्तिभावनायै संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

नाशवान द्रव्यों के पीछे अक्षय श्रद्धा को खोया।
नश्वर विषयों की आशा में, बीज कर्म का ही बोया।।
वैय्यावृत्ती श्रेष्ठ भावना, भाते हैं जो जग के जीव।
सेवा करके जिन मुनियों की, प्राप्त करें वह पुण्य अतीव।।3।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्तिभावनायै अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

विषयभोग के दावानल में, आत्म ब्रह्म गुण नाश किया।
धन्य अखण्ड ब्रह्म व्रतधारी, निज स्वरूप में वास किया।।
वैय्यावृत्ती श्रेष्ठ भावना, भाते हैं जो जग के जीव।
सेवा करके जिन मुनियों की, प्राप्त करें वह पुण्य अतीव।।4।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्तिभावनायै कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह वशी हो जड़ पदार्थ का, भोग अनन्तों बार किया।
क्षुधा शांत ना हुई कर्म का, भार स्वयं के माथ लिया।।
वैय्यावृत्ती श्रेष्ठ भावना, भाते हैं जो जग के जीव।
सेवा करके जिन मुनियों की, प्राप्त करें वह पुण्य अतीव।।5।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्तिभावनायै क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह पतंगे नाश हेतु प्रभु, ज्ञान दीप प्रजलाते हैं।
शिवपथ के राही बनने को, नाथ शरण हम आते हैं।।
वैय्यावृत्ती श्रेष्ठ भावना, भाते हैं जो जग के जीव।
सेवा करके जिन मुनियों की, प्राप्त करें वह पुण्य अतीव।।6।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्तिभावनायै मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

रहा पाप का उदय हमारा, पर द्रव्यों को अपनाया।
मायाजाल विशद कर्मों का, नहीं समझ हमने पाया।।
वैय्यावृत्ती श्रेष्ठ भावना, भाते हैं जो जग के जीव।
सेवा करके जिन मुनियों की, प्राप्त करें वह पुण्य अतीव।।7।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्तिभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादिक कर्म फलों का, वेदन हम करते आये।
आज प्रबल पुण्योदय आया, तव पद श्रद्धा फल लाए।।
वैय्यावृत्ती श्रेष्ठ भावना, भाते हैं जो जग के जीव।
सेवा करके जिन मुनियों की, प्राप्त करें वह पुण्य अतीव।।8।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्तिभावनायै मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों की अभिलाषा जागी, अर्घ्य अनेक चढ़ाए हैं।
पद अनर्घ्य पाने हे भगवन् !, द्वार आपके आए हैं।।

वैय्यावृत्ती श्रेष्ठ भावना, भाते हैं जो जग के जीव।
सेवा करके जिन मुनियों की, प्राप्त करें वह पुण्य अतीव ।।9।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्तिभावनायै अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सुमति प्रकाशी आप हैं, पूर्ण ज्ञान भण्डार।
शांती धारा दे रहे, पद पाएँ अविकार ।।

शांतये शांतिधारा

प्रगटाएँ निज गुण प्रभो !, करें दोष परिहार।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, होय आत्म उद्धार ।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावली

दोहा– वैय्यावृत्ती भावना, भाते हो अविकार।
पुष्पाञ्जलि करके विशद, पाने पद अनगार ।।

वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(विष्णुपद छन्द)

छत्तिस मूल गुणों के धारी, 'जैनाचार्य' कहे।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, गुरुवर श्रेष्ठ रहे ।।
इनकी वैय्यावृत्ती करना, है शिव फलदायी।
विशद भाव से वैय्यावृत्ती, करो श्रेष्ठ भाई ।।1।।

ॐ ह्रीं आचार्य वैय्यावृत्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पच्चिस मूल गुणों के धारी, 'उपाध्याय' गाये।
जैनागम का पाठ सिखाते, पाठक कहलाए ।।
इनकी वैय्यावृत्ती करना, है शिव फलदायी।
विशद भाव से वैय्यावृत्ती, करो श्रेष्ठ भाई ।।2।।

ॐ ह्रीं उपाध्याय वैय्यावृत्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्धर तपधारी मुनिवर हैं, जग मंगलकारी।
जिनकी सेवा अर्चा होती, जग में शुभकारी ।।

इनकी वैय्यावृत्ती करना, है शिव फलदायी।
विशद भाव से वैय्यावृत्ती, करो श्रेष्ठ भाई ।।3।।

ॐ ह्रीं तपस्वीमुनि वैय्यावृत्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षा ग्रहण करें जो यतिवर, 'शैक्ष्य' कहे जाते।
उनकी सेवा करने का फल, प्राणी शुभ पाते ।।
इनकी वैय्यावृत्ती करना, है शिव फलदायी।
विशद भाव से वैय्यावृत्ती, करो श्रेष्ठ भाई ।।4।।

ॐ ह्रीं शैक्ष्यमुनि वैय्यावृत्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोगी साधू को 'ग्लान', आगम में बतलाया।
औषधि दान समान सुफल शुभ, सेवा का गाया ।।
इनकी वैय्यावृत्ती करना, है शिव फलदायी।
विशद भाव से वैय्यावृत्ती, करो श्रेष्ठ भाई ।।5।।

ॐ ह्रीं ग्लानमुनि वैय्यावृत्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण दीक्षा में श्रेष्ठ साधु को, 'गण' कहते भाई।
उनकी सेवा करना अनुपम, मुनियों ने गाई ।।
इनकी वैय्यावृत्ती करना, है शिव फलदायी।
विशद भाव से वैय्यावृत्ती, करो श्रेष्ठ भाई ।।6।।

ॐ ह्रीं गणभेदयुतमुनि वैय्यावृत्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा विधि ज्ञाता मुनियों की, परम्परा जानो।
उनकी सेवा भक्ती है 'कुल', भाई पहिचानो ।।
इनकी वैय्यावृत्ती करना, है शिव फलदायी।
विशद भाव से वैय्यावृत्ती, करो श्रेष्ठ भाई ।।7।।

ॐ ह्रीं कुलभेदयुतमुनि वैय्यावृत्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'संघ चतुर्विध' मुनियों का शुभ, है समूह प्यारा।
सत्य अहिंसा परम धर्म का, देते जो नारा ।।
इनकी वैय्यावृत्ती करना, है शिव फलदायी।
विशद भाव से वैय्यावृत्ती, करो श्रेष्ठ भाई ।।8।।

ॐ ह्रीं चतुर्विधसंघ वैय्यावृत्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुत ज्येष्ठ मुनियों की सेवा, करना सुखदायी।
'साधु' संघ शुभ कहा मनोहर, जग मंगलदायी।।
इनकी वैय्यावृत्ती करना, है शिव फलदायी।
विशद भाव से वैय्यावृत्ती, करो श्रेष्ठ भाई।।9।।

ॐ ह्रीं साधुभेदयुतमुनि वैय्यावृत्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन्हें देख हर्षित हों प्राणी, ऐसे मुनि ज्ञानी।
सेवा करना मुनि 'मनोज्ञ' की, जग जन कल्याणी।।
इनकी वैय्यावृत्ती करना, है शिव फलदायी।
विशद भाव से वैय्यावृत्ती, करो श्रेष्ठ भाई।।10।।

ॐ ह्रीं मनोज्ञभेदयुतमुनि वैय्यावृत्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद कहे दश यह मुनियों के, भविजन सुखकारी।
मोक्ष मार्ग के राही हैं जो, अनुपम शुभकारी।।
इनकी वैय्यावृत्ती करना, है शिव फलदायी।
विशद भाव से वैय्यावृत्ती, करो श्रेष्ठ भाई।।

ॐ ह्रीं दशभेदयुक्तमुनि वैय्यावृत्तिभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं वैय्यावृत्तिभावनायै नमः।

जयमाला

दोहा– सर्व व्रतों में श्रेष्ठ है, वैय्यावृत्ती महान।
गुणमाला गाते यहाँ, पाने मुक्ति स्थान।।

(वेसरी छन्द)

वैय्यावृत्ति धरम है प्यारा, भवि जीवों का तारण हारा।
वैय्यावृत्त करें जो प्राणी, वे हों मुक्ती पद के स्वामी।।
मुनियों के दर पे जो जावें, उनकी बाधा दूर हटावें।
वैय्यावृत्ति धरम है प्यारा, भवि जीवों का तारण हारा।।1।।

वैय्यावृत्ति कही सुखकारी, भवदधि से जो तारणहारी।
वैय्यावृत्ती धरम है प्यारा, भवि जीवों का तारण हारा।।2।।
बीज धर्म का जिसको गाया, मूलधर्म का जो बतलाया।
वैय्यावृत्ति धरम है प्यारा, भवि जीवों का तारण हारा।।3।।
वैय्यावृत्ती भूषण प्यारा, इस भव वन से तारणहारा।
वैय्यावृत्ति धरम है प्यारा, भवि जीवों का तारण हारा।।4।।
वैय्यावृत्ती दोष निवारी, जन–जन का है जो उपकारी।
वैय्यावृत्ति धरम है प्यारा, भवि जीवों का तारण हारा।।5।।
रागाग्नि को नीर कहाया, लाज ढके वह चीर बताया।
वैय्यावृत्ति धरम है प्यारा, भवि जीवों का तारण हारा।।6।।
वैर विनाशी जिसको गाया, वैय्यावृत्ती तप कहलाया।
वैय्यावृत्ति धरम है प्यारा, भवि जीवों का तारण हारा।।7।।
वैय्यावृत्ती करने जावे, वह जीवन में पुण्य कमावे।
वैय्यावृत्ति धरम है प्यारा, भवि जीवों का तारण हारा।।8।।
वैय्यावृत्ती करने जावे, वह जीवन में पुण्य कमावे।
वैय्यावृत्ति धरम है प्यारा, भवि जीवों का तारण हारा।।9।।
वैय्यावृत्ती दोष विनाशी, धर्म कहा है जो अविनाशी।
वैय्यावृत्ति धरम है प्यारा, भवि जीवों का तारण हारा।।10।।
वैय्यावृत्त लोक में प्यारा, जिसने जग को दिया सहारा।
वैय्यावृत्ति धरम है प्यारा, भवि जीवों का तारण हारा।।11।।
वैय्यावृत्ती करते ज्ञानी, जन–जन की है जो कल्याणी।
वैय्यावृत्ति धरम है प्यारा, भवि जीवों का तारण हारा।।12।।

दोहा– वैय्यावृत्ती भावना, में गुण रहे अनेक।
वन्दन मुनियों के चरण, करते माथा टेक।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्तिभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– यह तन विष की बेल है, फिर भी शिव का द्वार।
वैय्यावृत्ती धर मुनी, पद वन्दन शत बार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री अर्हद्भक्ति भावना पूजा

स्थापना

अनन्त चतुष्टय प्रातिहार्य वसु, अतिशय चौंतिस पाते हैं।
दोष अठारह लगे अनादिक, जिनको आप नशाते हैं।।
छियालिस मूलगुणों के धारी, अर्हत् होते जगत महान।
अर्हत् भक्ति भावना भाते, उर में हम करते आह्वान्।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्ति भावना ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल–टप्पा)

जिन पूजो हो भाई सभी मिल पूजो हो भाई।
अर्हत् भक्ति भावना पावन, पूजो हो भाई।।
क्षीर सिन्धु का उज्ज्वल जल ले, मणिमय झारी लीजे।
जन्म जरादिक रोग नाश को, त्रय धारा शुभ कीजे।।
अर्हत् भक्ति भावना भाने, श्री जिन चरण में आये।
तीन योग से श्री जिनके पद, सादर शीश झुकाए।।
हे जिन पूजो हो भाई.... ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज में जब उपयोग रहे तो, चन्दन जैसा लगता।
भव संताप विनाश होय जब, विशद ज्ञान उर जगता।।
जिन पूजो हो भाई सभी मिल पूजो हो भाई।
अर्हत् भक्ति भावना पावन, पूजो हो भाई।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर तन को मीत बनाके, भव–भव में दुख पाए।
प्रकट होय अक्षय पद भाई, आतम ध्यान लगाए।।

जिन पूजो हो भाई सभी मिल पूजो हो भाई।
अर्हत् भक्ति भावना पावन, पूजो हो भाई।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भोग सुहाने लगते हैं पर, हैं भारी दुखदायी।
कामबाण विध्वंश होय शुभ, ब्रह्मचर्य से भाई।।
अर्हत् भक्ति भावना भाने, श्री जिन चरण में आये।
तीन योग से श्री जिनके पद, सादर शीश झुकाए।।
जिन पूजो हो भाई सभी मिल पूजो हो भाई।
अर्हत् भक्ति भावना पावन, पूजो हो भाई।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तन के रोग विनाश हेतु कई, कई उपचार कराए।
क्षुधा रोग ना मिटा हमारा, निशदिन व्यञ्जन खाए।।
जिन पूजो हो भाई सभी मिल पूजो हो भाई।
अर्हत् भक्ति भावना पावन, पूजो हो भाई।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण ज्ञान का दीप जले तो, मोह पतंगे भागे।
दर्श किए हे नाथ आपके, ज्ञान हृदय में जागे।।
जिन पूजो हो भाई सभी मिल पूजो हो भाई।
अर्हत् भक्ति भावना पावन, पूजो हो भाई।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

रागद्वेष होते विकार यह, आज समझ में आया।
कर्मनाश हो प्रभू आपका, हमने दर्शन पाया।।
जिन पूजो हो भाई सभी मिल पूजो हो भाई।
अर्हत् भक्ति भावना पावन, पूजो हो भाई।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भी कार्य करे ये मानव, फल की इच्छा रखते।
मुक्ती फल हो जिनपूजा से, उसको कभी ना लखते।।
जिन पूजो हो भाई सभी मिल पूजो हो भाई।
अर्हत् भक्ति भावना पावन, पूजो हो भाई।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ जब तक ना पाए, तव पद में नित जाएँ।
विशद भाव के सुमन चरण में, नितप्रति आन चढ़ाएँ।।
जिन पूजो हो भाई सभी मिल पूजो हो भाई।
अर्हत् भक्ति भावना पावन, पूजो हो भाई।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– दिव्य आपका रूप है, दिव्य रहा शुभ ज्ञान।
शांती धारा कर जगे, वीतराग विज्ञान।। *शांतये शांतिधारा*

वाणी पावन आपकी, पावन अनुपम काय।
दर्श आपका कर विशद, तन–मन मम हर्षाये।। *पुष्पांजलिं क्षिपेत्*

अर्घ्यावली

दोहा– तेज पुञ्ज ज्योती परम, जग उन्नायक नाथ।
स्वयंबुद्ध हे नाथ तव, चरण झुकाते माथ।।

वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(शम्भू छन्द)

प्रातिहार्य है शोक निवारी, तरु अशोक कहलाता है।
रत्नों से सज्जित है अनुपम, सबके मन को भाता है।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होते अपरम्पार।
समवशरण में श्री जिनेन्द्र के, चरणों वन्दन बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्षप्रातिहार्यसहित अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र पुष्प वृष्टी करते हैं, समवशरण में अतिशयकार।
मन मोहक शुभ गंध फैलती, चतुर्दिशा में विस्मयकार।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होते अपरम्पार।
समवशरण में श्री जिनेन्द्र के, चरणों वन्दन बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यसहित अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की दिव्य देशना अनुपम, सब भाषा मय मंगलकार।
ॐकार मय प्रहसित होती, चतुर्दिशा में बारम्बार।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होते अपरम्पार।
समवशरण में श्री जिनेन्द्र के, चरणों वन्दन बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिप्रातिहार्यसहित अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ चँवर ढौरते अतिशय, यक्ष खड़े हो द्वार महान्।
अतिशय महिमा दिखलाते हैं, नमन् करें करके गुणगान।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होते अपरम्पार।
समवशरण में श्री जिनेन्द्र के, चरणों वन्दन बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं चामरप्रातिहार्यसहित अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न जड़ित सिंहासन सुन्दर, मन को मोहित करे अहा।
अधर विराजे जिस पर श्री जिन, जैनागम में यही कहा।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होते अपरम्पार।
समवशरण में श्री जिनेन्द्र के, चरणों वन्दन बारम्बार।।5।।

ॐ ह्रीं सिंहासनप्रातिहार्यसहित अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भामण्डल की महिमा अनुपम, अतिशयकारी रहा महान।
सप्त भवों का दिग्दर्शक है, जिसका कौन करे गुणगान।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होते अपरम्पार।
समवशरण में श्री जिनेन्द्र के, चरणों वन्दन बारम्बार।।6।।

ॐ ह्रीं भामण्डलप्रातिहार्यसहित अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन को आह्लादित करती है, देव दुन्दुभि अतिशयकार ।
करती है गुणगान प्रभू का, जड़ होकर भी श्रेष्ठ अपार ।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होते अपरम्पार ।
समवशरण में श्री जिनेन्द्र के, चरणों वन्दन बारम्बार ।।7।।

ॐ ह्रीं दुन्दुभिप्रातिहार्यसहित अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शाते छत्रत्रय प्रभुता, श्री जिनेन्द्र की महिमावन्त ।
तीन लोक के अधिनायक प्रभु, तीर्थंकर हैं यह भगवंत ।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होते अपरम्पार ।
समवशरण में श्री जिनेन्द्र के, चरणों वन्दन बारम्बार ।।8।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयप्रातिहार्यसहित अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय

(चौपाई)

कर्म दर्शनावरणी नाशे, दर्शन गुण जिन प्रभु प्रकाशे।
देखे सर्व चराचर सारा, निज स्वरूप को निज में धारा।।
जिन तीर्थंकर केवलज्ञानी, जिनकी वाणी जग कल्याणी।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अनंतदर्शनगुण प्राप्त अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो निज आतम ज्ञान जगावें, केवलज्ञान स्वयं प्रगटावें।
सर्व चराचर को वह जाने, पर वस्तु को पहिचाने।।
जिन तीर्थंकर केवलज्ञानी, जिनकी वाणी जग कल्याणी।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।10।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानगुण प्राप्त अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह कर्म जग में दुखदायी, वह विनाश हो जावे भाई।
गुण सम्यक्त्व प्रकट हो जावे, सुख अनन्त प्राणी यह पावें।।

जिन तीर्थंकर केवलज्ञानी, जिनकी वाणी जग कल्याणी।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।11।।

ॐ ह्रीं अनन्तसुखप्राप्त अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाधाओं ने डाला डेरा, अन्तराय ने हमको घेरा।
हे अनन्त शक्ती के धारी, मेटो विपदा शीघ्र हमारी।।
जिन तीर्थंकर केवलज्ञानी, जिनकी वाणी जग कल्याणी।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।12।।

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यगुणप्राप्त अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– अर्हत् भक्ती भावना, जग में रही महान।
अर्हत् गुणभागी बनें, हे जिनेन्द्र भगवान।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै नमः।

जयमाला

दोहा– अर्हत् तीनों लोक में, होते पूज्य त्रिकाल।
अर्हत् भक्ती भावना, की गाते जयमाल।।

(पद्धरि छंद)

जय–जय तीर्थंकर महादेव, तव चरणों की मैं करूँ सेव।
बहु पूर्व पुण्य का उदय पाय, तीर्थंकर पद पाते जिनाय।।
शुभ रत्नवृष्टि करते सुरेन्द्र, अर्चा करते पद में शतेन्द्र।
महिमा का जिनकी नहीं पार, है अतिशयकारी कई प्रकार।।
प्रभु प्रकट किए कैवल्यज्ञान, पाते हैं जिन प्रभु से कल्याण।
जिनके गुण होते हैं अपार, छियालीस मूलगुण लिए धार।।
हो समवशरण जिन का महान्, पद वंदन करते देव आन।
दश जन्म के अतिशय हैं विशेष, पाते स्वभावतः जो जिनेश।।

दश केवलज्ञान के कहे देव, जो ज्ञान प्रकट होते सदैव।
चौदह अतिशय मिल करें देव, करते जिनवर की भक्ति एव।।
वसु प्रातिहार्य होते अनूप, प्रभु चरणों में आ झुकें भूप।
भक्ति करते हैं बार–बार, नत होकर करते नमस्कार।।
जिनकी महिमा का नहीं पार, जो हैं भक्तों के कण्ठहार।
हों भरत क्षेत्र में जिन त्रिकाल, जिन की गुण गाथा है विशाल।।
जिनवर विदेह में कहे बीस, जो विद्यमान हैं जिन मुनीश।
हों एक सौ साठ कोई काल पाय, ऐसा वर्णन करते जिनाय।।
है तीर्थंकर का पद महान्, जिनका करते हम भव्य ध्यान।
हम जिन चरणों की करें सेव, जो हैं मेरे आराध्य एव।।
अंतिम है मेरी यही चाह, पा जाएँ हम भी यही राह।
भवसागर का मिल जाय पार, नर जीवन का बस यही सार।।
अक्षय सुख में हो जाय वास, तव चरणों में मम् लगी आश।
मम् आशा होवे पूर्ण नाथ, हम विनती करते जोड़ हाथ।।
दो मोक्षमार्ग में प्रभो साथ, तव चरणों में मम् झुका माथ।
हम विनती करते हे जिनेश !, हों कर्म नाश मेरे अशेष।।

छंद–घत्तानंद

जय–जय जिन स्वामी, अंतर्यामी, तीर्थंकर पद के धारी।
मुक्ती पथगामी, त्रिभुवन नामी, मोक्षमहल के अधिकारी।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– तीर्थंकर जिनदेव, अनंत चतुष्टय प्राप्त हैं।
पूजा करूँ सदैव, 'विशद' भाव से श्रेष्ठतम्।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री आचार्यभक्ति भावना पूजा

स्थापना

पञ्चाचार का पालन करते, वह आचार्य कहाते हैं।
शिवपथ के राही जो अनुपम, आगे बढ़ते जाते हैं।।
जैनाचार्य की भक्ती करना, है आचार्य भक्ति पावन।
हृदय कमल में करते हैं हम, विशद भाव से आह्वानन्।।

दोहा– शिक्षा दीक्षा दे करें, भव्यों का कल्याण।
ऐसे जैनाचार्य का, करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति भावना ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति भावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं।
ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति भावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

हम चतुर्गति में भटके हैं, दर्शन करने को तरस रहे।
चरणों में जगह मिले स्वामी, सुख सौम्य चरण तव बरस रहे।।
जन्मादिक रोग नशाने को, यह नीर कलश भर लाए हैं।
आचार्य चरण की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पंच पाप में फँसे रहे, आतम हित कुछ ना काम किया।
मन वायु वेग सा है चंचल, क्षणभर को ना विश्राम लिया।।
संसार दाह का कर विनाश, शीतलता पाने आये हैं।
आचार्य चरण की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

वैभव की मन में चाह नहीं, ना राज्य सम्पदा की आशा।
रत्नत्रय शुभ वैभव पाएँ, मन की मेरी है अभिलाषा।।
हम अक्षय पद के अभिलाषी, अक्षय पद पाने आये हैं।
आचार्य चरण की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मधुरस अधरों से पीकर के, विषयों का सेवन बहुत किया।
सुख की चाहत में मोहित हो, अगणित पापों का बोझ लिया।।
चरणों में सुमन समर्पित कर, चेतन गुण पाने आये हैं।
आचार्य चरण की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन कई भोग किए हमने, पर क्षुधा रोग ना मिट पाया।
भोगों की आशा में व्याकुल, होकर के जग में भटकाया।।
अब क्षुधा रोग शमन हेतु, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।
आचार्य चरण की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपों की लड़ियों के द्वारा, संसार तिमिर हट जाता है।
अज्ञान तिमिर जो छाया अति, वह भव-भव भ्रमण कराता है।
निज गुण की लड़ियों का प्रकाश, भरने को दीपक लाए हैं।
आचार्य चरण की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वह धन्य सुअवसर आयेगा, जब मुक्ति रमा को पाएँगे।
कर्मों की काली निशा पूर्ण, तप से हम पूर्ण नशाएँगे।।
ले धूप सुगन्धित हाथों में, हम यहाँ जलाने लाए हैं।
आचार्य चरण की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अखिल विश्व के फल अर्पित कर, भी शिव फल ना मिल पाया।
मम् शिव मन्दिर में हो निवास, यह भक्त शरण पाने आया।।
अब सुख दुख झूलों का विनाश, करने को फल यह लाए हैं।
आचार्य चरण की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

है राह कंटकाकीर्ण मेरी, निष्कंटक करने को आए।
आकुलता मन की हो विनाश, यह भाव बनाकर के आए।।
हम पद अनर्घ पाने हेतू, यह अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
आचार्य चरण की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तुम आलोकित लोक में, परमेष्ठी आचार्य।
शांती पाने के लिए, ध्याते जग के आर्य।।

शांतये शांतिधारा

निज स्वभाव में रमण हो, प्रगटे निज स्वभाव।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, मैटो सकल विभाव।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावली

दोहा- दाता हे शिवमार्ग के, रहे पूर्ण श्रद्धान।
तव पूजा करके मेरा, हो जाए कल्याण।।

वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(शम्भू छंद)

द्वादश तप को धार मुनीश्वर, आचार्य प्रवर कहलाते हैं।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, विशद धर्म बतलाते हैं।।
व्रत उपवास किया करते हैं, 'अनशन' तप को धरते हैं।
धन्य-धन्य आचार्य हमारे, सबके मन को हरते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अनशनतपयुत आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छप्पन भोग सामने पाकर, त्याग स्वयं करते जाते।
नियमित भोजन की तुलना में, लघु भोजन करके आते।।
खाने से न चेतन चलता, मन विषयों में अटक रहा।
'अवमौदर्य सुव्रत' के धारी, जैनाचार्य को विशद कहा।।2।।

ॐ ह्रीं अवमौदर्यतपयुत आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चर्या को जब निकलें गुरुवर, धार प्रतिज्ञा चलते हैं।
नहीं किसी को कुछ बतलाते, निज स्वरूप में ढलते हैं।।
तीर्थंकर अवतारी गुरुवर, 'व्रतपरिसंख्यान' को पाते हैं।
वसु कर्मों से छूट सकें हम, विशद भावना भाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं व्रतपरिसंख्यानतपयुत आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डू पेड़ा बर्फी आदिक, श्रावक रोज बनाते हैं।
चीनी दूध और घी रस से, जो छुटकारा पाते हैं।।
'रस परित्याग' का पालन करते, ऐसे गुरुवर श्रेष्ठ ऋशीष।
तव पदवी को पाने हेतु, चरण झुकाएँ अपना शीश।।4।।

ॐ ह्रीं रसपरित्यागतपयुत आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के वश होकर गुरुवर, कठिन परीषह तुम सहते।
शय्या टेढ़ी-मेढ़ी हो फिर, खुश होकर उसमें रहते।।
'विविक्त शय्यासन' के धारी गुरु, आचार्य कहाते गुणकारी।
विशद गुणों को हम पा जाएँ, तव पद वंदन शुभकारी।।5।।

ॐ ह्रीं विविक्तशय्यासनतपयुत आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्दी गर्मी वर्षा में तुम, कष्ट अनेकों सहते हो।
तन से हो निर्लिप्त गुरूवर, समता में रत रहते हो।।
कर्म निर्जरा करने वाले, 'काय क्लेश' तप पाते हैं।
मोक्षमार्ग पर चलें हमेशा, यही भावना भाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं कायक्लेशतपयुत आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खाने-पीने सोने चलने, में यदि कोई हुआ हो दोष।
मिथ्या हो वह दोष हमारा, व्रतमय जीवन हो निर्दोष।।
'प्रायश्चित्त' करके दोषों का, मुनिवर करते हैं वारण।
मुक्ती पथ के राही अनुपम, बंधू जग के निष्कारण।।7।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित्ततपयुत आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन ज्ञान चरित उपचारिक, 'विनय' सुतप कहलाता है।
सम्यक्दृष्टी जीव विनय तप, अंतरंग यह पाता है।।

विनय सहित साधर्मी जग में, नित सम्मान को पाते हैं।
आचार्यश्री के चरण कमल से, सत् संयम अपनाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं विनयतपयुत आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग शोक से थके हुए हों, बने हुए हैं जो मुनिवर।
सेवा 'वैय्यावृत्ती' करके, पुण्य कार्य करते ऋषिवर।।
विशद ज्ञान को पाकर तुमने, दूर किया उनका क्रंदन।
तव चरणों की धूली से गुरु, हो जाए माटी चंदन।।9।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्यतपयुत आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंतन मंथन लेखन द्वारा, स्वाध्याय जो करते हैं।
सम्यक्ज्ञान जगा करके गुरु, शुभ भावों से रहते हैं।।
'स्वाध्याय' है ज्ञान सरोवर, भव की बाधा हरता है।
भव बंधन से छुटकारा दे, शिव सुख में जो धरता है।।10।।

ॐ ह्रीं स्वाध्यायतपयुत आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग की माया त्याग किए हैं, क्षमामूर्ति कहलाते हैं।
ज्ञान ध्यान में लीन ऋषीश्वर, धर्म ध्वजा फहराते हैं।।
तप 'व्युत्सर्ग' को पाने वाले, मुक्ति वधु को पाते हैं।
चरण शरण में आने वाले, सादर शीश झुकाते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गतपयुत आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्त्त रौद्र परिणाम छोड़कर, करते हैं नित धर्म ध्यान।
परमेष्ठी को हृदय सजाकर, करें नित्य उनका गुणगान।।
'ध्यान' सुतप को पाने वाले, होते परमेष्ठी आचार्य।
पञ्चाचार प्राप्त करते हैं, गुरुवर से इस जग के आर्य।।12।।

ॐ ह्रीं ध्यानतपयुत आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दस धर्मधारी आचार्य *(शंभू छंद)*

घोर उपद्रव सहने वाले, क्रोध कभी न करते हैं।
सुख दुख में समता पाकर के, 'क्षमा धर्म' को धरते हैं।।

जैनाचार्य कहाने वाले, विशद ज्ञान बिखराते हैं।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, सत् श्रद्धान जगाते हैं।।13।।
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ज्ञानी होकर भी ना मानी, 'मार्दव धर्म' के धारी हैं।
गर्व किसी से जो ना करते, जग में करुणाकारी हैं।।
जैनाचार्य कहाने वाले, विशद ज्ञान बिखराते हैं।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, सत् श्रद्धान जगाते हैं।।14।।
ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मन में कुटिल भाव आवे तो, क्षण में दूर भगाते हैं।
मायाचारी कभी न करते, 'आर्जव धर्म' को ध्याते हैं।।
जैनाचार्य कहाने वाले, विशद ज्ञान बिखराते हैं।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, सत् श्रद्धान जगाते हैं।।15।।
ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शुचि तन पाकर विभू बने हो, नहीं लोभ का नाम निशान।
'शौच धर्म' को पाने वाले, करते हैं निज का कल्याण।।
जैनाचार्य कहाने वाले, विशद ज्ञान बिखराते हैं।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, सत् श्रद्धान जगाते हैं।।16।।
ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सत्य धर्म की छाँव तले वह, दुख से न भय खाते हैं।
नहीं कभी वह झूठ बोलते, 'सत्य वचन' अपनाते हैं।।
जैनाचार्य कहाने वाले, विशद ज्ञान बिखराते हैं।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, सत् श्रद्धान जगाते हैं।।17।।
ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
रत्नत्रय को पाकर गुरुवर, निज का ध्यान लगाते हैं।
'संयम' को अपनाने वाले, स्वर्ग मोक्ष सुख पाते हैं।।
जैनाचार्य कहाने वाले, विशद ज्ञान बिखराते हैं।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, सत् श्रद्धान जगाते हैं।।18।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ध्यान अग्नि से 'तप' के द्वारा, कर्मों का वन जला रहे।
निज उत्कर्ष बढ़ाते गुरुवर !, प्रवचन वक्ता प्रखर कहे।।
जैनाचार्य कहाने वाले, विशद ज्ञान बिखराते हैं।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, सत् श्रद्धान जगाते हैं।।19।।
ॐ ह्रीं उत्तमतपधर्मसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
परम विशुद्धी के धारी हैं, 'त्याग' धर्म अपनाते हैं।
रत्नत्रय की निधि पाने को, मन में बहु अकुलाते हैं।।
जैनाचार्य कहाने वाले, विशद ज्ञान बिखराते हैं।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, सत् श्रद्धान जगाते हैं।।20।।
ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
परिग्रह चौबिस भेद जानकर, उनसे आप विरक्त कहे।
'आकिंचन' व्रतधार मुनीश्वर, शिव से नाता जोड़ रहे।।
जैनाचार्य कहाने वाले, विशद ज्ञान बिखराते हैं।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, सत् श्रद्धान जगाते हैं।।21।।
ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचन्यधर्मसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
विशद गुणों के रत्नाकर हैं, गुण अनेक जिनने पाये।
विशद धर्म को पाने हेतु, 'ब्रह्मचर्य व्रत' अपनाये।।
जैनाचार्य कहाने वाले, विशद ज्ञान बिखराते हैं।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, सत् श्रद्धान जगाते हैं।।22।।
ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन गुप्ति

मन के सभी शुभाशुभ मुनिवर, रोका करते पूर्व विकार।
मन गुप्ती के धारी अनुपम, संत दिगम्बर हैं मनहार।।
'मनगुप्ति' के धारी मुनि की, महिमा कही है अपरम्पार।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाकर, वंदन करते हम शत् बार।।23।।
ॐ ह्रीं मनोगुप्तिसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असत् वचन जो नहीं बोलते, सत्य का भी करते परिहार।
जिह्वा इन्द्रिय को वश करके, मौन का लेते हैं आधार।।
'वचनगुप्ति' के धारी मुनि की, महिमा कही है अपरम्पार।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाकर, वंदन करते हम शत् बार।।24।।

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन की चेष्टाएँ जो रोकें , करते हैं स्थिर आसन।
होते ना आधीन किसी के, करते हैं निज पर शासन।।
'कायगुप्ति' के धारी मुनि की, महिमा कही है अपरम्पार।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाकर, वंदन करते हम शत् बार।।25।।

ॐ ह्रीं कायगुप्तिसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचाचार *(शंभू छंद)*

जीव अजीवादिक तत्त्वों पर, करते हैं जो 'सत् श्रद्धान'।
क्रोधादिक को तजने वाले, बनते हैं जो सिद्ध समान।।
तीन योग से विशद चरण में, अपना शीश झुकाते हैं।
पंचम गति को पाने हेतू, चरणों अर्घ्य चढ़ाते हैं।।26।।

ॐ ह्रीं दर्शनाचारसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संशय विभ्रम अरु विमोह का, करने वाले हैं संहार।
सम्यक्ज्ञानी बनकर गुरुवर, पालन करते 'ज्ञानाचार'।।
तीन योग से विशद चरण में, अपना शीश झुकाते हैं।
पंचम गति को पाने हेतू, चरणों अर्घ्य चढ़ाते हैं।।27।।

ॐ ह्रीं ज्ञानाचारसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच महाव्रत समिति गुप्ति त्रय, तेरह विधि चारित्र कहा।
यह 'चारित्राचार' पालना, गुरुवर का शुभ लक्ष्य रहा।।
तीन योग से विशद चरण में, अपना शीश झुकाते हैं।
पंचम गति को पाने हेतू, चरणों अर्घ्य चढ़ाते हैं।।28।।

ॐ ह्रीं चारित्राचारसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतरंग बहिरंग तपों को, पाल रहे शक्ति अनुसार।
'तपाचार' को धारण करके, करते विषयों का संहार।।

तीन योग से विशद चरण में, अपना शीश झुकाते हैं।
पंचम गति को पाने हेतू, चरणों अर्घ्य चढ़ाते हैं।।29।।

ॐ ह्रीं तपाचारसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज शक्ती को नहीं छिपाकर, पाल रहे हैं 'वीर्याचार'।
कर्म नाश करने को हरपल, करें साधना कई प्रकार।।
तीन योग से विशद चरण में, अपना शीश झुकाते हैं।
पंचम गति को पाने हेतू, चरणों अर्घ्य चढ़ाते हैं।।30।।

ॐ ह्रीं वीर्याचारसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छः आवश्यक कर्त्तव्य *(शंभू छंद)*

'समता' रंग से रमे हुए हैं, नहीं राग ना द्वेष ना मान।
रत्नत्रय का पालन करके, करते हैं जग का कल्याण।।
पंचाचार परायण गुरुवर, करते कर्मों से संग्राम।
मन-वच-तन से चरण कमल में, मेरा बारम्बार प्रणाम।।31।।

ॐ ह्रीं सामायिक आवश्यकसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का सम्बन्ध नशाने, करें 'वंदना' कई प्रकार।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य गुणों को, पाने करें दोष परिहार।।
पंचाचार परायण गुरुवर, करते कर्मों से संग्राम।
मन-वच-तन से चरण कमल में, मेरा बारम्बार प्रणाम।।32।।

ॐ ह्रीं वंदना आवश्यकसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तत्त्वों का चिंतन मंथन कर, जिन की 'स्तुति' करते हैं।
मोक्ष मार्ग के नेता बनकर, कर्म कालिमा हरते हैं।।
पंचाचार परायण गुरुवर, करते कर्मों से संग्राम।
मन-वच-तन से चरण कमल में, मेरा बारम्बार प्रणाम।।33।।

ॐ ह्रीं स्तव आवश्यकसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संत दिगम्बर बनकर के जो, आत्म साधना नित्य करें।
अहोरात्रि के दोषों को नित, 'प्रतिक्रमण' कर पूर्ण हरें।।
पंचाचार परायण गुरुवर, करते कर्मों से संग्राम।
मन-वच-तन से चरण कमल में, मेरा बारम्बार प्रणाम।।34।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमण आवश्यकसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व–पर के कल्याण हेतु शुभ, मोक्ष मार्ग को लक्ष्य किया।
'प्रत्याख्यान' करें मुनिवर जी, सर्व परिग्रह त्याग दिया।।
पंचाचार परायण गुरुवर, करते कर्मों से संग्राम।
मन–वच–तन से चरण कमल में, मेरा बारम्बार प्रणाम।।35।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान आवश्यकसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ योगों के द्वारा ही वह, योगी 'विशद' कहाते हैं।
निश्चल होकर मन ही मन में, 'कायोत्सर्ग' लगाते हैं।।
पंचाचार परायण गुरुवर, करते कर्मों से संग्राम।
मन–वच–तन से चरण कमल में, मेरा बारम्बार प्रणाम।।36।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग आवश्यकसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– परमेष्ठी आचार्य शुभ, पाले गुण छत्तीस।
उनके चरणों हम 'विशद', झुका रहे हैं शीश।।

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणसंयुक्त आचार्यभक्तिभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै नमः।

जयमाला

दोहा– आचार्य भक्ती भावना, जग में रही महान।
'विशद' भाव से हम यहाँ, करते हैं गुणगान।।

(दोहा छंद)

जिनवर की स्तुति करूँ, गुरुवर का गुणगान।
गुरुवर ही जिनवर मेरे, गुरुवर ही भगवान।।
धन्य–धन्य हो तुम मुनि, छोड़ दिया घर बार।
भाई–बहन माता–पिता, धन–दौलत परिवार।।
द्वादश तपते ये सुतप, काया से न मोह।
मुश्किल घड़ियों में कभी, करते हैं न क्षोभ।।
खड़े–खड़े आहार लें, पैदल करें विहार।
पर से नाता छोड़कर, निज को रहे निहार।।

पंच महाव्रत धार गुरु, तीन रतन करतार।
निज आतम में झूलते, करते निज उपकार।।
रागद्वेष सब दूर हैं, रखते ये न बैर।
निज आतम के बाग में, करते हैं नित सैर।।
भेद ज्ञान की ज्योति है, शुद्धात्मा शुभकार।
क्षण–क्षण अंतर हो मुखी, निज में करें विहार।।
स्वाध्याय यह नित करें, करते आतम ध्यान।
निर्विकल्प हरदम रहें, प्रभु चरणों विश्राम।।
वन उपवन सब एक है, इनको कुछ न चाह।
सिद्ध शिला अब लक्ष्य है, चलते सम्यक् राह।।
शांत सौम्य मूरत भली, हित–मित–प्रिय, सदवाक्।
रत्नाकर हैं ज्ञान के, धर्म के हैं सरताज।।
योगी–राज से महामुनि, वर्द्धमान सा रूप।
अंदर–बाहर शुद्ध हैं, लखते आत्म स्वरूप।।
भव सागर लंबा बहुत, जाना है उस पार।
गुरुवर के आशीष से, हो जाएँ भव पार।।
भटक–भटक कर थक गए, अब चाहें विश्राम।
गुरुवर ही पहुँचाएँगे, हमको तो निजधाम।।
गुरुवर का तप देखकर, भाव जगा यह आज।
द्वादश तप को धारकर, संत बनूँ ऋषिराज।।

दोहा– चरण शरण के भक्त की, भक्ति फले अविराम।
मुक्ती पाने को 'विशद', करते चरण प्रणाम।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– शांती मिले विशेष, पूजा कर आचार्य की।
रहे कोई न शेष, दुख दरिद्र सब दूर हों।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री बहुश्रुत भक्ति पूजा

स्थापना

भव्य भावना बहुश्रुत भक्ती, भाने वाले जग के जीव।
तीर्थंकर प्रकृति का कारण, पुण्य प्राप्त शुभ करें अतीव।।
द्वादशांग श्रुत पूरब धारी, होते जग में महति महान।
पूजन करने हृदय कमल पर, करते हैं हम भी आह्वान।।

दोहा- रत्नत्रय के कोष हैं, सम्यक् ज्ञान प्रवीण।
उपाध्याय की भक्ति में, रहे सदा हम तीन।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(वीर छंद)

हे जिन तुम जल से निर्मल प्रभु, अमल श्रेष्ठ हो अविकारी।
हो सम्यक् ज्ञान जलोदधि तुम, मिथ्यात्व के हो तुम परिहारी।।
हे ज्ञान पयोनिधि चरण आपके, पावन नीर समर्पित है।
बहुश्रुत भक्ती श्रेष्ठ भावना, भाने तन-मन अर्पित है।।1।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चन्द्र वदन चंदन सम अनुपम, चन्द्र किरण से सुखकारी।
हे पाप निकन्दन भव हर वन्दन, तुम हो सचमुच भवहारी।।
यह मलयागिर चन्दन चरणाम्बुज, में हे नाथ समर्पित है।
बहुश्रुत भक्ती श्रेष्ठ भावना, भाने तन-मन अर्पित है।।2।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम अक्षयपुर के वासी हे जिन !, हम तेरे विश्वासी हैं।
शुभ शिवपद शाश्वत रहा अनादी, उसके हम प्रत्याशी हैं।।
हम अक्षय पद के अभिलाषी यह, अक्षत चरण समर्पित हैं।
बहुश्रुत भक्ती श्रेष्ठ भावना, भाने तन-मन अर्पित है।।3।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित शुभ ज्ञान सुमन में हे प्रभु, राग द्वेष दुर्गन्ध नहीं।
चेतन चिन्मय है अविनाशी, तन से इसका सम्बन्ध नहीं।।
अन्तर्वास सुवासित करने, सुरभित पुष्प समर्पित हैं।
बहुश्रुत भक्ती श्रेष्ठ भावना, भाने तन-मन अर्पित है।।4।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आनन्दामृत के सागर में, नीरस जड़ता का काम नहीं।
जब तक ना क्षुधा रोग मिटता, तब तक लेंगे विश्राम नहीं।।
चिर तृप्ति प्रदायी यह व्यंजन, चरणों में नाथ समर्पित हैं।
बहुश्रुत भक्ती श्रेष्ठ भावना, भाने तन-मन अर्पित है।।5।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विज्ञान भवन के हे अधिपति, तुम लोकालोक प्रकाशक हो।
कैवल्य रवि के ज्योति पुञ्ज, प्रभु मोह महातम नाशक हो।।
निज अन्तर मम आलौकित हो, यह दीपक चरण समर्पित है।
बहुश्रुत भक्ती श्रेष्ठ भावना, भाने तन-मन अर्पित है।।6।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दुख की ज्वाला जलती भारी, उड़ रहा धूम नभ गलियों में।
अज्ञानतमावृत चेतन यह, फँस रहा मोह रंग रलियों में।।
यह लगे अनादी कर्म जलें, अग्नी में धूप समर्पित है।
बहुश्रुत भक्ती श्रेष्ठ भावना, भाने तन-मन अर्पित है।।7।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य सदन के आंगन में, शुभ अशुभ वृत्ति का रेला है।
संसार पार पर्यायों के, निश्चित सिद्धों का मेला है।।
फल पूजा में तेरी स्वामी, पावन यह श्रेष्ठ समर्पित हैं।
बहुश्रुत भक्ती श्रेष्ठ भावना, भाने तन-मन अर्पित है।।8।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल जल गंध धवल अक्षत, यह पुष्प चरू शुभ दीप जले।
है धूप दशांगी फल अनुपम, वसु द्रव्यों के यह अर्घ्य मिले।।
अक्षय अखण्ड अविनाशी पद, पाने यह अर्घ्य समर्पित है।
बहुश्रुत भक्ती श्रेष्ठ भावना, भाने तन–मन अर्पित है।।9।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– दोष अठारह से रहित, तीर्थंकर अरहन्त।
शांती धारा दे रहे, हो शांती भगवन्त।।

शांतये शांतिधारा

वीतराग सर्वज्ञ जिन, वैदेही हे नाथ।
पुष्पाञ्जलि करते चरण, झुका रहे हम माथ।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावली

दोहा– बहुश्रुत भक्ती में भरा, समयसार का सार।
अर्घ्य चढ़ाते हम यहाँ, नत हो बारम्बार।।

वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

एकादश अंग वर्णन

आचारांग मुनी चर्या का, जिसमें है सम्पूर्ण कथन।
समिति गुप्ति व्रत शुद्धी का भी, इसमें है पूरा वर्णन।।
सहस अठारह पद हैं इसके, श्रुत पद को मैं सिरनाऊँ।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाऊँ, ध्याऊँ गाऊँ हर्षाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं आचारांगसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दूजा सूत्र कृतांग शुभम् है, ज्ञान विनय का जिसमें सार।
क्या है कल्प अकल्प ज्ञानमय, धर्म रूप कैसा व्यवहार।।
जिसके पद छत्तीस सहस हैं, श्रुत पद को मैं सिरनाऊँ।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाऊँ, ध्याऊँ गाऊँ हर्षाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं सूत्रकृतांगसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्थानांग तीसरा पद है, देख शोध थल पर चलना।
एक–एक दो रूप हैं पावन, शब्द अर्थ मय ही ढलना।।
पद ब्यालीस सहस हैं जिसके, श्रुत पद को मैं सिरनाऊँ।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाऊँ, ध्याऊँ गाऊँ हर्षाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं स्थानांगसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौथा समवायांग शास्त्र है, द्रव्य क्षेत्र अरु भाव प्रधान।
धर्माधर्माकाश जीव के, असंख्य प्रदेश का रहा प्रमाण।।
एक लाख चौंसठ हजार हैं, श्रुत पद को मैं सिरनाऊँ।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाऊँ, ध्याऊँ गाऊँ हर्षाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं समवायांगसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम अंग व्याख्या प्रज्ञप्ति, विज्ञान मयी जो है पावन।
साठ हजार प्रश्न जीवादिक, उत्तर सहित जो मन भावन।।
लाख दोय अट्ठाईस सहस मय, श्रुत पद को मैं सिरनाऊँ।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाऊँ, ध्याऊँ गाऊँ हर्षाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्तिअंगसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर आदिक पुरुषों के, गुण वैभव का किया कथन।
ज्ञातृ धर्म कथांग है षष्ठम, धर्म कथाओं का वर्णन।
पाँच लाख छप्पन हजार पद, श्रुत पद को मैं सिरनाऊँ।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाऊँ, ध्याऊँ गाऊँ हर्षाऊँ।।6।।

ॐ ह्रीं ज्ञातृकथांगसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम अंग उपासकाध्ययन, श्रावक चर्या का वर्णन।
मूल गुणों अरु कर्त्तव्यों का, जिसमें है सम्पूर्ण कथन।।
ग्यारह लाख सत्तर हजार शुभ, श्रुत पद को मैं सिरनाऊँ।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाऊँ, ध्याऊँ गाऊँ हर्षाऊँ।।7।।

ॐ ह्रीं उपासकाध्ययनांगसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तः कृत् दशांग अष्टम है, उपसर्ग विजय का करे प्रकाश ।
प्रति तीर्थंकर काल में दश–दश, अन्तःकृत केवलि का वास ।।
तेईस लाख अट्ठाईस हजार शुभ, श्रुत पद को मैं सिरनाऊँ ।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाऊँ, ध्याऊँ गाऊँ हर्षाऊँ ।।8।।

ॐ ह्रीं अंतःकृद्दशांगसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुत्तरोपपादिक दशांग नवम् है, विजयादी अनुत्तर में वास ।
प्रति तीर्थंकर काल में दश–दश, उपसर्ग विजय का करें प्रकाश ।।
लाख बानवे सहस्र चँवालिस, श्रुत पद को मैं सिरनाऊँ ।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाऊँ, ध्याऊँ गाऊँ हर्षाऊँ ।।9।।

ॐ ह्रीं अनुत्तरोपपादिकदशांगसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रश्नव्याकरण अंग दशम है, प्रश्नोत्तर युत पूर्ण कथन ।
आक्षेप और विक्षेपवाद का, जिसमें है पूरा वर्णन ।।
तिरानवे लाख सोलह हजार शुभ, श्रुत पद को मैं सिरनाऊँ ।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाऊँ, ध्याऊँ गाऊँ हर्षाऊँ ।।10।।

ॐ ह्रीं प्रश्नव्याकरणांगसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपाक सूत्र शुभ अंग एकादश, पुण्य पाप फल का द्योतक ।
हित और अहित शुभाशुभ का जो, शास्त्र परम है उद्योतक ।।
एक करोड़ सुलाख चौरासी, श्रुत पद को मैं सिरनाऊँ।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाऊँ, ध्याऊँ गाऊँ हर्षाऊँ ।।11।।

ॐ ह्रीं विपाकसूत्रांगसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रोला छन्द)

प्रथम भेद उत्पाद पूर्व में, पुद्गल द्रव्य का ।
जीवों के उत्पाद कथन, स्वरूपादिक का ।।
हैं करोड़ पद वस्तू दश, सौ प्राभृत गाए ।
जिनवाणी को भक्ति भाव से, शीश झुकाएँ ।।12।।

ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय अग्रायणी पूर्व में, स्वसमय कथन है ।
क्रियावाद की किरिया का, सुन्दर दर्शन है ।।
चौदह वस्तु दो सौ अस्सी, प्राभृत गाए ।
लाख छियानवे पद भक्ति मय, शीश झुकाएँ ।।13।।

ॐ ह्रीं आग्रायणीयपूर्वसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्यानुवाद में छद्मस्थों का, किया कथन है ।
आत्मवीर्य पर वीर्य शक्ति, का भी वर्णन है ।।
आठ वस्तुगत वस्तू शत्, वसु प्राभृत गाए ।
सत्तर लाख सुपद में, अपना शीश झुकाएँ ।।14।।

ॐ ह्रीं वीर्यानुप्रवादपूर्वसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्ति नास्ति प्रवाद में, नय के भेद बताए ।
अस्ति नास्ति और अस्तिकाय, के भेद गिनाए ।।
अष्टादश वस्तु त्रय शत्, अस्सी प्राभृत गाए ।
साठ लाख पद को भक्ती, मय शीश झुकाएँ ।।15।।

ॐ ह्रीं अस्तिनास्तिप्रवादपूर्वसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानप्रवाद में आठों ज्ञानों, का वर्णन है ।
इन्द्रिय आदिक के भेदों का, दिग्दर्शन है ।।
वस्तू बारह भेद युक्त शत्, प्राभृत गाए ।
पद हैं एक करोड़ भावसौं, शीश झुकाएँ ।।16।।

ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवादपूर्वसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठम सत्य प्रवाद में, सत्यासत्य कथन है ।
भाव वचन गुप्ती अरु सत्य का, दिग्दर्शन है ।।
द्वादश वस्तू भेद का चालिस, प्राभृत गाए ।
पद हैं एक करोड़ भाव सौं, शीश झुकाएँ ।।17।।

ॐ ह्रीं सत्यप्रवादपूर्वसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मप्रवाद में आत्म द्रव्य का, कथन मनोहर ।
षट् कायिक जीवों का वर्णन, किया है सुन्दर ।।
वस्तू सोलह विंशति त्रय शत्, प्राभृत गाए ।
पद छब्बिस कोटि में हम सब, शीश झुकाएँ ।।18।।

ॐ ह्रीं आत्मप्रवादपूर्वसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म प्रवाद में कर्म बन्ध शत्, उदय बताये ।
स्थिति उदीरणा शक्ति नाश की, कथनी गाए ।।
बीस वस्तु गत जान चार सौ, प्राभृत गाए ।
पद हैं एक करोड़ भाव से, शीश झुकाएँ ।।19।।

ॐ ह्रीं कर्मप्रवादपूर्वसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवमा प्रत्याख्यान पाप का, है परिहारी ।
नियम प्रतिक्रम तप आराधन, व्रत का धारी ।।
तीन वस्तु गत जान चार सौ, प्राभृत गाए ।
पद हैं एक करोड़ भाव से, शीश झुकाएँ ।।20।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानप्रवादपूर्वसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यानुवाद में मंत्र तंत्र, विद्या की सिद्धि ।
समुद्घात रज्जू राशी की, क्षेत्र प्रसिद्धि ।
वस्तू पन्द्रह जान तीन सौं, प्राभृत गाए ।
एक लाख दश पद में, अपना शीश झुकाएँ ।।21।।

ॐ ह्रीं विद्यानुवादप्रवादपूर्वसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्याणवाद में सूर्य चन्द्र, नक्षत्र की चर्चा ।
पुण्य पुरुष का कथन और कल्याणक की अर्चा ।।
वस्तूगत हैं दश दो सौ जिन प्राभृत गाए ।
पद छब्बीस करोड़ भाव सौं शीश झुकाएँ ।।22।।

ॐ ह्रीं कल्याणप्रवादपूर्वसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणवाद में स्वास्थ्य और, तन का वर्णन ।
अष्टांग आयुर्वेद और, प्राणायाम के लक्षण ।।

वस्तूगत हैं दश दो सौ जिन, प्राभृत गाए ।
तेरह कोटि सुपद में भाव सौं, शीश झुकाएँ ।।23।।

ॐ ह्रीं प्राणानुप्रवादपूर्वसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रिया विशाल में काव्य शिल्प, लेखन औ विद्या ।
कला बहत्तर नर नारी में, चौंसठ विद्या ।।
वस्तूगत हैं दश सौ दश, जिन प्राभृत गाए ।
नौ करोड़ पद में भावों से, शीश झुकाएँ ।।24।।

ॐ ह्रीं क्रियाविशालप्रवादपूर्वसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक बिन्दु शुभ सार में वसु, व्यवहार का वर्णन ।
श्रुत सम्पत्ति परिकर्म गणित, राशि का लक्षण ।।
वस्तूगत दश हैं दो सौ, जिन प्राभृत गाए ।
ढाई कोटि पद में, भावों से शीश झुकाएँ ।।25।।

ॐ ह्रीं लोकबिन्दुसारपूर्वसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– बहुश्रुत भक्ती भावना, धारी गुरु उपाध्याय।
उनकी अर्चा हम यहाँ, करते मन–वच–काय।।

ॐ ह्रीं पञ्चविंशति गुणसंयुक्त बहुश्रुतभक्तिभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै नमः।

जयमाला

दोहा– प्रवचन भक्ती भावना, जग में मंगलकार।
जयमाला गाते यहाँ, पाने भव से पार।।

(पद्धडि छन्द)

जय उपाध्याय मुनिवर महान्, जय ज्ञान ध्यान चारित्रवान ।
जय नग्न दिगम्बर रूप धार, शुभ वीतराग मय निर्विकार ।।
जय मिथ्यातम नाशक मुनीश, तव चरण झुकावे शीश ईश ।
जय आर्त्त रौद्र द्वय ध्यान हीन, जय धर्म शुक्ल में हुए लीन ।।

जय मोह सुभट का नाश कीन, जय आत्म ज्ञान गत गुण प्रवीण ।
जय आतापन आदिक योग धार, जो करते हैं निज में विहार ।।
जय सम्यक् दर्शन ज्ञान पाय, जय सम्यक् चारित उर बसाय ।
जय विषय भोग का कर विनाश, जय त्याग किए सब जगत आश ।।
जय विद्वत रत्न कहे मुनीश, कई भक्त झुकाते चरण शीश ।
नित प्राप्त करें सम्यक् सुज्ञान, शिष्यों को दें सद् ज्ञान दान ।।
जय करें जगत कुज्ञान नाश, जय करें धर्म का सद् प्रकाश ।
जय काम कषाएँ किए क्षीण, जय तत्त्व देशना में प्रवीण ।।
जय अंग सु एकादश प्रमाण, जय चौदह पूरब लिए जान ।
हो गये आप इनके सुनाथ, तव चरण झुकावें भक्त माथ ।।
जय धर्म अहिंसा लिए धार, जय गमन करें पग-पग विचार ।
जय सौम्य मूर्ति हैं परम शांत, मुद्रा दिखती है अति प्रशांत ।।
जय गुण गरिमा जग है प्रधान, जय भव्य कमल विज्ञान वान ।
जय-जय परमेष्ठी हुए आप, जय भव्य भ्रमर तव करें जाप ।।
जय-जय करुणाकर कृपावन्त, तब हुए जगत् में सकल संत ।
आध्यात्म रसिक हो सुगुण खान, जय ज्ञानामृत का करें पान ।।
तुम पाए गुण जग में अपार, तव चरणों करते नमस्कार ।
हमको गुरु भव से करो पार, हमको भी दो गुरु तत्त्व सार ।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय सम्यक् ज्ञानी, विद्या दानी, उपाध्याय के गुण गाएँ।
भव ताप निवारी, बहुगुण धारी, ज्ञान पुजारी को ध्याएँ।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – उपाध्याय को पूजकर, पाते ज्ञान निधान।
सुख शांती को प्राप्त कर, पाएँ पद निर्वाण।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री प्रवचन भक्ति भावना पूजा

स्थापना

प्रवचन भक्ती श्रेष्ठ भावना, की पूजा करने आए।
जिनवाणी का रसास्वाद जिन, अर्चा कर मन को भाए।।
आह्वानन् करके हम उर में, विशद भावना भाते हैं।
जिनवर जिनवाणी को नत हो, सादर शीश झुकाते हैं।।

दोहा– प्रवचन भक्ति में भरा, द्वादशांग का सार।
भवि जीवों को जो करे, भव सिन्धू से पार।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं।
ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

स्वच्छ रहा चेतन यह चिन्मय, जिस पर कर्मों का बन्ध पड़ा।
जो भटक रहा सारे जग में, बहु रागद्वेष का रंग चढ़ा।।
हो कर्मों का अब मल विनाश, यह नीर चढ़ाने लाए हैं।
अब प्रवचन सागर के जल में, निज आतम धोने आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनायै जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

है आत्म ज्ञान जग में शीतल, उसके अनुभव बिन जलते हैं।
मिथ्यात्व जाल में भटकाए, हम मोह कर्म से छलते हैं।।
हम सन्तोषामृत पान करें, यह शीतल चन्दन लाए हैं।
अब प्रवचन सागर के जल में, निज आतम धोने आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनायै संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

भटकाए चंचल चित्त हमें, हम पतित हुए जग घूम रहे।
सच्चे स्वभाव से वंचित हैं, मोहित हो जग में झूम रहे।।
है अक्षय स्वरूप अनुपम मेरा, हम उसको पाने आए हैं।
अब प्रवचन सागर के जल में, निज आतम धोने आए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनायै अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

आतम है हीरा सम सुन्दर, भोगों ने कर दी काली है।
विषयों के रथ पर घूम रहे, निज पर दृष्टी ना डाली है।।
कर्मों के शूल हटाने को यह, पुष्प चढ़ाने लाए हैं।
अब प्रवचन सागर के जल में, निज आतम धोने आए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनायै कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन से यह तन चलता है, पर चिन्ता नित्य सताती है।
निज आतम का चिन्तन करना, यह याद कभी ना आती है।।
अब शाश्वत गुण प्रगटाने को, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।
अब प्रवचन सागर के जल में, निज आतम धोने आए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनायै क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कई दुखों के शूल सताते हैं, हमको कर्मों ने घेरा है।
अज्ञानी होकर भटक रहे, बस चारों ओर अंधेरा है।।
जल रही आपकी ज्योति से, निज ज्योति जलाने आए हैं।
अब प्रवचन सागर के जल में, निज आतम धोने आए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनायै मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कई जन्म लिए भव सागर में, कर्मों ने भ्रमण कराया है।
संसार अनादि अनन्त रहा, ना पार कहीं पर पाया है।।
आठों कर्मों का धूम उड़े, यह धूप जलाने लाए हैं।
अब प्रवचन सागर के जल में, निज आतम धोने आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पुण्य का फल पाकर जग में, ना फूले कभी समाए हैं।
उसमें ही उलझ गये हरदम, ना मोक्ष महाफल पाए हैं।।
अब मोक्ष महाफल मिले हमें, यह फल पूजा को लाए हैं।
अब प्रवचन सागर के जल में, निज आतम धोने आए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनायै मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

माया मिथ्या जग भोगों ने, या मोह ने हमे भ्रमाया है।
क्रोधादि कषायों ने जग के, बहु कीच के बीच फंसाया है।।
हो भव बन्धन का नाश मेरा, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
अब प्रवचन सागर के जल में, निज आतम धोने आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनायै अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सप्त धातु बिन देह है, अमल गुणों की खान।
देते शांती धार हम, पाने पद निर्वाण।।

शांतये शांतिधारा

ज्ञान ध्यान तप से जगे, आतम शक्ति विशेष।
पुष्पाञ्जलि के भाव से, नसते कर्म अशेष।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावली

दोहा– अष्ट कर्म रज दूर हो, जीवन हो निर्दोष।
अर्घ्य चढ़ा पूजा करें, पाने निज गुण कोष।।

वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रकीर्णक (अंग बाह्य के भेद) (वीर छन्द)

ग्यारह अंग में वर्णित पावन, श्री जिनेन्द्र की वाणी है।
अंग प्रविष्टी अंग बाह्य श्रुत, युक्त जगत कल्याणी है।।
प्रवचन भक्ति भावना भाकर, हम यह अर्घ्य चढ़ाते हैं।
द्वादशांग का ज्ञान प्राप्त हो, विशद भावना भाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं एकादश अंगसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूरब युत जिनवाणी, मिथ्यातम की नाशक है।
संशय आदि विनाशनकारी, विशद ज्ञान परकाशक है।।
प्रवचन भक्ति भावना भाकर, हम यह अर्घ्य चढ़ाते हैं।
द्वादशांग का ज्ञान प्राप्त हो, विशद भावना भाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वयुक्त प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पहला सामायिक समतामय, संक्लेश बिन सुविध विचार ।
पाप योग को पूर्ण त्यागकर, काल भाव है जिसका सार ।।
नामस्थापना द्रव्य क्षेत्र उपसर्ग, आदि में समता भाव ।
नहिं ममत्व है मन में किंचित्, सम्यक् दर्शन मय स्वभाव ।।3।।
ॐ ह्रीं सामायिकप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
द्वितीय संस्तवन चौबिस जिन को, वन्दन सहित सविधि संस्थान ।
अतिशय अरू कल्याणक का शुभ, जिसमें वर्णन है अभिराम ।।4।।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिस्तवप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तृतिय वन्दना एक-एक जिन, की संस्तुति का अवलम्बन ।
अनुपम जिसमें कथन किया है, चैत्य चैत्यालय का वन्दन ।।5।।
ॐ ह्रीं वंदनाप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रतिक्रमण चौथा प्रमाद बिन, सप्त भेद युत विमल महान् ।
रात्री दिवस पक्ष चौमासिक, वार्षिक युग उत्तम पहिचान ।।6।।
ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वैनयिक भेद पंचम मंगलमय, विनय भाव है पंच प्रकार ।
दर्शन ज्ञान चारित्र सुतप अरू, पंचम कहा भेद उपचार ।।7।।
ॐ ह्रीं वैनयिकप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
षष्ठम दशवैकालिक पावन, यति आचार का जिसमें सार ।
बाह्य क्रिया हो सम्यक् सारी, नहीं लगें व्रत में अतिचार ।।8।।
ॐ ह्रीं दशवैकालिकप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कृतिकर्म सप्तम में पूजन, परमेष्ठी पाँचों का सार ।
शिरोनति प्रभु की प्रदक्षिणा, द्वादशावर्त आदि विस्तार ।।9।।
ॐ ह्रीं कृतिकर्मप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अष्टम उत्तराध्ययन है अनुपम, बाईस परिषह जय लक्षण ।
चउ प्रकार परकृत उपसर्ग जय, करने का जिसमें वर्णन ।।10।।
ॐ ह्रीं उत्तराध्ययनप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नवम कल्प-व्यवहार प्रकीर्णक, योग्य आचरण योग्य क्रिया ।
दोषों के प्रायश्चित्त की विधि अरु, प्रख्यात साधु की सर्व क्रिया ।।11।।

ॐ ह्रीं कल्पव्यवहारप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कल्पाकल्प प्रकीर्णक दशवां, सम्यक् चारित का व्याख्यान ।
द्रव्यक्षेत्र अरूकाल भाव से, योग्यायोग्य करें धर ध्यान ।।12।।
ॐ ह्रीं कल्पाकल्पप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
महाकल्प ग्याहरवां जानो, शक्ति संहनन मुनि के योग्य ।
द्रव्य क्षेत्र आदिक का वर्णन, भाव त्याग कर रहा अयोग्य ।।13।।
ॐ ह्रीं महाकल्पप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
बारहवाँ पुण्डरीक भवन अरु, व्यन्तर ज्योतिष कल्पाचार ।
देवों के उत्पाद का कारण, त्याग सुतप व्रत का आधार ।।14।।
ॐ ह्रीं पुण्डरीकप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
महापुण्डरीक अंग तेरहवां, इन्द्र प्रतीन्द्रों का उत्पाद ।
सुतप ध्यान आचरण आदि शुभ, उत्तम व्रत होते हैं ज्ञात ।।15।।
ॐ ह्रीं महापुण्डरीकप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चौदहवां है भेद निषधिका, प्रायश्चित्तादि प्रमाद वर्णन ।
सबके गुण दोषों का ज्ञायक, कभी न हो फिर भाव मरण ।।16।।
ॐ ह्रीं निषधिकाप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अंग पूर्व से युक्त मनोहर, श्रेष्ठ प्रकीर्णक रहे महान।
स्याद्वादमय सप्त भंगयुत, अनेकान्त का है गुणगान।।17।।
ॐ ह्रीं अंगप्रविष्टअंगबाह्यश्रुतप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनायै नमः।

जयमाला

दोहा- भव्य भावना भाव से, भाएँ भाव सम्हाल।
प्रवचन भक्ती भावना, की गाते जयमाल।।

(चौबोला छंद)

दिव्य देशना श्री जिनेन्द्र की, जन-जन की कल्याणी है।
मोह महातम नाशक अनुपम, स्वपर भेद विज्ञानी है।।
वस्तु स्वरूप बताने वाली, मंगलमय अनुपम गाई।
सप्त भंग की शुभ तरंगमय, ज्योतिर्मय जो कहलाई।।

सप्त तत्त्व अरु नव पदार्थ का, वर्णन करने वाली है।
भवि जीवों के सारे संकट, क्षण में हरने वाली है।।
अनेकांतमय वाणी अनुपम, जन-जन की उपकारी है।
सर्व अमंगल हरने वाली, सर्व जगत हितकारी है।।
कर्म कालिमा हरने वाली, अमृत रस बरसाती है।
ॐकार मय दिव्य देशना, जन-मन को हरषाती है।।
मलयगिरि चन्दन गंगाजल, इन सबसे भी शीतल है।
कण-कण पावन है इस जग का, पावन हुई महीतल है।।
स्याद्वादमय परम औषधी, भव पीड़ा को हरती है।
विषय दाह का नाश करे जो, जग में मंगल करती है।।
त्रय सन्ध्या में त्रय मुहूर्त तक, दिव्य ध्वनि खिरती पावन।
गणधर चक्री के निमित्त से, असमय में हो उच्चारण।।
अमृतमय झरने के जैसी, सबके मन को भाती है।
चिदानन्द चैतन्य स्वरूपी, मोक्ष मार्ग दिखलाती है।।
बारह श्रेष्ठ सभाएँ वाणी, सुनती होकर भाव विभोर।
होता है आनन्द देशना, सुनकर के शुभ चारों ओर।।
जिन वचनामृत भक्ति भाव से, श्रद्धायुत हो पीते हैं।
जन्म जरा से दूर अजर वह, अविनाशी हो जीते हैं।।
जय जय जय चौबिस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु जयवन्त कहे।
हो जयवन्त श्री जिनवाणी, 'विशद' सदा जिनसंत कहे।।

दोहा- दिव्य देशना में भरा, द्वादशांग भण्डार।
पूज रहे हम भाव से, नत हो बारम्बार।।

ॐ ह्रीं निषधिकाप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- श्री जिनेन्द्र की देशना, जग में रही अपार।
भवि जीवों को शीघ्र ही, कर देती भव पार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री आवश्यकापरिहार्य भावना पूजा

स्थापना

आवश्यक अपरिहार्य भावना, भाते हैं जो मंगलकार।
षट् आवश्यक कर्त्तव्यों का, कभी नहीं करते परिहार।।
सामायिक आदिक का पालन, करने वाले साधु महान।
निज गुण में नित लीन रहें जो, हम भी करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहार्य भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहार्य भावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहार्य भावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

भव-भव का मैल धुले मेरा, इच्छा की प्यास बुझाएँगे।
सम्यक् ज्ञानामृत पीकर के, अन्तर श्रद्धान जगाएँगे।।
आवश्यक अपरिहार्य भावना, हृदय हमारे आई है।
अब तीर्थंकर पद पाएँगे, यह मन में बात समाई है।।1।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तन मन की तपन मिटाने को, अब राग की आग बुझाना है।
वचनामृत जिन का चन्दन है, भव का सन्ताप नशाना है।।
आवश्यक अपरिहार्य भावना, हृदय हमारे आई है।
अब तीर्थंकर पद पाएँगे, यह मन में बात समाई है।।2।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षत विक्षत सभी पर्यायों से, उठ गई हमारी अब दृष्टी।
हम हैं अखण्ड अक्षत चिन्मय, यह जान के बदली है सृष्टी।।
आवश्यक अपरिहार्य भावना, हृदय हमारे आई है।
अब तीर्थंकर पद पाएँगे, यह मन में बात समाई है।।3।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

इन रंग-विरंगे फूलों की, मन से हम आस मिटाएँगे।
विषयों के चुभते शूलों को, हम शीलेश्वर बन जाएँगे।।

आवश्यक अपरिहार्य भावना, हृदय हमारे आई है।
अब तीर्थंकर पद पाएँगे, यह मन में बात समाई है।।4।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रस व्यंजन के खाने से, तन मन लोचन मम् शांत हुए।
हम चेतन से अन्जान रहे, नैवेद्य चढ़ाए व्यर्थ हुए।।
आवश्यक अपरिहार्य भावना, हृदय हमारे आई है।
अब तीर्थंकर पद पाएँगे, यह मन में बात समाई है।।5।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ज्ञान दीप के जलने से, मिथ्यात्व अँधेरा जाता है।
जो रमण करें निज भावों में, वह निश्चय शिवपद पाता है।।
आवश्यक अपरिहार्य भावना, हृदय हमारे आई है।
अब तीर्थंकर पद पाएँगे, यह मन में बात समाई है।।6।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज चेतन का चिन्तन करके, शुभ अशुभ विकार नशाना है।
शुद्धोपयोग की अग्नी में अब, कर्मों की धूप जलाना है।।
आवश्यक अपरिहार्य भावना, हृदय हमारे आई है।
अब तीर्थंकर पद पाएँगे, यह मन में बात समाई है।।7।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल नर्क निगोद अशुभ का है, शुभ का फल मानवता गाया।
मानवता का फल संयम तप, शिवपद जिसका फल बतलाया।।
आवश्यक अपरिहार्य भावना, हृदय हमारे आई है।
अब तीर्थंकर पद पाएँगे, यह मन में बात समाई है।।8।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन आदिक द्रव्य अष्ट, सबसे यह अर्घ्य बनाया है।
पाने अनर्घ पद यह पावन, भावों से नाथ चढ़ाया है।।
आवश्यक अपरिहार्य भावना, हृदय हमारे आई है।
अब तीर्थंकर पद पाएँगे, यह मन में बात समाई है।।9।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– श्री जिनेन्द्र की भक्ति में, होकर के तल्लीन।
शांती धारा कर विशद, कर्म करेंगे क्षीण।। *शांतये शांतिधारा*
समता भावी बन स्वयं, पाएँगे स्वभाव।
पूजा करने का जगा, मेरे मन में चाव।। *पुष्पांजलिं क्षिपेत्*

अर्घ्यावली

दोहा– जिन अर्चा करके मिटे, भव–भव का सन्ताप।
कटते अपने आप ही, कोटि जन्म के पाप।।

वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(छन्द : जोगीरासा)

अनुपम करुणा की सुमूर्ति शुभ, अविकारी जिन संत महान।
भयाकुलित व्याकुल जग जन को, अभय प्रदायक 'समतावान'।।
जिनकी अनुपम गुण गरिमा का, अम्बु राशि सम है विस्तार।
आवश्यक अपरिहारी मुनि पद, वन्दन मेरा बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं सामायिकआवश्यकसहित आवश्यकापरिहाणिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिन कारण भवि जीवन तारण, भव सिन्धू में यान समान।
अगम अथाह सुखद शुभ सुन्दर, रहा 'वन्दना' सुगुण महान।।
जिनकी अनुपम गुण गरिमा का, अम्बु राशि सम है विस्तार।
आवश्यक अपरिहारी मुनि पद, वन्दन मेरा बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं वंदनाआवश्यकसहित आवश्यकापरिहाणिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अचिन्त्य महिमा 'स्तुति' की, ऐसे गुण से जो भरपूर।
स्तुति कर्ता को भव दुख से, जबकि बचाए दर्श जरूर।।
जिनकी अनुपम गुण गरिमा का, अम्बु राशि सम है विस्तार।
आवश्यक अपरिहारी मुनि पद, वन्दन मेरा बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं स्तवआवश्यकसहित आवश्यकापरिहाणिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्मदेशना' है जिनेन्द्र की, भव सिन्धू में पोत समान।
पठन श्रवण चिन्तन से उसके, पाते मुनिगण केवलज्ञान।।
जिनकी अनुपम गुण गरिमा का, अम्बु राशि सम है विस्तार।
आवश्यक अपरिहारी मुनि पद, वन्दन मेरा बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं स्वाध्यायआवश्यकसहित आवश्यकापरिहाणिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह कर्म के प्रबल वेग से, लगते हैं चारित में दोष।
निज मन कमल स्वरूप निरखकर, 'प्रतिक्रमण' से हों निर्दोष।।
जिनकी अनुपम गुण गरिमा का, अम्बु राशि सम है विस्तार।
आवश्यक अपरिहारी मुनि पद, वन्दन मेरा बारम्बार।।5।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणआवश्यकसहित आवश्यकापरिहाणिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध स्वरूप अमल अविनाशी, निज को जाने सिद्ध समान।
तन से निर्मोही होकर यति, 'कायोत्सर्ग' करें कर ध्यान।।
जिनकी अनुपम गुण गरिमा का, अम्बु राशि सम है विस्तार।
आवश्यक अपरिहारी मुनि पद, वन्दन मेरा बारम्बार।।6।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्गआवश्यकसहित आवश्यकापरिहाणिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समता वन्दन स्तुति करके, स्वाध्याय कर प्रतिक्रमण।
कायोत्सर्ग सहित षट् गुणधर, साधु करें निज का चिन्तन।।
जिनकी अनुपम गुण गरिमा का, अम्बु राशि सम है विस्तार।
आवश्यक अपरिहारी मुनि पद, वन्दन मेरा बारम्बार।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै नमः।

जयमाला

दोहा– प्रतिपालक अशरण शरण, हे प्रभु दीन दयाल।
आवश्यक अपरिहार्य की, गाते हम जयमाल।।

(ताटंक छन्द)

उत्तम संयम का महिमामय, शुद्ध चारण अपनाते।
वीतराग जिनमार्ग यही है, शिवपथ पर बढ़ते जाते।।
शुद्ध संयमाचरण के द्वारा, सिद्ध स्वपद को पाते हैं।
आवश्यक कर्त्तव्य भाव से, जो प्राणी अपनाते हैं।।1।।
मोक्ष महल का श्रेष्ठ हेतु है, तीन लोक विख्यात रहा।
शुद्ध भाव से संयम पालन, करना शिव का मूल रहा।।
संयम के तरुवर में नन्हें, नन्हें अंकुर आते हैं।
आवश्यक कर्त्तव्य भाव से, जो प्राणी अपनाते हैं।।2।।

पंच स्थावर त्रस जीवों पर, जो करुणा के धारी हैं।
पञ्चेन्द्रिय मन वश में करते, साधू मंगलकारी हैं।।
सदा संयमित रहने वाले, उभय लोक सुख पाते हैं।
आवश्यक कर्त्तव्य भाव से, जो प्राणी अपनाते हैं।।3।।
सामायिक छेदोपस्थापन, अरु परिहार विशुद्ध चारित्र।
सूक्ष्म साम्पराय यथाख्यात शुभ, पंच भेद यह रहे पवित्र।।
इन्द्रादिक भी जिसे तरसते, नर संयम वह पाते हैं।
आवश्यक कर्त्तव्य भाव से, जो प्राणी अपनाते हैं।।4।।
बड़े भाग्य से नर तन पाया, पुण्य की है यह बलिहारी।
संयम का पालन करके हम, भी हो जायें अविकारी।।
देहाश्रित संयम सौरभ से, नर जीवन मुस्काते हैं।
आवश्यक कर्त्तव्य भाव से, जो प्राणी अपनाते हैं।।5।।
संयम के धारी समताधर, नित्य वन्दना करते हैं।
जिन स्तुति करते हैं नितप्रति, स्वाध्याय रत रहते हैं।।
प्रतिक्रमण करते दोषों का, कायोत्सर्ग लगाते हैं।
आवश्यक कर्त्तव्य भाव से, जो प्राणी अपनाते हैं।।6।।
निज आवश्यक का पालन करने, वाले श्रावक कहलाते।
मोक्ष मार्ग में कारण है जो, पुण्य अपूर्व श्रेष्ठ पाते।।
अनुक्रम से श्रावक व्रतधारी, मोक्ष महल को जाते हैं।
आवश्यक कर्त्तव्य भाव से, जो प्राणी अपनाते हैं।।7।।

(घत्ता छन्द)

जय संयम धारी, जग हितकारी, आवश्यक निज पाल रहे।
जय जय अविकारी, मुनि अनगारी, शिवपथ 'विशद' सम्हाल रहे।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– निज स्वरूप में लीन हो, संयम धरें महान।
निज आवश्यक पालकर, पाए पद निर्वाण।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री मार्गप्रभावना भावना पूजा

स्थापना

अनुपम मार्ग प्रभावना, कही भावना नेक।
तीर्थंकर पद पा गये, भाके जीव अनेक।।
दिव्य देशना में कहा, शिव का यही विधान।
अतः हृदय में हम यहाँ, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना भावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना भावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना भावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

जल में न्हवन किया हमने, जल पिया किन्तु ना तृषा नशी।
हे प्रभो ! आपकी मुद्रा शुभ, शिव शांत मोहनी हृदय बसी।।
जिन मार्ग प्रभावना करने की, हम विशद भावना भाते हैं।
हो लक्ष्य पूर्ण मेरा भगवन्, हम चरणों शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनाभावनायै जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में चन्दन का लेप किया, पर शीतल गंध ना आयी है।
हे नाथ ! आपके चरणों में, शीतलता हमने पाई है।।
जिन मार्ग प्रभावना करने की, हम विशद भावना भाते हैं।
हो लक्ष्य पूर्ण मेरा भगवन्, हम चरणों शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनाभावनायै संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद पाने को भटके, पर जीवन ही क्षय हो जाते।
है श्रेष्ठ निराकुल अक्षय पद, वह नहीं प्राप्त हम कर पाते।।
जिन मार्ग प्रभावना करने की, हम विशद भावना भाते हैं।
हो लक्ष्य पूर्ण मेरा भगवन्, हम चरणों शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनाभावनायै अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुमनों की सेज सजाकर के, विषयों में हमने शयन किया।
चेतन को भूले रहे सदा, भवसिन्धु में अब तक भ्रमण किया।।
जिन मार्ग प्रभावना करने की, हम विशद भावना भाते हैं।
हो लक्ष्य पूर्ण मेरा भगवन्, हम चरणों शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनाभावनायै कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस भोजन की लोलुपता, से क्षुधा रोग ना मिट पाया।
है ज्ञानानन्त स्वरूप मेरा, वह पाने मैं तव पद आया।।
जिन मार्ग प्रभावना करने की, हम विशद भावना भाते हैं।
हो लक्ष्य पूर्ण मेरा भगवन्, हम चरणों शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनाभावनायै क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यातम किंचित् मिटा नहीं, निज ज्ञान दीप ना जल पाया।
यह दीप जलाते हे स्वामी, अब मिटे मोहतम की छाया।।
जिन मार्ग प्रभावना करने की, हम विशद भावना भाते हैं।
हो लक्ष्य पूर्ण मेरा भगवन्, हम चरणों शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनाभावनायै मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप होम करके, निज शाश्वत सुख उपजाएँगे।
ना कर्म जलेंगे जब तक हम, प्रभु द्वार आपके आएँगे।।
जिन मार्ग प्रभावना करने की, हम विशद भावना भाते हैं।
हो लक्ष्य पूर्ण मेरा भगवन्, हम चरणों शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनाभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वादिष्ट सरस नाना ऋतु के, फल खाकर व्यर्थ नशाए हैं।
ना भेदज्ञान का फल पाया, अब यह फल पाने आए हैं।।
जिन मार्ग प्रभावना करने की, हम विशद भावना भाते हैं।
हो लक्ष्य पूर्ण मेरा भगवन्, हम चरणों शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनाभावनायै मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों का पुञ्ज लगा, आठों द्रव्यों से नश जाए।
अर्पित करने से अर्घ्य विशद, अतिशय अनर्घपद प्रगटाए।।

जिन मार्ग प्रभावना करने की, हम विशद भावना भाते हैं।
हो लक्ष्य पूर्ण मेरा भगवन्, हम चरणों शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनाभावनायै अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- होवे मार्ग प्रभावना, श्री जिनेन्द्र के द्वार।
शांतीधारा कर मिले, मुक्ति वधू का प्यार।। *शांतये शांतिधारा*
अष्ट कर्म को नाशकर, निज पद हो सम्प्राप्त।
पुष्पाञ्जलि करके विशद, शिवपद होवे प्राप्त।। *पुष्पांजलिं क्षिपेत्*

अर्घ्यावली

दोहा- दर्श विशुद्धी भावना, जग में रही महान।
पुष्पाञ्जलि करते 'विशद', पाने सद् श्रद्धान।।

वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चौबोला छन्द)

श्रुत ज्ञान के द्वारा गुरुजन, जिन शासन का करें प्रकाश।
ज्ञान प्राप्त कर ध्यान करें मुनि, कर्म नाश पावें शिव वास।।
मार्ग प्रभावना श्रेष्ठ भावना, भाकर पावें केवलज्ञान।
अर्घ्य चढ़ाकर आज यहाँ पर, भाव सहित करते गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानेन मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनशनादि तप करके मुनिवर, कर्मों का करते संहार।
जिनशासन की हो प्रभावना, करें साधना अपरम्पार।।
मार्ग प्रभावना श्रेष्ठ भावना, भाकर पावें केवलज्ञान।
अर्घ्य चढ़ाकर आज यहाँ पर, भाव सहित करते गुणगान।।2।।

ॐ ह्रीं तपसा मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गद्य-पद्य एकांकी आदिक, रचना करके भली प्रकार।
काव्य कला से आकर्षित कर, जैन धर्म का करें प्रसार।।
मार्ग प्रभावना श्रेष्ठ भावना, भाकर पावें केवलज्ञान।
अर्घ्य चढ़ाकर आज यहाँ पर, भाव सहित करते गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं कवित्वेन मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तत्त्वों का व्याख्यान करें शुभ, जैन धर्म आगम अनुसार।
हित-मित-प्रिय वचन के द्वारा, हो प्रभावना अतिशयकार।।
मार्ग प्रभावना श्रेष्ठ भावना, भाकर पावें केवलज्ञान।
अर्घ्य चढ़ाकर आज यहाँ पर, भाव सहित करते गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं व्याख्यानेन मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्दकुन्द अकलंक गुरु सम, विजय करें परमत पर श्रेष्ठ।
स्याद्वाद सिद्धान्त के द्वारा, कुपथ का खण्डन करें यथेष्ठ।।
मार्ग प्रभावना श्रेष्ठ भावना, भाकर पावें केवलज्ञान।
अर्घ्य चढ़ाकर आज यहाँ पर, भाव सहित करते गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं वादेन मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रचना करके शत् शास्त्रों की, न्याय नीति का करें प्रकाश।
सत्य अहिंसादिक धर्मों से, सदाचरण का होय विकास।।
मार्ग प्रभावना श्रेष्ठ भावना, भाकर पावें केवलज्ञान।
अर्घ्य चढ़ाकर आज यहाँ पर, भाव सहित करते गुणगान।।6।।

ॐ ह्रीं ग्रन्थोद्धारेण मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन प्रतिमा निर्माण प्रतिष्ठा, रथ यात्रा आदिक कर भव्य।
जलगालन रात्री भोजन तज, पालन करके षट् कर्त्तव्य।।
मार्ग प्रभावना श्रेष्ठ भावना, भाकर पावें केवलज्ञान।
अर्घ्य चढ़ाकर आज यहाँ पर, भाव सहित करते गुणगान।।7।।

ॐ ह्रीं जिनप्रतिमानिर्माणरूपमार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय सिद्ध क्षेत्र कल्याणक, भूमी पर मुनि करें विहार।
यात्रा संघों द्वारा श्रावक, करें धर्म का सतत् प्रसार।।
मार्ग प्रभावना श्रेष्ठ भावना, भाकर पावें केवलज्ञान।
अर्घ्य चढ़ाकर आज यहाँ पर, भाव सहित करते गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थयात्राकृत मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव शास्त्र गुरु भक्ति भावना, करके पूजन श्रेष्ठ विधान।
पर्वों में उत्सव कर भारी, धर्म प्रभावना करें महान।।

मार्ग प्रभावना श्रेष्ठ भावना, भाकर पावें केवलज्ञान।
अर्घ्य चढ़ाकर आज यहाँ पर, भाव सहित करते गुणगान।।9।।

ॐ ह्रीं अनेकपूजाविधान मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समता भाव धारकर जिनवर, की आज्ञा करके स्वीकार।
देकर दान चार संघों को, हो प्रभावना मंगलकार।।
मार्ग प्रभावना श्रेष्ठ भावना, भाकर पावें केवलज्ञान।
अर्घ्य चढ़ाकर आज यहाँ पर, भाव सहित करते गुणगान।।10।।

ॐ ह्रीं समता मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य शक्तिसः आज्ञा पालन, मनसा ज्ञान सुतप कर दान।
न्याय भक्ति समता के द्वारा, हो प्रभावना श्रेष्ठ महान।।
मार्ग प्रभावना श्रेष्ठ भावना, भाकर पावें केवलज्ञान।
अर्घ्य चढ़ाकर आज यहाँ पर, भाव सहित करते गुणगान।।11।।

ॐ ह्रीं दशविधसांगोपांगयुक्त मार्गप्रभावनाभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनायै नमः।

जयमाला

दोहा– मन वच तन सत् कर्म कर, करें धर्म उद्योत।
तीर्थंकर पद प्राप्त हो, जले धर्म की ज्योत।।

(वेसरी छन्द)

धर्म प्रभाव करे जो भाई, उसकी फैले जग प्रभुताई।
जिनशासन को जो फैलावे, मार्ग प्रभावना ये कहलावे।।1।।
सम्यक् दान करें जो भाई, कल्पवृक्ष सम हो सुखदायी।
जिनशासन को जो फैलावे, मार्ग प्रभावना ये कहलावे।।2।।
धर्मोद्योत कराने वाले, श्रावक जग में रहे निराले।
जिनशासन को जो फैलावे, मार्ग प्रभावना ये कहलावे।।3।।
संघ चतुर्विध के शुभकारी, यात्रा करवाते मनहारी।
जिनशासन को जो फैलावे, मार्ग प्रभावना ये कहलावे।।4।।

जिन मन्दिर जिनबिम्ब बनावें, करें प्रतिष्ठा उर हर्षावें।
जिनशासन को जो फैलावे, मार्ग प्रभावना ये कहलावे।।5।।
भाँति-भाँति के व्रत जो पालें, श्रावक के कर्त्तव्य सम्हालें।
जिनशासन को जो फैलावे, मार्ग प्रभावना ये कहलावे।।6।।
पावन तीर्थंकर की वाणी, भव्य जनों की है कल्याणी।
जिनशासन को जो फैलावे, मार्ग प्रभावना ये कहलावे।।7।।
ऋषि मुनि जो उपदेश सुनावें, जीवों को सद्राह दिखावें।
जिनशासन को जो फैलावे, मार्ग प्रभावना ये कहलावे।।8।।
उत्तम संयम मुनिवर पालें, द्वादश तप भी आप सम्हालें।
जिनशासन को जो फैलावे, मार्ग प्रभावना ये कहलावे।।9।।
शास्त्र का लेखन करते स्वामी, होते हैं शिवपथ अनुगामी।
जिनशासन को जो फैलावे, मार्ग प्रभावना ये कहलावे।।10।।
गौतमादि गणधर जगनामी, अन्य मुनी मुक्ती पथगामी।
जिनशासन को जो फैलावे, मार्ग प्रभावना ये कहलावे।।11।।
धरसेन कुन्दकुन्द मुनि ज्ञानी, ने लेखन की है जिनवाणी।
जिनशासन को जो फैलावे, मार्ग प्रभावना ये कहलावे।।12।।
विमल विराग भरत मुनि गाए, जिनके कर से दीक्षा पाए।
जिनशासन को जो फैलावे, मार्ग प्रभावना ये कहलावे।।13।।
'विशद' सिन्धु यह भाव बनाए, प्रवचन वात्सल्य हृदय समाए।
जिनशासन को जो फैलावे, मार्ग प्रभावना ये कहलावे।।14।।

दोहा– फैले मार्ग प्रभावना, जग में चारों ओर।
'विशद' हमारी भावना, वन्दन है कर जोर।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनाभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– जिनशासन जयवन्त हो, नितप्रति हो विस्तार।
जिनवर के पद में नमन, मेरा बारम्बार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री प्रवचनवात्सल्य भावना पूजा

स्थापना

दिव्य देशना श्री जिनेन्द्र की, प्रवचन कहलाए।
प्रीति रखने वाले उसमें, विरले जन पाए।।
प्रवचन वात्सल्य श्रेष्ठ भावना, भाने हम आए।
आह्वानन् करके निज उर में, नत हो सिर नाए।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावना ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(हरिगीता छंद)

निज चेतना को चित्त के, जल से धुलाने आए हैं।
भव रोग जन्मादिक नशाने, जल चढ़ाने लाए हैं।।
वात्सल्य प्रवचन भावना को, पूजते हम भाव से।
जिनवर वचन को निज हृदय, में धारते हैं चाव से।।1।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संताप आतम का मिटाने, गंध से पूजा करें।
जो राग अन्तर में समाया, पूर्णतः वह परिहरें।।
वात्सल्य प्रवचन भावना को, पूजते हम भाव से।
जिनवर वचन को निज हृदय, में धारते हैं चाव से।।2।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या कषायों से ग्रसित, निज धर्म को जाना नहीं।
स्वरूप शाश्वत है हमारा, उसको पहिचाना नहीं।।
वात्सल्य प्रवचन भावना को, पूजते हम भाव से।
जिनवर वचन को निज हृदय, में धारते हैं चाव से।।3।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य तन के भोग में फँस, घोर दुख पाता रहा।
अब कामबाण विनाश करने, पुष्प यह लाए अहा।।

वात्सल्य प्रवचन भावना को, पूजते हम भाव से।
जिनवर वचन को निज हृदय, में धारते हैं चाव से।।4।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना रसातल की पथिक, बनकर घुमाए लोक में।
अब क्षुधा व्याधी शांत हो प्रभु, क्यों पड़ें हम शोक में।।
वात्सल्य प्रवचन भावना को, पूजते हम भाव से।
जिनवर वचन को निज हृदय, में धारते हैं चाव से।।5।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या तिमिर में हम पड़े, शिव पंथ शुभ दिखता नहीं।
ज्ञान की ज्योती जलाएँ, और ना भटकें कहीं।।
वात्सल्य प्रवचन भावना को, पूजते हम भाव से।
जिनवर वचन को निज हृदय, में धारते हैं चाव से।।6।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ ध्यान अग्नी में करम की, धूप अब मेरी जले।
छाया अनादी मोह का तम, पूर्णतः वह अब गले।।
वात्सल्य प्रवचन भावना को, पूजते हम भाव से।
जिनवर वचन को निज हृदय, में धारते हैं चाव से।।7।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय लोक में शुभ मोक्षफल सम, फल नहीं कोई रहा।
यह फल चढ़ाकर मोक्षफल अब, प्राप्त हो हमको अहा।।
वात्सल्य प्रवचन भावना को, पूजते हम भाव से।
जिनवर वचन को निज हृदय, में धारते हैं चाव से।।8।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अर्घ्य लेकर के चरण में, भक्त यह आये विभो !।
अब सुपद शाश्वत् श्रेष्ठ अनुपम, दो हमें हे जिन प्रभो !।।
वात्सल्य प्रवचन भावना को, पूजते हम भाव से।
जिनवर वचन को निज हृदय, में धारते हैं चाव से।।9।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– ज्ञान तत्त्व उपदेश दे, जग में हुए महान।
शांती धारा दे चरण, करते हम गुणगान।। *शांतये शांतिधारा*

द्वादशांग आगम महा, इस जग में विख्यात।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, होय सभी को ज्ञात।। *पुष्पांजलिं क्षिपेत्*

अर्घ्यावली

दोहा– मोक्ष दिलाते भव्य को, भवि जीवों के नाथ।
पुष्पाञ्जलि करते चरण, झुका रहे पद माथ।।

वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(शम्भू छंद)

जो रत्नत्रय धारण करते, अरु मोक्ष मार्ग के नेता हैं।
नित ज्ञान ध्यान में रत रहते, कर्मों के स्वयं विजेता हैं।।
प्रवचन वात्सल्य भाव के धारी, जिनमें स्नेह जगाते हैं।
वह तीर्थंकर पदवी पाकर, सीधे शिवपुर को जाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं मुनिस्नेहरूप प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो स्त्री वेद प्राप्त कर भी, संयम को धारण करती है।
वह भी शिवपथ की राही बन, शुभ मोक्षमार्ग को वरती है।।
प्रवचन वात्सल्य भाव के धारी, जिनमें स्नेह जगाते हैं।
वह तीर्थंकर पदवी पाकर, सीधे शिवपुर को जाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं आर्यिकास्नेहरूप प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावक पाक्षिक नैष्ठिक साधक, बनकर कर्त्तव्य निभाते हैं।
वह भी शिवपथ के राही बन, शुभ मोक्षमार्ग अपनाते हैं।।
प्रवचन वात्सल्य भाव के धारी, जिनमें स्नेह जगाते हैं।
वह तीर्थंकर पदवी पाकर, सीधे शिवपुर को जाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्रावकस्नेहरूप प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाक्षिक आदिक यह भेद सभी, श्राविकाएँ पालन करती हैं।
जो देव शास्त्र गुरु भक्ती कर, भावों से निशदिन भरती हैं।।

प्रवचन वात्सल्य भाव के धारी, जिनमें स्नेह जगाते हैं।
वह तीर्थंकर पदवी पाकर, सीधे शिवपुर को जाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्राविकास्नेहरूप प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वच्छ पत्र पर सुन्दर अक्षर, युक्त शास्त्र निर्माण करें।
विनय सहित चौकी पर रखकर, पढ़कर सम्यक् ज्ञान वरें।।
प्रवचन वात्सल्य भाव के धारी, जिनमें स्नेह जगाते हैं।
वह तीर्थंकर पदवी पाकर, सीधे शिवपुर को जाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं शुभपत्र मनोज्ञअक्षरयुक्त शास्त्र निर्माण प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय सहित जिन शास्त्र पठन कर, विनय सहित ही श्रवण करें।
विनय सहित स्थापन करना, विनय सहित ही ग्रहण करें।।
प्रवचन वात्सल्य भाव के धारी, जिनमें स्नेह जगाते हैं।
वह तीर्थंकर पदवी पाकर, सीधे शिवपुर को जाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं विनययुक्तपठनश्रवणशास्त्रस्थापनग्रहण प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि मुनि यति अनगार चतुर्विध, संघ मुनि का शुभ गाया।
मुनी आर्यिका श्रावक श्राविका, भेद रूप भी बतलाया।।
प्रवचन वात्सल्य भाव के धारी, जिनमें स्नेह जगाते हैं।
वह तीर्थंकर पदवी पाकर, सीधे शिवपुर को जाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– प्रवचन वात्सल्य भावना, की गाते जयमाल।
वन्दन करते भाव से, जिनपद यहाँ त्रिकाल।।

(हरिगीता छंद)

प्रवचन वात्सल्य भावना है, श्रेष्ठ इस जग में अहा।
निर्दोष श्री सर्वज्ञ जिनवर, जगत साक्षी ने कहा।।

अरहंत के जिनबिम्ब की, करते सभी आराधना।
जिनचैत्य से शोभित जिनालय, में करें मुनि साधना।।
जिन भक्त आके दर्श करते, न्हवन करते भाव से।
गुणगान करते जिनप्रभु का, करें पूजा चाव से।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधू, की सदा सेवा करें।
अवरोध हो कोई साधना में, पूर्णतः जो परिहरें।।
जिन शास्त्र का करके पठन, निजभेद ज्ञान जगा रहे।
निर्ग्रन्थ गुरु के ग्रन्थ में, शिवपथ प्रदर्शन जिन कहे।।
श्रद्धान ज्ञानाचरण का, उपदेश आगम में कहा।
दश धर्म द्वादश भावना, तप व्रतों का वर्णन रहा।।
हैं मूलगुण कर्त्तव्य क्या है, हम सभी को ज्ञान हो।
शिव पंथ पाने के लिए, निज आत्मा का ध्यान हो।।
धर्मात्मा के प्रति मैत्री, भाव का संचार हो।
जिससे जगत के प्राणियों का, शीघ्र ही उद्धार हो।।
तीर्थेश जिन केवल्यज्ञानी, सर्वज्ञता को पाए हैं।
त्रय काल तीनों लोक की, सब वस्तुएँ दर्शाए हैं।।
जिनराज की ॐकार वाणी, श्रेष्ठ प्रवचन जानिए।
हो प्रीति उसमें भावना, प्रवचन इसे ही मानिए।।

(छन्द : घत्ता)

जय प्रवचन भक्ती, देवे मुक्ती, 'विशद' भावना सुखदायी।
है शिव सुखकारी, जनमनहारी, कर्म निवारी है भाई।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– प्रवचन भक्ती भावना, भाने वाले जीव।
शिवपथ के राही बनें, पावे पुण्य अतीव।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य–ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा– कर्मों के रक्षार्थ शुभ, अनुपम है जो ढाल।
सोलह कारण भावना, की गाते जयमाल।।

(शम्भू छंद)

काल अनादी पर्व रहा यह, इसकी महिमा रही महान।
तीर्थंकर पदवी के कारण, भाई यह जानो सोपान।।
चैत भाद्रपद और माघ में, तीन बार यह आते हैं।
भव्य जीव भक्ति से हर्षित, हो विधान रचवाते हैं।।1।।
कृष्ण पक्ष की एकम से व्रत, एक माह तक करें सही।
एकासन एकान्तर करना, या उपवास की विधी कही।।
व्रत के दिन में जिन पूजन कर, बत्तिस दिन तक करना जाप।
जिसके द्वारा कट जाते हैं, भव्य जनों के संचित पाप।।2।।
राजगृही नगरी में ब्राह्मण, काल शर्मा का रहा निवास।
कालभैरवी कन्या जन्मी, जो कुरूप थी अद्भुत खास।।
राजगृही नगरी में मुनिवर, मतिसागर चलकर आये।
ब्राह्मण से कन्या का गुरुवर, पूर्व भवों को बतलाए।।3।।
उज्जैनी के राजमहल में, राज सुता थी मद में चूर।
ज्ञानसूर्य मुनिवर के ऊपर, थूक गिराया होकर क्रूर।।
राज पुरोहित ने कन्या को, उसी समय पर फटकारा।
तन प्रच्छालन करके मुनि का, क्षमा भाव मुनिपद धारा।।4।।
कन्या को भी गुरू के सम्मुख, प्रायश्चित्त शुभ करवाया।
हे ब्राह्मण उस कन्या ने ही, जन्म तेरे घर में पाया।।
पूर्व भवों के आसादन का, दुष्फल कन्या ने जाना।
गुरु चरणों में विनय भावधर, अपनी गल्ती को माना।।5।।
गुरुवर ने सोलह कारण का, व्रत उसको तब बतलाया।
व्रत पालन करके कन्या ने, मरण समाधि को पाया।।

अच्युत स्वर्ग में उस कन्या ने, देव के पद को ग्रहण किया।
परम्परा से फिर विदेह में, तीर्थंकर पद वरण किया।।6।।
सीमन्धर गन्धर्व नगर में, जन्मे जिन तीर्थेश महान।
संख्यातीत भव्य जीवों को, सम्बोधा बनके भगवान।।
सोलहकारण व्रत की महिमा, शब्दों में ना कह पाते।
तीर्थंकर ही दिव्य ध्वनि में, जिसकी गरिमा बतलाते।।7।।
जैनागम में तीर्थंकर के, पुण्य की महिमा बतलाई।
भव्य भावना भाने वालों, ने अर्हत् पदवी पाई।।
चैत्र भाद्रपद माघ कृष्ण की, एकम् से व्रत कर प्रारम्भ।
एक माह तक व्रत पूजाकर, मंत्र जाप करके आरम्भ।।8।।
उत्तम व्रत के धारी इक्तिस, दिन तक करते हैं उपवास।
इससे हीन शक्तिधर बेला, कर एकासन करते खास।।
इससे भी जो हीन शक्ति के, धारी हैं एकान्तर वान।
दो एकम दो आठे चौदस, छह व्रत करें शक्ति निज जान।।9।।
शेष दिनों एकाशन करके, सोलह वर्ष करें शुभकार।
फिर उद्यापन में विधान शुभ, दान करें शक्ती अनुसार।।
रथयात्रा आदिक करके शुभ, करें धर्म का श्रेष्ठ प्रचार।
अतिशय सिद्धक्षेत्र की यात्रा, करें कराएँ मंगलकार।।10।।

दोहा– जयमाला के बाद यह, चढ़ा रहे हम अर्घ्य।
'विशद' भावना पूर्ण हो, पाएँ सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि–विनयसम्पन्नता–शीलव्रतेष्वनतीचार–अभीक्ष्णज्ञानोपयोग–संवेग–शक्तितस्त्याग–शक्तितस्तप–साधुसमाधि–वैय्यावृत्यकरण–अर्हद्भक्ति–आचार्यभक्ति–बहुश्रुतभक्ति–प्रवचनभक्ति–आवश्यकापरिहाणि–मार्गप्रभावना–प्रवचनवात्सल्यनाम षोडशकारणेभ्यो महाजयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– सोलह कारण भाव, शिवपद के हेतु कहे।
भव सिन्धु में नाव, पार हेतु भाते 'विशद'।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आरती सोलहकारण की

(तर्ज– आज मंगलवार है..)

जिनवर का दरबार है, आरति मंगलकार है।
सोलहकारण भव्य भावना, की शुभ जय–जयकार है।।
तीर्थंकर पद के कारण यह, सोलहभाव बताए हैं।
बने पूर्व में तीर्थंकर जो, सभी भावना भाए हैं।। जिनवर..।।1।।
दर्श विशुद्धी प्रथम भावना, जो भी प्राणी भाते हैं।
शेष भावनाएँ भाने की, शक्ती वे ही पाते हैं।। जिनवर..।।2।।
दर्श विशुद्धी पाने वाला, विनय गुणों को पाता है।
अभीक्ष्ण ज्ञान उपयोगी होकर, शील सुव्रत अपनाता है।।3।।
धारण कर संवेग शक्तिसः, तपस्त्याग शुभ पाते हैं।
साधु समाधी वैय्यावृत्ती, अर्हत् महिमा गाते हैं।। जिनवर..।।4।।
आचार्य बहुश्रुत प्रवचन भक्ती, आवश्यक अपरिहारी जी।
मार्ग प्रभावना प्रवचन वत्सल, तीर्थंकर अविकारी जी।। जिनवर..।।5।।
सोलहकारण भव्य भावना, 'विशद' भाव से हम भाएँ।
कर्म नाशकर अपने सारे, तीर्थंकर पदवी पाएँ।। जिनवर..।।6।।

प्रशस्ति

स्वस्ति श्री वीर निर्वाण सम्वत् 2538 विक्रम सम्वत् 2069 मासोत्तमेमासे शुभे मासे सावन मासे शुक्ल पक्षे शुभ तिथि एकम् सोमवासरे श्री कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कारगणे सेनगच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्या जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्या जातास्तत् शिष्य विमलसागराचार्या जातास्तत् शिष्यः भरतसागराचार्या विरागसागराचार्या ततशिष्यः विशदसागराचार्य कर–कमले श्री सोलहकारण विधान लिख्यते इति शुभं भूयात्।

प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

(स्थापना)

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैंङ्क
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वाननङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछतानाङ्क

विशद सोलहकारण विधान

विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना थाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व.स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्व.स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

दोहा- विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वच-तन से गुरु की, करते हैं जयमालङ्क

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कणङ्क
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थीङ्क
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़ेङ्क
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षायाङ्क
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बसंत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा।।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरतेङ्क
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती हैङ्क

तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना हैङ्क
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जानाङ्क
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साताङ्क
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करेंङ्क
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करेंङ्क
ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।
गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखानङ्क
इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ।। गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...
रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित साहित्य एवं विधान सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्‌मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपाश्र्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभु महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पाश्र्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेदशिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सवदोष प्रायश्चित्त विधान
36. लघु पंचमेरु विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चँवलेश्वर पाश्र्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पत्ति विधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषिमण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्‌मप्रभु विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद् ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी 1008 श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्त्वार्थ सूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्त्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद् नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
58. श्री दशलक्षण विधान
59. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
60. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
61. अभिनव वृहद् कल्पतरु विधान
62. वृहद् श्री समवशरण महामण्डल विधान
63. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
64. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
65. विद्यमान तीर्थंकर विधान
66. कैव्लय नवलब्धि विधान
67. अर्हत् महिमा विधान
68. अर्हत्‌नाम विधान
69. मृत्युञ्जय विधान
70. अर्हत्-धर्मचक्र विधान
71. कालसर्पयोग निवारक महामण्डल विधान
72. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
73. श्री सम्मेदशिखर कूटपूजन विधान
74. त्रिविधान संग्रह
75. पंचविधान संग्रह
76. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
77. विशद पञ्चागम संग्रह
78. जिन गुरु भक्ति संग्रह
79. धर्म की दस लहरें
80. स्तुति स्तोत्र संग्रह
81. विराग वंदन
82. बिन खिले मुरझा गए
83. जिन्दगी क्या है
84. धर्म प्रवाह
85. भक्ति के फूल
86. विशद श्रमण चर्या
87. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
88. इष्टोपदेश चौपाई
89. द्रव्य संग्रह चौपाई
90.. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
91. समाधितन्त्र चौपाई
92. सुभाषित रत्नावलि चौपाई
93. संस्कार विज्ञान
94. बाल विज्ञान भाग-3
95. नैतिक शिक्षा भाग-1,2,3
96. विशद स्तोत्र संग्रह
97. भगवती आराधना
98. चिंतवन सरोवर भाग-1
99. चिंतवन सरोवर भाग-2
100. जीवन की मन:स्थितियाँ
101. आराध्य अर्चना
102. आराधना के सुमन
103. मूक उपदेश भाग-1
104. मूक उपदेश भाग-2
105. विशद प्रवचन पर्व
106. विशद ज्ञान ज्योति
107. जरा सोचो तो
108. विशद भक्ति पीयूष
109. विशद मुक्तावली
110. संगीत प्रसून
111. आरती चालीसा संग्रह
112. भक्तामर भावना
113. बड़ा गाँव आरती चालीसा संग्रह
114. कल्याण मंदिर विधान
115. सहस्त्रकूट जिनार्चना संग्रह
116. विशद महा अर्चना संग्रह
117. विशद जिनवाणी संग्रह
118. विशद वीतरागी संत
119. काव्य पुञ्ज
120. पञ्च जाप्य
121. श्री चँवलेश्वर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह
122. बिजोलिया तीथपूजन आरती चालीसा संग्रह
123. विराजनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह